गुलाल साहेब की बानी

[जीवन-चरित्र सहित]

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग ।

गुलाल साहब की बानी

(जीवन-चरित्र सहित)

जिस में

उन महात्मा के अति मनोहर और भक्ति बढ़ाने वाले पद और साखियाँ शोध कर मुख्य मुख्य अंगों में रक्खी गई हैं

और गूढ़ शब्दों के अर्थ व संकेत भी नोट में लिख दिये गये हैं।

१५४२

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

दूसरी बार]   [मूल्य

Printed and Published at the Belvedere Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश का जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर-सक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं। प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फ़ुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के वचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है जिसके विषय में बैकुंठ बासी श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा था—"यह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे मे दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है। उनके नाम और दाम सूची से, जो कि इस पुस्तक के अंत में छपी है, देखिये। अभी हाल में कबीर बीजक और अनुराग सागर भी छापे गए हैं जिसका दाम क्रमशः ॥।) और १) है।

मैनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

जनवरी १९३२ ई०

इलाहाबाद।

सूचीपत्र

शब्द				पृष्ठ

द

न

प

शब्द पृष्ठ

म

शब्द			पृष्ठ

जीवन-चरित्र

गुलाल साहब जाति के छत्री बुल्ला साहब के गुरुमुख चेले, जगजीवन साहब के गुरुभाई, और भीखा साहब के गुरु थे जैसा कि उस वंशावली से जो दूसरे पृष्ठ पर दी हुई है प्रगट होगा। इनके जीवन का कुछ हाल नहीं मिलता यद्यपि इन के स्थान भुरकुड़ा ज़िला ग़ाज़ीपुर और दूसरी जगहों में खोज की गई। लेकिन जोकि यह जगजीवन साहब के सहकाली थे इनके जीवन का समय बिक्रमी सम्वत १७५० और १८०० के दरमियान में पाया जाता है।

गुलाल साहब ज़िमींदार थे और इनके गुरु बुल्ला साहब जिनका असल नाम बुलाकीराम था पहले उनके नौकर हल चलाने वग़ैरह के काम पर थे। बुल्ला साहब जब किसी काम को जाते, भजन ध्यान में लग जाने से अक्सर देर कर देते थे। इन की सुस्ती की शिकायत लोगों ने गुलाल साहब से की और गुलाल साहब कई बार इन पर खफ़ा हुए। एक दिन का ज़िक्र है कि बुल्ला साहब हल चलाने को गये थे और वहाँ भगवंत का ध्यान और मानसी साध सेवा में लग गये। उसी समय गुलाल साहब मौक़े पर पहुँच गये और बैलों को हल के साथ फिरते और बुल्ला साहब को खेत की मेंड़ पर आँख बंद किये हुए बैठा देख कर समझे कि वह औंघ रहे हैं और क्रोध में भर कर एक लात मारी। बुल्ला साहब एक बारगी चौंक उठे और उनके हाथ से दही छलक पड़ा। यह कौतुक देख कर गुलाल साहब हक्के बक्के होगये क्योंकि पहले उन्होंने बुल्ला साहब के हाथ में दही नहीं देखा था। पर बुल्ला साहब बड़ी आधीनता से गुलाल साहब से बोले कि मेरा अपराध छिमा करो मैं साधों की सेवा में लग गया था और भोजन परोस चुका था केवल दही बाक़ी था उसे परोस ही रहा था जो आप के हिला देने से छलक गया। यह गति अपने नौकर की

देख कर गुलाल साहब चरनों पर गिरे और उनको अपना गुरु धारन किया। गुलाल साहब तअल्लुक़ा बसहरि ज़िला ग़ाज़ीपुर के ज़िमींदार थे और वहीं पैदा हुए और गृहस्थ आश्रम में रह कर वहीं चोला छोड़ा। इसी तअल्लक़े के एक गाँव का नाम भुरकुड़ा है जहाँ गुलाल साहब सतसग करते व कराते रहे। गुलाल साहब की साध गति थी और उनका तीव्र वैराग और प्रचँड भक्ति उनकी अति कोमल और मधुर बानी से टपकती है॥
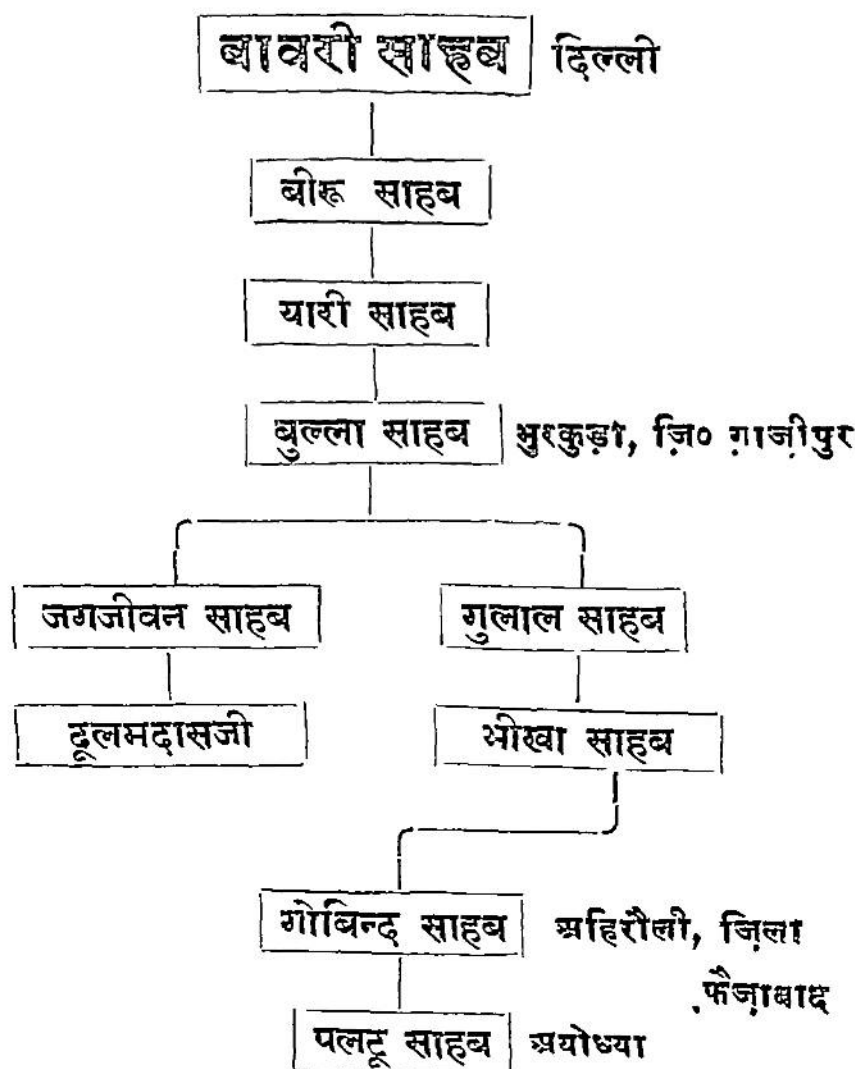
गुलाल साहब की बानी

उपदेश

॥ शब्द १ ॥

रे मन मूढ़ अज्ञानियाँ,
तोहिं सुधियो न आय।
निस बासर भरमत फिरै,
दौड़त दिन जाय ॥१॥
प्रबल पाँच पायक* लिये,
बहु सेन† बनाय।
काया गढ़ बैठो कुतवलिया,
हासिल‡ ले सब दाम गनाय ॥ २ ॥
किरषी§ करत बार बहु लागो,
हाथैं स्वाद कछू नहिं आय।
त्रस्ना के गुन‖ धोखे तौलत,
मौंदू निर्मल जन्म गँवाय ॥ ३ ॥
डहकत¶ फिरत नेक नहिं मानत,
अपने हर दम हुकुम चलाय।
काहू संत के फंद परहुगे,
चिटुकी देत सो प्रगट नचाय ॥ ४ ॥
गुरु के सब्द तहाँ ले बाँधहु,
त्रासित** कबहुँ न छूटन पाय।
दास गुलाल दया सतगुरु कै,
याक्यो मन सब गइल बलाय ॥ ५ ॥

---

* प्यादे। † फ़ौज। ‡ आमदनी। § खेती। ‖ गोन, बोरा जो बैल पर लादा जाता है। ¶ ठगाना। ** डरा हुआ।

॥ शब्द २ ॥

मन में निर्गुन गति जो आवै ।
हानि न होय जीव को कबहीं,
गगन मँडल घर छावै ॥ १ ॥
राजा रंक छत्र-पति भूपति,
....।
नाना सुख तजि भयो है दिवाना,
पंडित वेद न भावै ॥ २ ॥
सन्यासी बैरागी तपसी,
तीरथ रहि रहि धावै ।
आतम राम न जानहिं प्रानी,
तन कहँ त्रास दिखावै ॥ ३ ॥
संशय मेटि करै सतसंगति,
प्रेम पंथ पर धावै ।
सुन्न नगर में आसन माँड़े,
जगमग जोति जगावै ॥ ४ ॥
आवागवन न होइ है कबहीं,
सतगुरु सत्त लखावै ।
कहैं गुलाल यह लगन हमारी,
बिरला जन कोई पावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द ३ ॥

हरि नाम न लेहु गँवारा हो ।
काम क्रोध मँ रटत*फिरत हो, कबहुं न आप सँभारा हो ॥१

* घूमना ।

आपु अपन के सुधि नहिँ जानहु, बहुत करत बिस्तारा हो।
ेम धरम ब्रत तीर्थ करतु है, चौरासी बहु धारा हो ॥२॥
ासूकर* चोर बसहिँ घट भीतर, मूसहिँ सहन† भँडारा हो।
ुन्यासी बैरागी तपसी, मनुवाँ देत पछारा हो ॥३॥
ग्रंधा धोखा रहत लिपटाने, मोह रतो संसारा हो।
कहैँ गुलाल सतगुरु बलिहारी, जग तेँ भयो नियारा हो ॥४॥

॥ शब्द ४ ॥

तुम जात न जान गँवारा हो।
को तुम आहु कहाँ तेँ आयो, झूठो करत पसारा हो ॥१॥
माटी के बुंद पिंड के रचना, ता मेँ प्रान पियारा हो।
लोभ लहरि मेँ मोह को धारा, सिरजनहार बिसारा हो ॥२॥
अपने‡ नाह को चीन्हत नाहीँ, नेम धरम आचारा हो।
सपनेहुं साहब सुधि नहिँ जान्यो, जम दुत देत पछारा हो ॥३॥
उलट्यो जीव ब्रह्म में मेल्यो, पाँच पचीस धरि मारा हो।
कहैँ गुलाल साधु मेँ गनती, मनुवा भइल हमारा हो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

अबधू निर्मल ज्ञान बिचारो।
ब्रह्म सरूप अखंडित पूरन, चौथे पद सोँ न्यारो ॥ १ ॥
ना वह उपजै ना वह बिनसै, ना भरमै चौरासी।
है सतगुरु सतपुरुष अकेला, अजर अमर अबिनासी ॥२
ना वाके बाप नहीँ वाके माता, वाके मोह न माया।
ना वाके जोग भोग वाके नाहीँ, न कहुँ जाय न आया ॥३॥
अद्भुत रूप अपार बिराजै, सदा रहै भरपूरा।
कहैँ गुलाल सोई जन जानै, जाहि मिलै गुरु सूरा ॥४॥

---

* झाँक। † आँगन। ‡ पति।

॥ शब्द ६ ॥

अवधू सो जोगी गुरु ज्ञानी ।
भजै राम जगत है न्यारा, ब्रह्म सरूप पिछानो ॥ १ ॥
काम को मारि क्रोध को जारै, धोखा दूरि बहावै ।
मन गजंद* ज्ञान करि साँकर, पकरि के जेर भरावै ॥२॥
सील संतोष के आसन माँडै, सत्त सरूप बिचारै ।
जीव ब्रह्म जब मेला होवै, आवागवन निवारै ॥ ३ ॥
अछय अमर अनुभव अनभूरस, कोई संत जन पावै ।
कहैं गुलाल सतगुरु बलिहारी, फिर यह लोक न आवै ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

मन तूँ हरि गुन काहे न गावै ।
सातें कोटिन जन्म गँवावै ॥ १ ॥
घर में अमृत छोड़ि के, फिरि मदिरा पावै ।
छोड़हु कुमति मूढ़ अब मानहु, बहुरि न ऐसो दावै ॥२॥
पाँच पचीस नगर के बासी, तिनहिं लिये सँग धावै ।
बिनु पर उड़त रहै निसि बासर, ठौर ठिकान न आवै ॥३
जोगी जती तपी निर्बानी, कपि† ज्यौं बाँधि नचावै ।
सन्यासी बैरागी मौनी, धै धै नरक मिलावै ॥ ४ ॥
अब की बार दाव है मेरो, छोड़ौं न राम दोहाई ।
जन गुलाल अवधूत फकीरा, राखौं जँजीर भराई ॥ ५ ॥

॥ शब्द ८ ॥

मन में प्रीत करहु निज नाम ।
यह संसार अगम भवसागर, बहत है आठो जाम ॥ १ ॥
अपने घर की सुधि नहिं जानत, जल पत्थर परमान ।

---

* हाथी । † बंदर ।

इनकी ओट जन्म जहँड़ावहु,* मनुवाँ फिरत हेवान ॥२॥
पाँच पचीस से प्रबल चोर हैं, तीन देव बेइमान ।
कुल की कानि अंध नहिं सूझत, मुवले कहाँ समान ॥३॥
अगम निगम जिन पंथ निहार्यो, पछिम उगायो भान ।
कहैं गुलाल सतगुरु बलिहारी, निकलि गयो असमान ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

भजन करु मनुवाँ बैरागी ॥ टेक ॥
काम क्रोध मद ममता त्यागो, प्रभु चरनन महँ पागी १
सुत हित नारि बन्धु परिजन जन, डहत† हैं स्वारथ लागी २
झूठो सेव सेमर फल चाखो, अमृत फल काहे त्यागी ॥३
बिष भोजनहिं पाइ मत सोवहु, सत्त सब्द हिये जागी ॥४
जन गुलाल सतगुरु बलिहारी, मन मेलो मन लागी ॥५

॥ शब्द १० ॥

राम मोर पुँजिया मोर धना,
निस बासर लागल रहु मना ॥ टेक ॥
आठ पहर तहँ सुरति निहारो,
जस बालक पालै महतारी ॥ १ ॥
धन सुत लछमी रह्यो लोभाय,
गर्भ मूल सब चल्यो गँवाय ॥ २ ॥
बहुत जतन भेख रचो बनाय,
बिन हरि भजन इँदोरन पाय ॥ ३ ॥
हिंदू तुरुक सब गयल बहाय,
चौरासी में रहि लिपटाय ॥ ४ ॥

---

* ठगाना। † डाहते हैं। ‡ एक फल का नाम है जो देखने में सुन्दर लाल रंग का होता है पर बहुत कड़ुवा।

कहै गुलाल सतगुरु बलिहारी,
जाति पाँति अब छुटल हमारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मूढ़हु रे निर्फल दिन जाय,
मानुष जन्म बहुरि नहिं पाय ॥ १ ॥
कोइ कासी कोइ प्राग नहाय,
पाँच चोर घर लुटहिं बनाय ॥ २ ॥
करि अस्नान राखहिं मन आसा,
फिरि फिरि नरक कुंड में बासा ॥ ३ ॥
खोजो आप चितै कै ज्ञाना,
सतगुरु सत्त बचन परवाना ॥ ४ ॥
समय गये पाछे पछिताव,
कहैं गुलाल जात है दाव ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

नगर हम खोजिले चोर अबाटी* ।
निस बासर चहुँ ओर धाइलै, लुटत फिरत सब घाटी ॥१॥
काजी मुलना पीर औलिया, सुर नर मुनि सब जाती ।
जोगी जती तपी सन्यासी, धरि मास्यो बहु भाँती ॥ २ ॥
दुनिया नेम धर्म करि भूल्यो, गर्ब माया मद माती ।
देवहर पूजत समय सिरानो, कोऊ संग न जाती ॥ ३ ॥
मानुष जन्म पाय कै खोइले, भ्रमत फिरै चौरासी ।
दास गुलाल चोर धरि मरिलौं, जावँ न मथुरा कासी ॥४॥

---

* कुराह चलने वाला ।

॥ शब्द १३ ॥

मन तुम नेक गहहु चित राम ॥ टेक ॥
जासु नाम सुर नर नहिँ पावहिँ, संत महा सुख धाम।
पाँच पचीस तीन हैँ मूसिद,* उन कहँ ग्राम न ठाम ॥१॥
मारहिँ सहर लुटहिँ बिनु लसकर, निसि दिन आठो जाम।
जालिम जोर नेक नहिँ मानत, परजा दुखित बेराम† २
सत्त संतोष काया गढ़ भीतर, गहि लो सुरति सोँ नाम।
उर्ध पवन लै धरहु गगन मेँ, बाँधि करहु बिसराम ॥३॥
अब जीतो घर नौबति बाजै, कियो है जोति मोकाम।
जन गुलाल करहिँ बादसाही, नूर तजल्ली नाम ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

जो पै कोउ चरन कमल चित लावै।
तबहीं कटै करम कै फंदा, जमदुत निकट न आवै ॥१॥
पाँच पचीस सुनि थकित भये हैँ, तिरगुन ताप मिटावै।
सतगुरु कृपा परम पद पावै, फिर नहिँ भवजल धावै २
हर दम नाम उठत है करारी, संतन मिलि जुल पावै।
मगन भयो सुख दुख नहिँ ब्यापै, अनहद ढोल बजावै ३
चरन प्रताप कहाँ लगि बरनौँ, मो मन उक्ति न आवै।
कहैँ गुलाल हम नाम भिखारी, चरनन मेँ घर पावैँ ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

अगम पुर नौबति धुनि जहँ बाजई।
घन गरजै मोती तहँ बरसै, उलट गगन चढ़ि गाजई ॥१
ससि औ सूर तहाँ नहिँ दिखियत, एकै ब्रह्म बिराजई।
आवे न जाय मरै नहिँ जीवै, कुहुकि कुहुकि मन पागई २

* लुटेरे। † बीमार।

जाको गुन सुर नर मुनि गावहिँ, ध्यावहिँ भावहिँ जागई।
सकल मनोरथ पूरन पायो, निर्गुन छत्र सिर छाजई ॥३॥
इकछत्त राज करो काया गढ़, काहू सोझ* न भागई।
कहैँ गुलाल सुनो रे मूढ़ मन, दुनिया हाथ न लागई ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

जो पै कोई साँच सहज धुनि लावै।
काटै सकल भरम भौसागर, जमदुत निकट न आवै ॥१॥
यह संसार सकल जग अंधा, नेकु दृष्टि नहिँ पावै।
पूजहिँ पाथर देवखरी† लोपहिँ, घर तजि घूर बुतावै ॥२
जोगी जती तपी सन्यासी, ये बहु भेख बनावै।
राम नाम की सुधि नहिँ जानै, भ्रमि भ्रमि जन्म गँवावै ३
मानुष जन्म पाय का खोवै, अबहूँ जिव समझावै।
पाँच पचीस करहु बस अपने, निकट परम पद पावै ॥४॥
गगन मँडल अनहद धुनि बाजै, उनमुनि प्रीत लगावै।
जन गुलाल सतगुरु का चेला, सहजहिँ सुन्न समावै ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

कोउ नहिँ कइल मोरे मन के बुझरिया‡।
घरि घरि पल पल छिन छिन डोलत,
डालत साफ अँगरिया§ ॥ १ ॥
सुर नर मुनि डहकत सब कारन,
अपनी अपनी बेरिया।
सबै नचावत कोउ नहिँ पावत,
मारत मुँह मुँह मरिया ॥ २ ॥

---

* किसी के सामने। † देई देवता का देवखरा। ‡ शांति। § आग।

अब की बेर सुनो नर मूढ़ो,
बहुरि न ल्यो अवतरिया।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी,
भवसिंधु अगम गम तरिया ॥ ३ ॥

॥ शब्द १८ ॥

तन में राम और कित जाय।
घर बैठल भेटल रघुराय ॥१॥
जोगि जती बहु भेख बनावैं।
आपन मनुवाँ नहिं समुझावैं ॥२॥
पूजहिं पत्थल जल को ध्यान।
खोजत धूरहिं कहत पिसान* ॥३॥
आसा तृस्ना करैं न थीर।
दुबिधा मातल फिरत सरीर ॥४॥
लोक पुजावहिं घर घर धाय।
दोजख कारन भिस्त गँवाय ॥५॥
सुर नर नाग मनुष औतार।
बिनु हरि भजन न पावहिं पार ॥६॥
कारन धंधे रहत भुलाय।
तातें फिर फिर नरक समाय ॥ ७ ॥
अब की बेर जो जानहु भाई।
अवधि बिते कछु हाथ न आई ॥८॥
सदा सुखद निज जानहु राम।
कह गुलाल न तौ जमपुर धाम ॥९॥

---

*आटा।

॥ शब्द १९ ॥

सहज सुख दिन दिन हो, भजि लेहु आनँदराय ॥टेक॥
प्रेम प्रीत धरि रीत चरन सों, इत उत चित नहिं जाय।
सुरति निरति ले गवन कियो है, काल निकट नहिं आय॥१।
आपु अपन को चीन्हस नाहीं, निसि दिन धंधे धाय।
मोर तोर में लपट रह्यो है, भोंदू भटका खाय ॥२॥
संत साध की रीति न जाने, देवहरि पूजे धाय।
लोक बेद महँ अरुझि रह्यो है, जन्म पदारथ जाय ॥३॥
अगम अगोचर गोचर करि कै, सतगुरु बचन सहाय।
कहै गुलाल सब जनम सुफल भयो, घरही में घर पाय ॥४

॥ शब्द २० ॥

हे मन धोवहु सन के मैलो।
यह संसार नहीं सूझत घट, खोजत निसु दिन गैलो ॥१॥
नहीं नाव नहिं केवट बेड़ा, फिरत फिरत दिन ऐलो।
पाँच पचीस तीन घट भीतर, कठिन कलुख जिय मैलो॥२॥
गुरु परताप साध की संगति, प्रान गगन चढ़ि सैलो।
कहैं गुलाल नाम भयो मेला, जनम सुफल तब कैलो ॥३॥

॥ शब्द २१ ॥

हे मन सुन्दर सेस सोहाई।
उदित उजल छबि बरनि न आवे, सेत फटिक रोसनाई ॥१॥
अजर जरे औ बरे अधर में, मानिक जोति जगाई।
कोटिन चंद सूर छबि कोटिन, चरनन की बलि जाई ॥२॥
पूरन ब्रह्म मिल्यो अबिनासी, उलटि निरंतर छाई।
सिव के संग सक्ति गुन गावहिँ, उमँगि उमँगि रस पाई ॥३॥

ऐसो प्रभु भागन हम पायो, सतगुरु की बलि जाई ।
जन गुलाल राम को सेवक, मिल्यो निसान बजाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

सुमिरहु रे रामराय चरना,
जेहि सुमिरे छुटि आवा गवना ॥ टेक ॥
पाँचहिं बाँधि पचीसो बाँधहु,
तीन देव बसि करु अपना ॥१॥
काम क्रोध के मसल मेटावहु,
दुबिधा दुर्मति दूरि करना ॥२॥
मन राजहिं बसि करि समुझावहु,
माया मोह पकरि धरना ॥३॥
सहज समाधि हृदय महँ लावहु,
ज्ञान ध्यान सुचि* दृढ़ करना।
सन्त सरूप सदा भरि निरखहु,
लपटि रहो गुरु के चरना ॥५।
कहे गुलाल सुनो भाई संतो,
बहुरि न होय जरा मरना ॥६।

॥ शब्द २३ ॥

राम राम राम राम जेकरे जिय आवै।
प्रेम पूर्न दृढ़ बिराग सोई यह पावै ॥१॥
सतगुरु जब दियो प्रसाद प्रीत हूं लगावै।
तन मन न्योछावरि वारि चरन में समावै ॥२॥

---

* निर्मल।

लोक लाज चारि गारि मनुवाँ नहिँ गावै
काम क्रोध जारि मारि सब लै लगावै ॥३॥
उनमुनि धुन धरै ध्यान गगना गरजावै।
चमक चमक जोति जोति नूर झरि लगावै ॥४॥
अगम ध्यान ब्रह्म ज्ञान सोई यह पावै।
तिनकी बलिहारि जाउँ जन गुलाल गावै ॥५॥

चेतावनी का अंग

॥ शब्द १ ॥

अँखिया खोलि देखु अब, दुनिया है रँग बौर* ॥टेक॥
यह तन जीवन दिवस चारि को, धन जोबन कहे मोर।
पाँच तीन के फेर लगो है, मनुवाँ लेत अँकोर† ॥१॥
नेकु न रहत डहत निसि बासर, मनुवाँ है सठ घोर‡।
ऊँच नीच कहि खावन जानत, भरि भरि बिषै हिलोर ॥२॥
मुदगर§ मारि कायागढ़ लीन्हो, परो अमरपुर सोर।
कहै गुलाल सतगुरु बलिहारी, मन बाँधो गयो जोर ॥३॥

॥ शब्द २ ॥

नाहक गर्ब करे हो अंतहि,
खाक में मिलि जायगा ॥ टेक ॥
दिना चारि को रंग कुसुम है, मैँ मैँ करि दिन जायगा।
धालु कमंदिल ढहत बार नहिँ, फिर पाछे पछितायगा ॥१

---

* आम का फूल जो छिन में झर जाता है। † रस। ‡ बहुत बड़ा। § मुगदर।

रचि रचि मंदिल कनक बनायो, तापर कियो है अवासा* ।
घर में चोर रैनि दिनि मूसहिं, कहहु कहाँ है बासा ॥२॥
पहिरि पटंबर भयो लाड़िला, बन्यो छैल मद माता ।
गैबी चक्र फिरै सिर ऊपर, छिन में करै निपाता ॥३॥
नेकु धीर नहिं धरत बावरे, ठौर ठौर चित जाते ।
देवहर पूजत तीर्थ नेम ब्रत, फोकट† के रँग राते ॥४॥
का से कहूं कोउ संग न साथी, खलक सबै हैराना ।
कहैं गुलाल संतपुर बासी, जम जीतो है दिवाना ॥५॥

॥ शब्द ३ ॥

करु मन सहज नाम ब्यौपार,
छोड़ि सकल ब्यौहार ॥ टेक ॥
निसु बासर दिन रैन ढहतु है,
नेक न धरत करार ।
धंधा धोख रहत लपटानो,
भ्रमत फिरत संसार ॥ १ ॥
मात पिता सुत बंधू नारी,
कुल कुटुम्ब परिवार ।
माया फाँसि बाँधि मत डूबहु,
छिन में होहु सँघार ॥ २ ॥
हरि की भक्ति करी नहिं कबहीं,
संत बचन आगार ।
करि हंकार मद गर्ब भुलानो,
जन्म गयो जरि छार ॥ ३ ॥

---

* बास । † छिलका ।

अनुभव घर के सुधियो न जानत,
का सोँ कहूं गँवार ।
कहै गुलाल सबै नर गाफिल,
कौन उतारै पार ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

हे मन ऐसो बनिज लदावो ।
पाँच पचीस तीनि आपा में,
कसि के गगन गुफा ठहरावो ॥१॥
सुन्न सिखर पर बाजन बाजे,
सुनत सुनत मन भावो ।
लवकै* बिजुली मोती बरसै,
चूँगत चुँगत अघावो ॥ २ ॥
चाँद सूर तहवाँ नहिँ दिखियत,
निसु दिन आनँद भावो ।
काम क्रोध की गरदन मारो,
अनुभव अमल चलावो ॥ ३ ॥
उमँगि उमँगि प्रभु के रँग राती,
पुलकित† कंठ लगावो ।
जन गुलाल पिय प्यारी खसम की,
जस सिर डंक‡ बजावो ॥ ४ ॥

---

* चमकती है। † उमंग से। ‡ डंका।

॥ शब्द ५ ॥

नर करबो कवन विचार, लोगवा पाहुन ॥ टेक ॥
साँझ सकार रैन दिन धावहि, सबहि करत ब्योहार ।
भर ढिँढ़* खाइन जनम गवाइन, काहू न आपु सँभार १
पाँच पचीस नगर के बासी, मनुवाँ है फउदार† ।
मारि लूटि के डाँड़ लेतु है, का तुम करब गँवार ॥ २ ॥
समय गये कोउ संग न साथो, धन जोबन परिवार ।
जम राजा जब धै लै चलि हैं, छुटि है सकल पसार ॥ ३॥
कुसुम सिंगार पहिरि मति भूलो, ढरत न लागै बार ।
कहत गुलाल सबै नर गाफिल, जम का करिहै हमार ॥४

॥ शब्द ६ ॥

लागो रँग झूठो खेल बनाया ।
जहँ लगि साको सबै पसारा, मिथ्या है यह काया ॥ १ ॥
मोर तोर छूटत नहिँ कबहीँ, काम क्रोध अरु माया ।
आतम राम नहीँ पहिचानत, भौंदू जन्म गँवाया ॥ २ ॥
नेम कै आस धरत नर मूढ़हु, चढ़त चरख दिन जाया ।
घुमत घुमत कहिँ पार न पावै, का लै आया का लै जाया ३
साध संगति कीन्हे नहिँ कबहीँ, साहब प्रीति न लाया ।
कहैँ गुलाल यह अवसर बीते, हाथ कछू नहिँ आया ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

अभि‡ अंतर ही लै लाव मना,
ना ताे जन्म जन्म जहड़ाई§ हाे ॥टेक॥

---

* पेट । † सेनापति । ‡ घट । § भरमना ।

धन दारा सुत देखि कै, काहे बौराई हो।
काल अचानक मारिहै, कोउ संग न जाई हो ॥ १ ॥
धीरज धरि संतोष करु, गुरु बचन सहाई हो।
पद पंकज अंबुज करु नवका, भवसागर तरि जाई हो २
अनेक बार कहि कहि के हारो, कहँ लग कहौं बुझाई हो।
जन गुलाल अनुभौ पद पावो, छुटलि सकल दुनियाई हो ॥

मन माया का अंग

॥ शब्द १ ॥

मन तुम काहे न हरि गुन गावो,
कोटिन जन्म भुलावो ॥ टेक ॥
घर में अमृत छोड़ि के रे,
फिरि फिरि मदिरा पावो।
छोड़हु कुमति मूढ़ अब मानहु,
बहुरि न ऐसो दावो ॥ १ ॥
पाँच पचीस नगर के बासी,
उन्हैं लिये सँग धावो।
बिनु पर उड़त रहत निसु बासर,
ठौर ठिकान न आवो ॥ २ ॥
जोगी जती तपी निर्बानी,
कपि ज्यूँ बाँधि नचावो।
सन्यासी बैरागी मौनी,
धरि धरि नर्क में नावो ॥ ३ ॥

अब की बार दाव है मेरो,
छोड़ौं न राम दोहाई ।
कहै गुलाल अवधूत फकीरा,
राखौं जँजीर भराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

सतो नारि सकल जग लूटा ।
ब्रह्मा बिस्नु सीव सनादिक,
सुर नर मुनि नहिं छूटा ॥ १ ॥
नवो नाथ सिद्ध चौरासी,
नारद रिषि दुरवेसा* ।
जोगी जंगम तपि बैरागी,
गन† गंधर्ब अरु सेसा ॥ २ ॥
लछ चौरासी जीव जहाँ लग,
ज्ञान बुद्धि हर लीन्हा ।
तीन लोक में जाल पसारो,
मोह के बसि सब कीन्हा ॥ ३ ॥
बज्र बाँध सब ही को बाँध्यो,
बाँधी बाँधि नचाया ।
कहैं गुलाल कोऊ जन बाचे,
जिन सतगुरु पूरा पाया ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

संतो नारि सों प्रीति न लावै ।
प्रीति जो लावै आपु ठगावै,
मूल बहुत को गावै ॥ १ ॥

---

* फ़क़ीर । † छोटे छोटे देवता जो शिव जी की सेवा में रह

गुरु को बचन हृदय लै लावै,
पाँचौ इंद्री जारै ।
मनहिं जीति माया बसि करिकै,
काम क्रोध को मारै ॥ २ ॥

लोभ मोह ममता को त्यागै,
तृस्ना जीभि निवारै ।
सील सँतोष सो आसन माड़ै,
निसु दिन सब्द बिचारै ॥ ३ ॥

जीव दया करि आपु सँभारै,
साध संगति चित लावै ।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी,
बहुरि न भवजल आवै ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

संतो कठिन अपरबल नारी ।
सबहीं बरलहि* भोग कियो है,
अजहूं कन्या क्वारी ॥ १ ॥

जननी ह्वै के सब जग पाला,
बहु बिधि दूध पियाई ।
सुंदर रूप सरूप सलोना,
जोय† होइ जग खाई ॥ २ ॥

---

*बियाह करके । †जोरू ।

मोह जाल सों सबहिं बझायो,
जहँ तक है तन धारी।
काल सरूप प्रगट है नारी,
इन कहँ चलहु सँभारी ॥ ३ ॥
ज्ञान ध्यान सब ही हर लीन्हो,
काहु न आपु सँभारी।
कहै गुलाल कोऊ कोउ उबरे,
सतगुरु की बलिहारी ॥ ४ ॥

॥ शब्द ५ ॥

अधम मन जानत नाहीं राम।
भरमत फिरै आठ हूं जाम ॥ १ ॥
अपनो कहा करतु है सबही, पावत पसु आराम।
घुरबिनिया* छोड़त नहिं कबहीं, होइ भोर भा साम ॥ २ ॥
ऊड़त रहत बिना पर जामे, त्यागि कनक ले ताम†।
नीक बस्तु के निकट न लागे, भरत है भोरी खाम‡ ॥३
अंध की बार कहा करु मेरो, छोड़ो अपनो हाम§।
कह गुलाल तोहिं जियत न छोड़ौं, खास दोहाई राम ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

अधम मन राम न जान गँवारो।
या मन तैं केते अरुझाने, माया झूठि बिस्तारो ॥ १ ॥
यहि परिपंच देखि जनि भूलहु, कारन सबै बिचारो।
हर दम पलक थीर नहिं पैहो, छिन महँ काल सँघारो २

---

* कूड़ा चुनने की आदत। † ताँबा। ‡ कच्ची। § हुंगता।

काम क्रोध मद लोभ न छूटल, धर्महीन औतारो ।
ऐसो समय बहुरि नहिं पैहो, कहत हौं बारंबारो ॥३॥
जे नर सरन राम की आये, ता को कौन बिगारो ।
कहै गुलाल राम को सेवक, संतो कइल बिचारो ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

मोर मन मतवलवा रहल लोभाय ॥ टेक ॥
बटिया न चलत कुबट* देत पाँय ।
तजि अमृत बिषही फल खाय ॥१॥
छोड़लस घर बन फिरत बहाय ।
अकरम काम करत न लजाय ॥२॥
का सोँ कहौँ दुख कहल न जाय ।
करत अनीत न अंग समाय ॥३॥
कह गुलाल हम सतगुरु पाये ।
मन बाँधल हम सहज समाये ॥४॥

करम भरम कुल-कान आदिक का निषेध और उपदेश गुरु व शब्द भक्ति का

॥ शब्द १ ॥

अब मन रहु गुरु चरन पास,
चित चकोर जस चंद आस ॥१॥
गुरु मरजादा† कहि न जाय,
कोटि जतन जो रचि बनाय ॥२॥

---

* कुराह । † बड़ाई ।

जिन जाना सिर चरन रेनु,
गुरु के बचन जस काम धेनु ॥३॥
अष्ट जाम जाके बरत जोत,
बिमल बिमल धुनि उदित होत ॥ ४ ॥
गगन मँडल में बजत तूर,
घन सतगुरु वहाँ रहत पूर ॥ ५ ॥
अति आनँद वहाँ उठत बसंत,
गुरु के फागु लै खेलत संत ॥ ६ ॥
कह गुलाल मेरी पुजलि आस
सतगुरु बुल्ले दिहल बास ॥ ७ ॥

॥ शब्द २ ॥

मन तुम कपट दूर लुटाव।
भटक के तुम पंथ छोड़ो, सुरत सब्द समाव ॥ १ ॥
करत चाल कुचाल चालत, मकर मेल सुभाव।
तीन तिरगुन तपत दिनकर, कैसहू बुझलाव ॥ २ ॥
अति अधीन मलीन माया, मोह में चित लाव।
अगम घर की खबरि नाहीं, मूढ़ता सच पाव ॥ ३ ॥
सुख सिखर सरोज* फूलो, बंक नालहि जाव।
कह गुलाल अतीत पूरन, आपु में घर पाव ॥ ४ ॥

॥ शब्द ३ ॥

भाई रे धोखे सब अरुझाना।
सब्द सरूप नहीं पहिचानहिँ, तीरथ ब्रत लिपटाना ॥१॥

* कँवल।

कोउ पँच अगिन अधोमुख झूलै, कोऊ तारी लावै।
कोउ जल सैन पवन धुनि* छावै, बाँह उठाय सुखावै ॥२॥
माला पहिरै तिलक बनावै, काथा† गूदर नावै।
मन मुरीद होवै नहिं जब लै, बिरथा भेख बनावै ॥३॥
कोऊ जोग जज्ञ तप ठानै, कोऊ गुफा में बासा।
षट दरसन से जाय न पारै, स को काल गरासा ॥४॥
झूठि आस बिस्वास करत है, छुच्छ‡ सदा लपटाना।
कह गुलाल कोउ कहल न मानै, भरमत फिरत दिवाना।

॥ शब्द ४ ॥

काह कहौं कछु कहत न आवै, नाहक जग बौराई हो।
अपनो नाह§ नेक नहिं जानहिं, पर पूरुष पहँ जाई हो १
घर घर कलस लेइ अब राखिहिं, बहु बिधि रचहिं बनाई हो।
गावहिं पचरा‖ मूड़ कँपावहिं, बोरलहिं¶ सकल कमाई हो ॥२
ऊँच नीच जिव सबहीं मारहिं, बैठहिं देव की नाईं** हो।
झूठ बचन कहि कै मन लावहिं, जस अंधा बिपिन††
भुलाई हो ॥३॥
आपु अपन को चीन्हत नाहीं, कुल की लाज लजाई हो।
काल दंड धैके लग मिसिहै‡‡, भुलिहै सब चतुराई हो ४।
आपु अपन के सबहिं सयाने, हम बौराये भाई हो।
कहै गुलाल बहि गये सयाने, हमरे कही न जाई हो ॥५॥

---

* स्वाँसा से सोहं का जाप। † कथरी। ‡ ख़ाली। § ख़सम। ‖ देवीपूजा में जो गीत गाई जाती है। ¶ डुबा दी। ** तरह। †† वन। ‡‡ मलैगा।

॥ शब्द ५ ॥

नाम रस अमरा है भाई, कोउ साध संगति तेँ पाई ॥टेक॥
बिन घोटे बिन छाने पीवे, कौड़ी दाम न लाई ।
रंग रँगीले चढ़त रसीले, कबहीं उतरि न जाई ॥१॥
छके छकाये पगे पगाये, झूमि झूमि रस लाई ।
बिमल बिमल बानी गुन बोलै, अनुभव अमल चलाई॥२
जहँ जहँ जावै थिर नहिँ आवै, खोलि* अमल लै धाई ।
जल पत्थल पूजन करि मानस, फोकट गाढ़ बनाई† ॥३॥
गुरु परताप कृपा तेँ पावै, घट भरि प्याल‡ फिराई ।
कहैँ गुलाल मगन ह्वै बैठे, मगिहै हमरि बलाई ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

देखो संतो एक अजगूता§, सुन्दर घर लूटहिँ जमदूता ॥१
इहवाँ देखो उहवाँ अंध, उहवाँ देखो इहवाँ फंद ॥२॥
काटै मूड़ चढ़ावै देवा, इह देखो उह का करि सेवा ॥३॥
जन्म जाति बैठो बहु भाँती, इहँ देखा उहँ जाति न पाँती॥४
सुत धन मात पिता अरधंग, इहँ देखो उहँ काको संग ॥५॥
कहैँ गुलाल यह मन को फेर, मन जीते सो पूरा सेर ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

साधो जन राम नाम भजिये,
एक बिवाय और सब तजिये ॥१॥
आदि ब्रह्म की उपजी इच्छा,
तब उठो चेतन परिच्छा ॥२॥
चेतन सबद भयो इक ठाँई,
पाँच तत्त ले जग उपजाई ॥३॥

---

* थोथा। † संत मैं गढ़ के बनाया है। ‡ प्याला। § अचरज।

चारि खान को किया पसार,
सुर नर नाग सबै औतार ॥ ४ ॥
माया मोह सब रच्यो बनाई,
चढ़त चरख फेरत दिन जाई ॥ ५ ॥
लोक वेद के परे हैं ख्याल,
बाझि मुए नर माया जाल ॥ ६ ॥
सकी बकी* सब गहल हिराई,
प्रभु बिन ताकहँ कौन छोड़ाई ॥ ७ ॥
अनेक रंग को सुखद बनाया,
निश्चै जानु ठगिन है माया ॥ ८ ॥
घर घर फाँस लिये कर धाई,
बच्यो सोई जो गुरु सरनाई ॥ ९ ॥
बिनु हरि भजन न होवै थीर,
संगति होय जो पावै पीर† ॥ १० ॥
तब यह धोखा मिटै रे भाई,
नहिं तो घूमत फिरै बहाई ॥ ११ ॥
जो जिय जानै एकै रूप,
भटक न करु कहिँ अवर सरूप ॥ १२ ॥
तृस्ना तामस बुरा रे भाई,
सत्त बिना कछु काम न आई ॥ १३ ॥
जंत्र मंत्र करै कर्म अनेक,
अपने अपने कुल कै टेक ॥ १४ ॥

---

* सुधि बुधि। † गुरू।

याही मत संसार भुलाई,
ज्ञान हीन कैसे गति पाई ॥ १५ ॥
जोग जज्ञ जो करै कराई,
दान धर्म्म में बहु मन लाई ॥ १६ ॥
कहै गुलाल यह पाखँड भाई,
आपु न चीन्हहु का बैाराई ॥ १७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

रसना राम नाम लव लाई ।
अंतरगते प्रेम जो उपजै, सहज परम पद पाई ॥ १ ॥
सतगुरु बचन समीर* थीर धरि, भाव सो बंद लगाई ।
ऊड़ै हंस गगन चढ़ि धावै, फाटि जाय भ्रम काई ॥ २ ॥
जोग यज्ञ तप दान नेम ब्रत, यह मोहीँ नहिं आई ।
संतन को चरनोदक लै लै, गिरा† जूँठ मैं पाई ॥ ३ ॥
कहा कहौं कछु कहल न लागै, नाहक जग बैाराई ।
कहैं गुलाल राम नहिं जानत, खुझिहै‡ हमरी बलाई ॥४॥

॥ शब्द ९ ॥

मोर मतवलवा नाम मद मातल,
प्रेम लगन हिये लाई हो ।
आठो जाम रैन दिन मातल,
और कहूँ नहिं जाई हो ॥ १ ॥
उनमुनि धुनि लै भाठी साज्यो,
षट रस अधर चढ़ाई हो ।
लो की पवन फेरत जल भरि भरि,
सींचत मूल सेहाई हो ॥ २ ॥

* वायु । † पड़ा हुआ । ‡ झुँझलाना ।

चूवत सिखर भरत घट भरि भरि, धै के सुरत उतारी हो।
चाखत मनुआँ मगन मन मानो, लेत है अमी करारी हो ॥३॥
सत्त सब्द के नेजा बाँध्यो, ओगरत* नाम अगारी† हो।
कहैँ गुलाल संत जन पीवहिं, वाही लगन हमारी हो ॥४॥

॥ शब्द १० ॥

नाम रस भला है रे भाई।
कोइ साधि जोगेसर खाई ॥ टेक ॥

काला कूँड़ी साफ बनायो, सिरबिधि बिजया‡ नाई।
घोटा§ पवन को सितल बनायो, छानु सिखर पर जाई ॥१॥
चाखत मनुवाँ भयो है दिवाना, छकि छकि अमल छकाई।
हर हर लहर लेहि रस भरि भरि, अनतहिं जाइ बलाई ॥२॥
जिन पायो तिन्ह हीं को भायो, आलम‖ रहल लजाई।
माया मोह में लपटि रहो है, काँटहिं काँट अरुझाई ॥३॥
संत सभा में फिरत करावो, अपनी अपनी भाई¶।
कहैँ गुलाल साहर बिनती करि, किछु किछु हमहूं पाई ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

सत्त सब्द तहँ होय बेनु तहँ उठै बधावा ॥१॥
बाजे अनहद घंट बंसी रव** सुन में भावा ॥२॥
बैठि सिंघासन जाय दसहुँ दिसि मानिक छावा ॥३॥
कहैँ गुलाल सोइ भक्त अभैपुर डंक बजावा ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

भूँठ सेवा नर करत आस, नाम बिना नहिं पैहो बास ॥१॥
तीरथ बरत देव आराध, केहु पूँछहि ना जम बाँधहि बाधा††

---

* टपकती है। † शराब। ‡ भाँग। § सोँटा। ‖ संसार। ¶ भाव। ** शब्द
†† रस्सी।

यहि बिस्वास भुले मत कोय, माँझ धार में बोरिहँ सोय ॥३॥
लोक बेद महँ रत संसार, राम न चीन्हहिँ मुरख गँवार ॥४॥
ऐसहि समय गये दिन बीति, बार न ढहत बालु के भीति ॥५॥
कहैँ गुलाल मूढ़ हम भाई, सबहिँ सयाने हम बौराई ॥६॥

॥ शब्द १३ ॥

ससि औ सूर पवन भरि मेला, दृढ़ करि आसन बैठु अकेला१
उलटै नाल गगन घर जावै, बिगसै कँवल चंद दरसावै ॥२॥
घंटा रव तहँ बाज निसाना, अनहद धुन सुनियत बिनु काना
सुन्न असुन्न में डोर बँधाना, उड़े हंस चढ़ि करत पयाना ॥४॥
अगम अगोचर अबिगत खेला, प्रान पुरुष तहँ करत है मेला५
मन अरु पवन सहज घर आयो, ऐसो गति संतन मन भायो६
मेटल सुन्न मिलल परगासा, जन्म जन्म कै पूजलि आसा ॥७॥
जन गुलाल सतगुरु बलिहारी, जाति पाँति अब छुटल हमारी८

॥ शब्द १४ ॥

हमरे राम नाम बस्तू है, खलक लेन चहे घोँगा* ।
हमरे कटक फौज कछु नाहीँ, हमरे धन सुत जोगा ॥१॥
हमरे मुलुक खजाना नाहीँ, रैयत नहिँ बस लोगा ।
हमरे पूरन नाम भरो धन, दुनिया देखि मरै सोगा ॥२॥
हमरे संग साथ नहिँ कोई, अंध भये सब खोजत लोगा ।
हमरे बेद कितेबौ नाहीँ, हमरे ब्रत नहिँ भोगा ॥३॥
राजा रंक छत्रपति देखो, काल खड़्ग मारत सब खोजा ।
कहै गुलाल निःकल्प रूप भयो, जगत मुए करि रोगा ॥४॥

---

* घोंघा, कौड़ी ।

॥ शब्द १५ ॥

रे मन नामहिं सुमिरन करै।

अजपा जाप हृदय लै लावो, पाँच पचीसो तीन मरै ॥१॥
अष्ट कमल में जीव बसतु है, द्वादस मैं गुरु दरस करै।
सोरह ऊपर ध्यानि उठतु है, दुइ दल अमी झरै ॥२॥
गंगा जमुना मिली सरसुती, पदुम झलक तहँ करै।
पच्छिम दिसा है गगन मँडल में, काल बली सोँ लरै ॥३॥
जम जाते है परम पद पायो, जोती जगमग बरै।
कह गुलाल सोइ पूरन साहब, हर दम मुक्ति फरै ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

ऊठत नाम मनोरवा हो, संतन कै यह ज्ञान ॥टेक॥
याहि सुफल जिन्ह जान्यो हो, बाजत अभय निसान ॥१॥
अष्ट कमल पर फूलिब हो, दसो दिस ऊगे भान ॥२॥
गगन मँडल गुन गाइब हो, निझर झरै असमान ॥३॥
सत्त सब्द में समाइब हो, कह गुलाल मन मान ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

सत्त सरूप समाइब हो, निर्गुन रूप अपार ॥टेक॥
असि अथाह नहिं पाइब हो, ऊठत लहर करार ॥१॥
सहज सरोवर गुल फूलल हो, बिनु डाँड़ी बिनु तार ॥२॥
पुलकि पुलकि मन लाइब हो, आवागवन निवार ॥३॥
जन गुलाल घर छाइब हो, बाझि मुवल संसार ॥४॥

प्रेम

॥ शब्द १ ॥

सबिगत जागल हो सजनी ।
खोजत खोजत सतगुरु पावल,
ताहि चरनवाँ चितवा लागल हो सजनी ॥ टेक ॥
साँझ समय उठि दीपक बारल,
कटल करमवा मनुवा पागल हो सजनी ॥१॥
चललि उघटि* बाट छुटलि सकल घाट,
गरजि गगनवा अनहद बाजल हो सजनी ॥२॥
गइली अनँदपुर भइली अगम सूर,
जितली मैदनवा नेजवा† गाड़ल हो सजनी ॥३॥
कहैं गुलाल हम प्रभुजी पावल,
फरल लिलरवा पपवा भागल हो सजनी ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

लागलि नेह हमारो पिया मोर ॥ टेक ॥
चुनि चुनि कलियाँ सेज बिछावौं,
करौं मैं मंगलचार ।
एको घरी पिया नहिं अइलैं,
होइला मोहिं धिरकार ॥ १ ॥
आठो जाम रैन दिन जोहौं,
नेक न हृदय बिसार ।
तीन लोक के साहब अपने,
फरलहिं मोर लिलार ॥ २ ॥

---

* कठिन । † माला ।

सत्त सरूप सदा हौं निरखौं,
संतन प्रान अधार ।
कहैं गुलाल पावौं भरि पूरन,
मौजै मौज हमार ॥ ३ ॥

॥ शब्द ३ ॥

आजु मोरे अनंद बधावा जियरा कुहकैला,
सुनत सुनत सुख पाय ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तिनि* चाचरि गावहिं,
सो सुख बरनि न जाय ॥ १ ॥
गगन मँडल में रास रचो है,
झमक रहो है छाय ॥ २ ॥
प्रेम पियारा प्रगट भयो जब,
ब्रह्म पदारथ पाय ॥ ३ ॥
थकित भयो सुधि बुधि हर लीन्ह्यो,
इत उत कहीं न जाय ॥ ४ ॥
कहैं गुलाल भक्ति बर पायो,
छूटलि सबहि बलाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द ४ ॥

मैं बलि बलि जावें मेरो मन लागल प्रभु पंथा ॥ टेक ॥
प्रेम नेम लै लावल हो पावल गुरु रीती ।
पुलकि पुलकि छबि देखल गावल निर्गुन गीती ॥१॥
या तन समय सुहावन हो जानहु परतीती ।
राम बिना कस जीवन हो बालू ज्यों भीती ॥२॥

---

* तीन ।

सासु सोहागिन बलसहिँ* हो ननदी बिपरीती ।
गाँव के लोग नहिं आपन हो सवति करै चीती ॥३॥
सुनहू सखियाँ सहेलरि हो जो करै कहल हमार ।
भवजल नदिया भयावनि हो कैसे उतरब पार ॥ ४ ॥
उलटि पवन घर सोधल हो सब रहल लजाय ।
जगमग जगमग त्रिकुटी हो देखि रहल लोभाय ॥५॥
गंग जमुन बिच मंडप हो घर अगम अवास ।
बिनु पर हंसा उड़ि गवन्यो तहँ भूख न प्यास ॥ ६ ॥
पाप पुन्न नहिँ दुख सुख हो नहिँ रोग न सोग ।
सुखमन सार अमी रस हो तहँ जोग न भोग ॥ ७ ॥
गगन मगन धुनि गाजै हो देखि अधर अकास ।
जन गुलाल बसि हरि पद हो तहँ करहिँ निवास ॥ ८ ॥

॥ शब्द ५ ॥

आजु झरि बरखत, बुंद सोहावन ।
पिया के रीति प्रीति छबि निरखत,
पुलकि पुलकि मन भावन ॥ १ ॥
सुखमन सेज जे सुरत सँवारहिं,
झिलमिल झलक दिखावन ।
गरजत गगन अनंत सब्द धुनि,
पिया पपीहा गावन ॥ २ ॥

---

* बिलास करती है। † चिट्टा लड़ाना।

उमग्यो सागर सलिल नीर भरो,
चहुं दिसि लगत सोहावन ।
उपज्यो सुख सनमुख तिरपित भयो,
सुधि बुधि सब बिसरावन ॥ ३ ॥
काम क्रोध मद लोभ छुट्यो सब,
अपने साहब भावन ।
कह गुलाल जंजाल गयो तब,
हर दम भादौं सावन ॥ ४ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हरि सँग लागत बुंद सोहावन ।
समय जानि सब जीव मगन भे,
गृह आपन सब छावन ॥ १ ॥
चहुं दिसि तें घन घेरि घटा आई,
सुन्न भवन डरपावन ।
बोलत मोर सिखर के ऊपर,
नाना भाँति सुहावन ॥ २ ॥
आनँद घट चहुँ ओर दीप धरी,
मानिक जोति जगावन ।
रीझ रीझ पिया के रँग राते,
पलकन चँवर डोलावन ॥ ३ ॥
मंडो* प्रेम मगन भइ कामिनि,
उमँगि उमँगि रति भावन ।
कह गुलाल सनमुख साहब मिल्यो,
घर मारे है रावन ॥ ४ ॥

---

* छाय रहा ।

॥ शब्द ७ ॥

पिय सँग जुरलि सनेह सुभागी ।
पुरुब प्रीति सतगुरु किरपा कियो, रटत नाम बैरागी ॥१॥
आठ पहर चित लगै रहतु है, दिहल दान तन त्यागी ।
पुलकि पुलकि प्रभु सौं भयो मेला, प्रेम जगो हिये भागी ॥२॥
गगन मँडल में रास रचो है, सेत सिंघासन राजी ।
कह गुलाल घर में घर पायो, थकित भयो मन पाजी ॥३॥

॥ शब्द ८ ॥

जो पै कोइ प्रेम को गाहक होई ।
त्याग करै जो मन कि कामना, सीस दान दै सोई ॥ १ ॥
और अमल की दर* जो छोड़ै, आपु अपन गति जोई ।
हर दम हाजिर प्रेम पियाला, पुलिक पुलिक रस लेई ॥२॥
जीव पीव महँ पीव जीव महँ, बानी बोलत सोई ।
सोइ सभन महँ हम सबहन महँ, बूझत बिरला कोई ॥३॥
या को गती कहा कोइ जानै, जो जिय साँचा होई ।
कह गुलाल वे नाम समाने, मत भूले नर लोई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ९ ॥

जनम सुफल भैलो हो हम धन पिया की पियारी ॥टेक॥
सोरहो सिंगार सँपूरन पहिरल देखल रूप निहारी ।
रत्त तिलक दे माँग सँवारल विनवल अँचरा पसारी ॥१॥
आठ पहर धुनि नौबति बाजै सहज उठै झनकारो ।
रीझि रीझि नेवछावर वारौं मुक्ता भरि भरि थारो ॥२॥

---
* ठाँव ।

गगन मँडल में परम पद पावल जमहिं कइल घर
जन गुलाल सोहागिन पिय सँग मिलली भुजा पस

॥ शब्द १० ॥

अब मो सोँ हरि सोँ जुरलि सगाई ।
ब्रह्मा बेद उचारत निसु दिन
अनुभव तूर बजाई ॥ १ ॥
संत साध मिल लगन धराई
प्रेम के बास चलाई ।
सुन्न सिखर पर माड़ो छावो
सहज के रूप लगाई ॥ २ ॥
गगन मँडल में कोहबर राचो
सीखस चित्र बनाई ।
सुरति निरति लै सखि सब गावहिं
घर ही नव निधि पाई ॥ ३ ॥
लोक बेद नेवछावरि वारौं
जुग जुग मेल बहाई ।
कहैं गुलाल परम पद पावो
सतगुरु ब्याह कराई ॥ ४ ॥

॥ शब्द ११ ॥

मन मोर बोलै हरि हरि राम ।
और देव से नाहीं काम ॥ १ ॥
प्रेम प्रीति नितहीं चित लाय,
रैन दिवस कतहूं नहिँ जाय ॥ २ ॥

पाँच पचीस लै बैठि अकास,
केल करत कोउ संग न पास ॥ ३ ॥
सुन्न सिखर पर करि बहु रंग,
दसैा दिसा में उठत तरंग ॥ ४ ॥
कृपा कियो गुरु भयो निस्सार,
जन गुलाल भजि उतरहि पार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

राम राम राम नाम सोई गुन गावै ।
आपु मारि पवन जारि गगना गरजावै ॥ १ ॥
अतिही आनंद कंद* बानि हूं सुनावै ।
सतगुरु जब दया जानि प्रेम हूं लगावै ॥ २ ॥
अगम जोति झरत मोसि झिलमिल झरि लावै ।
चित चकोर निरखि जोति आपु में समावै ॥ ३ ॥
काम क्रोध लोभ मोह सन मन बिसरावैं ।
सोई सुधित† धीर सोइ फकीर सोइ कहावै ॥ ४ ॥
जाति मान कुल के कान गरब हूं गँवावै ।
कह गुलाल सोई संत आपु हौं कहावै ॥ ५ ॥

॥ शब्द १३ ॥

मन तुम सदा चरन चित लाय ।
जासु नाम सुर नर मुनि तारे, निरखत कलुख‡ नसाय ॥१॥
पाँच पचीस तीन लइ बाँधो, उलटी नाव चलाय ।
तिरबेनी तट आसन माँडो, गगन मँडल मठ छाय ॥२॥

---

* समूह । † सुबुद्धि । ‡ पाप ।

बरसत जोति आखंडित धारा, भरी* दसहुं दिसि छाय।
बिनु सिर बैठि अमी रस अँचवै, लै लै लहरि समाय ॥३॥
नहिं तहँ थाह न आदि अंत नहिं, सतगुरु सत्त लखाय।
दास गुलाल भये तहँ सेवक, आनँद ढोल बजाय ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

भजु मन राम नाम निज सार।
जासु भजे किरपिन† डर छूटत, ज्ञान उठत उजियार ॥१॥
जो प्रभु कृपा करैं दासन पर, पल-छन पलक न छाँड़।
सुखमन सेज प्रभू पौढ़ाओ, गाओ मंगलचार ॥२॥
अछै अमर अनुभौ अनमूरत, संतन प्रान अधार।
कह गुलाल मेरे घर आये, तिहुं पुर की छबि वार ॥३॥

॥ शब्द १५ ॥

राम चरन चित अटको।
सहज सरूप भेख जब कीन्ह्यो,
प्रेम लगन हिय लटको ॥ १ ॥
लागि लगन हिय निरखि निरखि छबि,
सुधि बुधि बिसरी अटके नयन।
उठत गुंज नभ गरजि दसहुं दिसि,
निरभर झरत रसन ॥ २ ॥
भयो है मगन पूरन प्रभु पायो,
निर्मल निर्गुन सत लटनो।
कह गुलाल मेरे याही लगन है,
उलटि गयो जैसे नटनी ॥ ३ ॥

---

* भरपूर। † कंजूस, यह नाम जमराज को भी दिया जाता है।

॥ शब्द १६ ॥

अब हम छोड़ दिहल चतुराई, दुनिया गर्वभु लाई ॥टेक॥
सहज सरूप साहब घर पावल, अंते* जाय बलाई।
सुरति निरति ले आसन माँड्यो, जोग जुगति बनि आई ॥१॥
जन्म जन्म के पातक धोये, सतगुरु मैल बहाई।
सत्त सुकृत के नाव चलावो, बैठु अगम घर जाई ॥२॥
नहीं आदि नहिं अंत मध्य नहिं, नहिं आवै नहिं जाई।
अनुभो फल पावो परिपूरन, अभय निसान बजाई ॥३॥
अब की बार मारो ये बाजी, संतन साथ लगाई।
जन गुलाल अलूफा[†] पावो, मनुवहिं बाँधि ले आई ॥४॥

॥ शब्द १७ ॥

आनँद बरखत बुन्द सोहावन।
उमँगि उमँगि सतगुरु बर राजित समय सोहावन भावन ॥१॥
चहुं ओर घन घोरि घटा आयो सुन्न भवन मन भावन।
तिलक सत्त बैंदी पर झलकत जगमग जोति जगावन ॥२॥
गुरु के चरन मन मगन भयो जब बिमल बिमल गुन गावन।
कहै गुलाल प्रभु कृपा जाहि पर हर दम भादौं सावन ॥३॥

॥ शब्द १८ ॥

आजु हरि हमरे पाहुन आये, करौं मैं अनँद बधाव ॥टेक॥
मन पवना के सेज बिछावल, बहु बिधि रचल बनाय।
ताहि पलँग पर स्वामी पवढ़लहिं[‡] हम घन बेनिया[§] डोलाय ॥१॥
सुरति सोहागिन करहि रसोई, नाना भाँति बनाय।
घर में लवण्यों[‖] अरथ दरब सब, लै के सनमुख जाय ॥२॥

प्रेम प्रीत के भोजन कीन्ह्यो अमृत पत्र जेंवाय।
अलख जन्ध घर पाहुन आये संत उधारन राय ॥३॥
कह गुलाल साहब घर आये, सेव करब चित लाय ॥४॥
अधर महल पर बैठक पायोँ, अंते* जाय बलाय ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

अँखियाँ प्रभु दरसन नित लूटी।
हौं तुव चरन कमल में जूटी ॥१॥
निर्गुन नाम निरंतर निरखौं अनंत कला तुव रूपी।
बिमल बिमल बानी धुनि गावौं कह बरनौं अनुरूपी ॥२॥
बिगस्यो कमल फुल्यो काया बन, झरत दसहुँ दिस मोती।
कह गुलाल प्रभु के चरनन सों डोरि लगी भरि† जोती ॥३॥

॥ शब्द २० ॥

हौं अनाथ चरनन लपटानो।
पंथ और दिस सूझत नाहीं छोड़ो तो फिरौं भुलानो ॥१॥
जासु चरन सुर नर मुनि सेवहिं कहा बरनि मुख करौं बखानो।
हौं तो पतित तुम पतित-पावन गति औगति एको नहिं जानो ॥२॥
आठो पहर निरत धुनि होवै उठत गुंज चहु दिसा समानो।
झरि झरि परत अगार‡ नैन भरि, पियत ब्रह्म रुचि अमी अघानो ॥३॥
बिगस्यो कमल चरन पायो जब यह मत संतन के मन मानो।
जन गुलाल नाम धन पायो निरखत रूप भयो है दिवानो ॥४॥

---

* और जगह। † तक। ‡ शराब का फूल।

॥ शब्द २१ ॥

मेरो मन प्रभु सोँ लागल हो,
जागल प्रेम मन पागल हो ॥ १ ॥
घड़ि घड़ि पल पल जोति मिलो रहै,
काम क्रोध मद त्यागल हो ।
अगम अगोचर सत्त निरंजन,
बाजन अनहद बाजल हो ॥ २ ॥
एकै सत्त दसा एकै लिये,
एकै ब्रह्म बिराजल हो ।
आनँद एक भाव निस बासर,
एक भक्ति हम माँगल हो ॥ ३ ॥
अगम भेद सूझत नहिं बूझत,
सहज सहज होइ जागल हो ।
कह गुलाल साहब किरपा कियो,
दै कै तिलक निवाजल* हो ॥ ४ ॥

॥ शब्द २२ ॥

हरि पुर चलु याही बिधि जहँ संतन बास ॥ टेक ॥
सतगुरु सत्त लखावल पावल मत मूल ।
प्रेम प्रीत चित लावल मन देखल अस्थूल ॥ १ ॥
चंद सूर घर आयल तिरबेनी तीर ।
निरखि निरखि गति साजल दरसन रघुबीर ॥ २ ॥
सुरति निरति ले जाइब घर अगम अवास ।
वहवाँ प्रान अनादित काटल जम फाँस ॥ ३ ॥

---

* बख़्शिश की ।

लोक पुनिस* तीरथ व्रत राखहिं सब आस।
जन गुलाल सत बोलहिं चरनन बिस्वास ॥ ४ ॥

॥ शब्द २३ ॥

अरे मोर छैला भँवरा गैलो काहू न बुझाय ॥ टेक ॥
इक अँधियारी मग चलल न जाय।
बाझल भँवरा कौनी गति लाय ॥ १ ॥
बिरह के बाँधल भँवरा खसि खसि जाय।
सँग लागल भँवरा भैल बलाय ॥ २ ॥
प्रेम बझावल भँवरा चरन लगाय।
घर आय भँवरा रहल लोभाय ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल थकलीं ब्रज नारी।
हम धन मिललीं भुजा पसारी ॥४॥

॥ शब्द २४ ॥

पावल प्रेम पियरवा हो ताहि रे रूप।
मनुवा हमार बियाहल हो ताहि रे रूप ॥ १ ॥
ज्ञान के गछवा† लगावल हो ताहि रे तर।
मनमत कहल बध वर हो ताहि रे तर ॥ २ ॥
ऊँच अटारी पिया छावल हो ताहि रे पर।
गुरु गम गाँठि दियावल हो ताहि रे पर ॥ ३ ॥
अगम धुनि बजन बजावल हो ताहि रे पर।
मोतियन चौक पुरावल हो ताहि रे पर ॥ ४ ॥
दुलहिन दुलहा मन भावल हो ताहि रे मन।
भुज भर कंठ लगावल हो ताहि रे मन ॥ ५ ॥

---

* पवित्र। † पेड़।

गुलाल प्रभू वर पावल हो ताहि रे पद ।
मनुवा प्रीत लगावल हो ताहि रे पद ॥ ६ ॥

॥ शब्द २५ ॥

सुन्न सिखर चढ़ि जाइब हो, बाजत अनहद तार ॥टेक॥
उमँगि उमँगि सखि गावहिँ हो, मानिक देव लिलार ॥१॥
उलटी नदिया सोहावन हो, सत्त सुखमना बास ॥२॥
दृढ़ कै सुरति लगावल हो, सतगुरु संग निवास ॥३॥
जीव के ऊब* निवारहु हो, पाँच पचीस मन मार ॥४॥
यहि बिधि ध्यान लगावहु हो, करम मेटो संसार ॥५॥
गावल निर्गुन मनोरवा हो, जन गुलाल मिलो यार ॥६॥

॥ शब्द २६ ॥

मन मोरा गरज समाना मन मोरा ॥टेक॥
अष्ट जाम को खेल बनो है थकित भयो तन जोरा ॥१॥
पाँच सखिन मिलि मंगल गावहिं सहजहि उठै झकोरा ॥२॥
सिव सक्ती मिलि स्याम घटा पर नीझर झरत हिलोरा ॥३॥
धधकि धधकि सुंदर बर राजित सतगुरु कियो गठजोरा ४॥
कह गुलाल पिय संग सोहागिनि अचल है सेँदुर मोरा॥५॥

॥ शब्द २७ ॥

छिन छिन प्रीति लगी मोहिँ प्रभु को ॥१॥
आठ पहर चित लगै रहतु है, मिटलि सकल डर उर को॥२॥
उमँगि उमँगि उज्जल जल झलकत, अनुभो मानिक बर को ॥३
कह गुलाल घर अनँद मगन भो, चढ़ि सुमेर भव तर को ॥४॥

---

* चिन्ता, घबराहट।

॥ शब्द २८ ॥

प्रभु जी सों लागल प्रीति नई ।
निरखत रूपहिं भई बावरी तन सुधि सबै गई ॥१॥
अष्ट जाम चित लगो रहतु है, प्रभु जी के परलुं पई* ।
सहज सरूप सब्द को सेहरा, सो मोहिं आन भई ॥२॥
गगन मँडल में बानि उठतु है, हर दम नाम नई ।
अबकी बेर कृपाल दया निधि, लोचन लाल दई ॥३॥
सोई सहीद मगन मन मौला, दोजख भिस्त गई ।
कह गुलाल घर अनँद मगन भो, प्रभु सिर तिलक दई ॥४॥

॥ शब्द २९ ॥

सतगुरु के परताप तो अनँद बधावरा ।
आजु मेरे गुरु असिथि† करब हम भाँवरा ॥१॥
पाँच पचीसो सखियाँ चौक पुरावहीं ।
गुरु जी के चरनोदक लै छिरकावहीं ॥२॥
तीन जना मिलि इक मत भाँवर नावहीं ।
चन्द्र बदन सिर सेंदुर माँग बनावही ॥३॥
जुग जुग अचल सोहाग तो प्रीति लगावहीं ।
दुलहा बनल निरबान तो कंठ लगावहीं ॥४॥
मोतियन माड़ो छइया बजन बजाइया ।
दास गुलाल सोहागिनि कंत रिझाइया ॥५॥

॥ शब्द ३० ॥

अजर बियाह कैसे बनि आई ।
गुरु के बचन सुनि लगन लगाई ॥ १ ॥

---

* चरनों पड़ी । † पाहुन ।

सुनत सुनत जिव बर मन भाई ।
बाम्हन मत बुधि नहिं ठहराई ॥ २ ॥
बर मोर तिरबिधि जोग न आई ।
माय मोरि अरुझैलै बाप अरु भाई ॥ ३ ॥
ऐसो नहिं कोइ ब्याह कराई ।
डोरिया लगलि अब कस छुटकाई ॥ ४ ॥
सनमुख ह्वै प्रभु लगन लगाई ।
अष्ट जाम धुनि नौबति बजाई ॥ ५ ॥
तिरबेनी तीरहिं कलस धराई ।
बिपरीती* माँडो रच्यो बनाई ॥ ६ ॥
जरि गैल माँडो उदित सोहाई ।
तबै प्रभु सैंदुर अचल धराई ॥ ७ ॥
कह गुलाल हम पतिबर पाई ।
जावै नइहर हमरि बलाई ॥ ८ ॥

बिनती और प्रार्थना

॥ शब्द १ ॥

दीनानाथ अनाथ यह, कछु पार न पावै ।
बरनौं कवनी जुक्ति से, कछु उक्ति न आवै ॥१ ॥
यह मन चंचल चोर है, निस बासर धावै ।
काम क्रोध में मिलि रह्यो, ईहै मन भावै ॥ २ ॥
करुनामय किरपा करहु, चरनन चित लावै ।
सतसंगति सुख पाय कै, निसु बासर गावै ॥ ३ ॥

---

* उलटा ।

अब कि बार यह अंध पर, कछु दाया कीजे ।
जन गुलाल बिनती करै, अपनो कर लीजे ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

प्रभुजी हूजिये जन को दयाल ।
जन अपराधी कोटि औगुनी, तौ करिये प्रतिपाल ॥१॥
सुरग पताल मृतलोक जहाँ लग, यह सब तुम्हरो ख्याल ।
जहँ पग देउँ जहाँ लगि निरखौं, सो बड़ हो जंजाल ॥२॥
हरदम नाम तुम्हारो लीये, फिरौं सो तुम्हरी नाल* ।
घाटि बाढ़ि एको न चलायो, लह्यौं न एको हाल ॥३॥
बकसो सील छिमा से दयानिधि, यह वर देहु गुलाल ।
करिये कृपा बिरद निज जन पर, चलिये अपनी चाल ॥४॥

॥ शब्द ३ ॥

तुम्हरी मोरे साहब क्या लाऊँ सेवा ।
अस्थिर काहु न देखऊँ सब फिरत बहेवा ॥ १ ॥
सुर नर मुनि दुखिया देखौं सुखिया नहिं केवा ।
डंक मारि जम लुटत है लुटि करत कलेवा ॥ २ ॥
अपने अपने ख्याल में सुखिया सब कोई ।
मूल मंत्र नहिं जानहीं दुखिया भे रोई ॥ ३ ॥
अबकी बार प्रभु बीनती सुनिये दे काना ।
जन गुलाल बड़ दूखिया दीजे भक्ती दाना ॥ ४ ॥

॥ शब्द ४ ॥

प्रभुजी बरषा प्रेम निहारो ।
ऊठत बैठत छिन नहिं बीतत याही रीत तुम्हारो ॥१॥

---

* साथ ।

समय होय भा* असमय होवै भरत न लागत बारो ।
जैसे प्रीति किसान खेत सोँ तैसो है जन प्यारो ॥२॥
भक्त-बछल है बान† तिहारो गुन औगुन न बिचारो ।
जहँ जहँ जावँ नाम गुन गावत जम को सोच निवारो ॥३॥
सोवत जागत सरन धरम यह पुलकित मनहिं बिचारो ।
कह गुलाल तुम ऐसो साहब देखत न्यारो न्यारो ॥४॥

॥ शब्द ५ ॥

प्रभु को तन मन धन सब दीजै ।
रैन दिवस चित अनत न जावै नाम पदारथ पीजै ॥१॥
जब तें प्रीत लगी चरनन सोँ जग संगत नहिं कीजै ।
दीन-दयाल कृपाल दया-निध जो आपन करि लीजै ॥२॥
ढूँढ़त फिरत जहाँ तहँ जग में काहू बोध न कीजै ।
प्रभु के कृपा औ संत बचन ले हिरदे में लिख लीजै ॥३॥
कह बरनौं बरनत नाहिं आवै दिल चरखी न पसीजै ।
कह गुलाल याही बर माँगौं संत चरन मोहिं दीजै ॥४॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रभु तुम ऐसे दीन-दयाल ।
हम अस अधम कुटिल चंडाल ॥१॥
केतिक अधम कहाँ लगि बरनौं करम धरम को जाल ।
मोर मोर करत दिन बीतल मारि लेत जम काल ॥२॥
अधम होत जो कारज सीझत पगल माय के ख्याल‡ ।
सुमति कुमति निसु बासर भोजन सोवत परो बेहाल ॥३॥
तुम अस ठाकुर परगट देखत करत सबै प्रतिपाल ।
मेरु धरनि जल थल में साहब का जाने वह हाल ॥४॥

---

* था । † बाना, सुभाव । ‡ माया के ख्याल में पगा हुआ है ।

सुरति सरीरहिं आवत नाहीं डारत गर में माल ।
हिंदू तुरुक मज़्हब* में लागे बुद्धि बिसरि गइ हाल ॥५॥
हम अबला बल कछु हम नाहीं प्रभु तुम ऐसे लाल ।
अब की बार यही बर पावों लिखिये अधम गुलाल ॥६॥

॥ शब्द ७ ॥

प्रभु तेरी माया अगम अपार ।
तुम जान्हु सब सिरजनहार ॥ १ ॥
सिव ब्रह्मा सब देव मुनि मोहे कीन्हो न किनहूँ बिचार ।
धोखा धोख सभन में उपजे काहु न आपु सँभार ॥२॥
छिन में पाले छिन में पेखे छिन में करत सँघार ।
तुम्हरे मोह न तुम्हरे माया मूरुख कहत हमार ॥३॥
जो जन चरन सरन लपटाने सबहिं लड़ायो† मार ।
मन क्रम बचन अवर नहिं जाने ता को लीन्ह उबार ॥४॥
धन्न धन्न तुम धन्न प्रभू जी साध सदा रखवार ।
कह गुलाल दास के सेवक अब को सकत निहार ॥५॥

॥ शब्द ८ ॥

गति पूरन प्रभुराया हो ।
कह बरनों बरनी नहिं आवै तुम अनंत जग गाया हो ॥१॥
अधम-उधारन सठ-निस्तारन खल-पावन पद पाया हो ।
जा को नाम रटत सनकादिक भक्ति किसोर बढ़ाया हो ॥२॥
गोरखदत्त बसिष्ट ब्यास मुनि सुकदेव आदि जनाया हो ।
अनेक साध संतोष सत्त लिये मन को ध्यान लगाया हो ॥३॥

---

* मज़हब । † गिराया ।

सिव ब्रह्मा जा को थाह न पावहिं नर बपुरा कत पाया हे ।
जा पर कृपा कियो सतगुरु ने सहजहिं हरिहिं मिलाया हो ॥४॥
हौं अनाथ नाथ तुम चरनन का को बिनय सुनाया हो ।
कह गुलाल साहब आपन कियो अनहद ढोल बजाया हो ॥५॥

भेद का अंग

॥ शब्द १ ॥

जो पैं साँचि लगन हिय आवे ।
काटै सकल करम के फंदा, आनँदपुर घर छावे ॥ १ ॥
पाँच पचीस तीन बस करिके, सुखमन सेज बिछावे ।
सुरत सोहागिन उड़ै गगन-मुख, तब चंदा दरसावे ॥२॥
मूल चक्र गहि के दृढ़ बाँधै, बंक नाल चढ़ि धावे ।
अबिगत सों यह खेल बनो है, आवागवन नसावे ॥३॥
रीझि रीझि दसहूं दिसि पूजै, पारब्रह्म में समावे ।
जन गुलाल भइ प्यारी खसम की, रहसि रहसि गुन गावै ॥४

॥ शब्द २ ॥

उलटि देखो, घट में जोति पसार ।
बिनु बाजे तहँ धुनि सब होवै, बिगसि कमल कचनार ॥१॥
पैठि पताल सूर ससि बाँधो, साधो त्रिकुटी द्वार ।
गंग जमुन के वार पार बिच, भरतु है अमिय करार ॥२॥
इँगला पिंगला सुखमन सोधो, बहत सिखर-मुख धार ।
सुरति निरति ले बैठु गगन पर, सहज उठै झनकार ॥३॥
सोहं डोरि मूल गहि बाँधो, मानिक बरत लिलार ।
कह गुलाल सतगुरु बर पायो, भरो है मुक्ति भँडार ॥ ४॥

॥ शब्द ३ ॥

चित धरि, करहु आपु सँभार ।
सुरति डोर लगाउ गगनहिं, उठत है झनकार ॥१
चंद सूरज रैन दोवस, नाहिं धर्म अधार ।
सरल जीवन संग साथो, ऐसोई ब्योहार ॥ २ ॥
हूाँ कोन देखै कौन सूनै, गुन न वार न पार ।
अगम घर चर जाय बैठा, यह घर नाहिं पगार* ॥३
प्रेम लागो नेम कैसा, सब भया जरि छार ।
कह गुलाल जो नाम मिलिया, अछर नहिं बिस्तार

॥ शब्द ४ ॥

मनुवा अगम अमर घर पायो ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है, बिनु कर डंक बजाये
बिनु पग नाच नचावन लागे, बिनु रसना गुन गा
गावनहार के काया न माया, अनुभा रंग बनाये।
अर्ध उर्ध के मध्य निरंतर, त्रिकुटी जा ठहराये ।
लवके बिजुली उठे गगन में, मुकुता तहँ झरि लाये
भयो अघोर निसु बासर नाहीं, सुन्न भवन दर† पा
जन गुलाल पिय मिला है सुहागिन, आनंद जोति जग

॥ शब्द ५ ॥

गगना गरजि गरजि मन भावन ।
चारि सखी चहुँ दिस है गरजत, पचए बरसत साव

* पाही का झोपड़ा जो चंद रोज़ के लिये खेत में बना लेते हैं। † द्वार

छिमा सील सँतोष सागर भरो, धनि सतगुरु जिन
अलख बनावन।
कह गुलाल बरषा भयो पूरन, मारो घर मन रावन ॥ २ ॥

॥ शब्द ६ ॥

हे मोरी सखियाँ लागलि गुरु के साँट* भइलि मनभावन ॥टेक
पाँच सखी मिलि मंगल गावहिं, मोतियन चौक पुराय।
तारी दै दै भाँवर फेरहिं, दुलहा बरनि न जाय ॥ १ ॥
चौके चार चतुर जन बैठे, आनँद बेद भनाय†।
चंद्र लगन सिर सेंदुर बाँधल, अमर सोहाग बनाय ॥२॥
नौबति धुनि चहुं ओर दसौ दिसि, माँड़ो‡ उदित सोहाय।
रोम रोम मनसा भै पूरन, दुलहिन पिया मन भाय ॥३॥
माँड़ो जारि बरातिन मारल, खाइल गावँ के लोग।
कह गुलाल हम सबहिं सँघारल, पुरन भइल सब जोग ॥४॥

॥ शब्द ७ ॥

अचरज हम इक देखल, पंडित करहु बिचार।
कहा कथब औ कहा सुनब, नाम करब ब्योहार ॥ १ ॥
जगमग अचरज देखल, पंडित भइल बिचार।
ज्ञान कथब औ धुनि सुनब, नाम करब ब्योहार ॥ २ ॥
कहवाँ से जिव आइल, कहवाँ जिव कर बास।
कहवाँ जीव समाइल, कहवाँ सक्ति निवास ॥ ३ ॥
ब्रह्म से जिव आइल, नाभि कँवल में बास।
सुन्नहिं सक्ति समाइल, सिव घर सक्ति निवास ॥४॥

* लपेट, लगन। † पढ़ा जाता है। ‡ मंड़वा।

कहवाँ सिव कर आसन, कहवाँ सिव कर ध्यान ।
कहवाँ सिव कर मंडप, कहवाँ सिव अस्थान ॥ ५ ॥
अगमे सिव कर आसन, सक्तिहिं सिव कर ध्यान ।
सुन्न भवन में मंडप, निगमे सिव अस्थान ॥ ६ ॥
कहवाँ से मन आइल, कहवाँ परल भुलाय ।
केहि ले मन घर गवनल, कैसे मन ठहराय ॥ ७ ॥
मन हीं से मन आइल, मोहहिं परल भुलाय ।
सक्तिहिं ले मन गवनल, सहजहिं घर ठहराय ॥ ८ ॥
कौन सब्द गुन गावल, कैसे बिंदु मिलाप ।
कौन द्वार है जाइब, कौन करब तहँ जाप ॥ ९ ॥
अगम सब्द गुन गावल, नादहिं बिंदु मिलाप ।
पच्छिम द्वार है जाइब, आपु करब तहँ जाप ॥ १० ॥
कह गुलाल यह अनुभव, सन्त कइल बीचार ।
जो यहि पदहिं बिचारल, सोई गुरू हमार ॥ ११ ॥

॥ शब्द ८ ॥

ग्यान पायो अघर कटोरा, उलटी चाल चलत मन मोरा ।टेक।
संग जगाती* पंथ चिकत है, बरबस लूटत डेरा ।
जत सब आवै तत सब खावै, ताकैं† साँझ सबेरा ॥ १ ॥
काजी मुलना पीर औलिया, पंडित करत निहोरा ।
सुर नर नाग देव गंधर्बा, काहु न कीन्हो जोरा ॥ २ ॥
प्रेम प्रकास भयो जब मेरे, डंक दियो गढ़ तोरा‡ ।
कह गुलाल पिया सँग बनि आजी, का करिहै जम जालिम मोरा ॥ ३ ॥

* कर लेने वाले। † देखता रहता है। ‡ डंका बजा कर क़िले को फ़तह कर लिया।

॥ शब्द ९ ॥

मन सहज सुन्न चढ़ि करु निवास ।
रूप रेख तहँ जाति पाँति नहिं, अछय अमूरति करत बास १
बिनु कर ताल पखाउज बाजै, बिनु रसना गुन गाय ।
बाजे बिना सब्द धुनि होवै, बिनु पग नाच नचाय ॥२॥
चाँद सूर निस बासर नाहीं, तीन देव नहिं बेद चारि ।
कह गुलाल तहँ मार्यो बाजी, घर आयो मन सहज मारि ३

॥ शब्द १० ॥

जब हम प्रभु पायो बड़ भागी ।
तन मन धन न्योछावरि वार्यो, हरि चरनन चित लागी ॥१॥
काम क्रोध ममता मद त्याग्यो, अभय अगम पद जागी ।
अर्ध उर्ध बिच भाठी साजी, पियत करारो पागी ॥२॥
तिरबेनी में लगी खुमारी, टरत नहीं मन टारी ।
गंग जमुन के मध्य निरंतर, तहवाँ देव मुरारी ॥३॥
मुक्ता मनि मानिक तहँ बरसत, निझर झरी तहँ लागी ।
सेत सिंहासन बैठक पायो, जन गुलाल बैरागी ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

जो पै कोउ उलटि निहारै आप ।
निरखि निरखि अंतर लौ लावे, बिन माला को जाप ॥१॥
सत सरूप सतगुरू बचन लिये, करहु जो अगम पयान ।
बिगसित कमल उगो है सहसमुख, भँवरा रहत लोभान २
तिरबेनी में तिलक बिराजै, बंक नाल चढ़ि जात ।
दसो दिसा में जोति जगमगै, वा के तात न मात ॥३॥

अछय अभय अनुभव अनमूरति, संत सजीवन नाथ।
जन गुलाल तहँ फिरहिँ करारी*, कोई संग न साथ ॥४॥

॥ शब्द १२ ॥

भाई मोहिँ यही अचंभो भारी।
तातेँ कौन पुरुष को नारी ॥ १ ॥
मनि परकासित कहिये भुवंगा, सो है कुल अधिकारी।
को पतिब्रता को अलवंसा†, को बिभिचारी बारी ॥२॥
कथने नीर कवन जल कहिये, को अमृत को खारी।
को है कूप गंगाजल को है, को है सलिल डबारी‡ ॥३॥
को है कीट पतंग कौन है, को है नृपति भिखारी।
को है चिउँटी हस्ति कवन है, को जन्मै को मारी ॥४॥
कह गुलाल यह बूझि थको जिव, निरवस को निरवारी।
सतगुरु कृपा संत सरनागति, भवसागर तेँ उबारी ॥५॥

॥ शब्द १३ ॥

देखो संतो सुरति चढ़ी असमान, दूजा और न आन ॥टेक॥
जगमग जोति बरत अति निर्मल, देखि दरस कुरबान ॥१॥
निरखि रूप मन सहज समानो, जम कर मरदल मान ॥२॥
जन गुलाल पिय प्रेम लगन लगो, दियो सीस को दान ॥३॥

॥ शब्द १४ ॥

प्रान पाहुन मोर ए री मना ॥ टेक ॥
पाँच पचीस तीन सँग लीये, पवन चढ़ो है घोरा ॥१॥
सत्त सिँहासन बैठक दीन्हो, जगत जोत चहुं ओरा ॥२॥

---

* अकेला। † जिस स्त्री को हाल में लड़का पैदा हुआ है। ‡ डाबर या गड़हे का पानी।

पाँच सखी मिलि जेवन* बनावहिं, काहु न लगत निहोरा ॥३॥
पतरी† प्रेम परत है परस्पर, सुखमन भरत कटोरा ॥४॥
ज्ञान गुरु के बिंजन परोसहिं, साँझ सकार सबेरा ॥५॥
सबहिं खियावल अपनहु खायल, चौथे पद पर डेरा ॥६॥
कह गुलाल मेरो पाहुन आयो, कबहुं न करिहौं फेरा ॥७॥

॥ शब्द १५ ॥

एकै नाम अधारा, मेरे एकै नाम अधारा हो ।
परखि परखि निरखत निस बासर, जग तें भयो निनारा हो ॥ १ ॥
अष्ट कमल में जीव बसतु है, सतगुरु सब्द बिचारा हो ।
ले कै पवन हंस जब गवन्यो, त्रिकुटी भौ उँजियारा हो ॥२॥
पैठि पताल मूल बँद बाँधो, सुखमन सेज सँवारा हो ।
निरझर झरत अमी तहँ बरखत, मनुवाँ तहाँ हमारा हो ॥३॥
गगन मँडल में नौबति बाजै, आठ पहर इकतारा हो ।
माखो ममता चित्त समानो, चौमुर दीपक बारा हो ॥४॥
छूटी देह नेह रहि इक सौं, आदो ब्रह्म बिचारा हो ।
कह गुलाल साहब हम पायो, जम का करि है हमारा हो ॥५॥

॥ शब्द १६ ॥

नैहर गरब गुमानिया हो, फरलि करम कै द्वार ।
ससुरे सँगति नहिं जाइब हो, करबहुं कौन बिचार ॥१॥
सासु ननद कै झगरा हो, सवति जो हमरो अपारि ।
सइयाँ हमरे कुबुजवा‡ हो, हम धन अल्प कुमारि ॥२॥

---

* भोजन । † पत्तल । ‡ कुबड़ा यानी बूढ़ा ।

गाँव के लोगवा निरखे* हो, छिन छिन देंह निहार।
पार परोसिन हाहे हो, निस दिन करत कुफार† ॥३॥
घर के मर्म नहिं जान्यो हो, महा कठिन दुख मार।
अँचरा पसार धन‡ बिनवै हो, कब दहुँ मरै भतार ॥४॥
मोर महल मन मान्यो हो, छुटल सकल संसार।
जन गुलाल अस बोलहिं हो, मिलहिं कंत हमार ॥५॥

॥ शब्द १७ ॥

मन मगन भयो जब प्रभु पायो।
ज्ञान गुफा में निरंतर देख्यो, अनुभौ गसि तेहि आयो ॥१॥
छोड़ि करम ममता मद त्याग्यो, संसय सोक न आयो।
सहज आसन ले उड़्यो गगन में, मुक्ता भर झरि लायो ॥२॥
फूल्यो काया उगे मनि मानिक, बिमल बिमल गुन गायो।
निसु बासर केवल परगासा, जम दुत निकट न आयो ॥३॥
प्रेम प्रीति हिरदे में राखे, अनतहिँ चित्त न जायो।
कह गुलाल अवधूत सोई है, भँवर गुफा घर छायो ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

तेलिया रे तेल पेर बनाई।
कोल्हुवा हाँके घनिया लगाई ॥१॥
गाँव के लोगवा तेल को जाई,
पनियाँ मिलाय देत डहँकाई§ ॥२॥
यह तेलिया अब भयल जँजाल,
का मैं कहौं ठाकुर‖ मसवाल ॥३॥

* झुरते हैं। † खुराफ़ात, झगड़ा टंटा। ‡ स्त्री। § ठग लेना। ‖ ज़मींदार।

कह गुलाल यह निगुन अपार,
तेलिया बाँधल बरद की सार* ॥४॥

॥ शब्द १६ ॥

मैं तो राम चकरियाँ मन लाओंगा ।
तातें सहज सरूप समाओंगा ॥ टेक ॥
पाँचहिं मारि पचीसहिं मारो गढ़ पर दीप बराओंगा ॥१॥
उनमुनि धुनि में सुरति समाओं उलटी गंग बहाओंगा ॥२॥
सुखमन के घर तारी लाओं अली अलूफा पाओंगा ॥३॥
आठो पहर करों असवारी ज्ञान के खड़ग लगाओंगा ॥४॥
तरकस तेज पवन बँद लाओं पकरि मवास ले आओंगा ॥५॥
साहब रीझै नौबति बकसे निसु दिन डंक बजाओंगा ॥६॥
जन गुलाल भयो दफ़्तर दाखिल बहुरि न भवजल आओंगा ७

॥ शब्द २० ॥

बैरागी मन कहवाँ घर तुम किया, तातें सहज सरूपी
भेष लिया ॥टेक॥
कवनि जुगति तुम आसन माँड़ो, कवनी देखो हीया ॥१॥
गंग जमुन तट आसन माँड़ो, तिरबेनी तट बारो दीया ॥२॥
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी, छोड़ सकल जग दीया ॥३॥

॥ शब्द २१ ॥

ससुरवाँ पंथ कैसे जाब हो, नैहर अति बड़ कूर ॥टेक॥
काम न जानों गुन नहिं आवे करब कवन हम ज्ञान ।
सँगहिं सवति सोहागिन हमरी कैसे रहहि अब मान ॥१॥

---

* गऊ-शाला । † नौकरी ।

सासु ननद घर दारुन भइलीं पियवा नाहिं हमार ।
गाँव के लोगवा लइया* लावे भसुरे† मिलली भतार ॥२॥
का से कहौं दुख कौन सुने अब निसु दिन डहत अँगार ।
धन जोबन दूनोँ हम खोवल पिया नहिं अयलैं हमार ॥३॥
नेम धरम कइके मन लावल करम बुड़ल संसार ।
कहैं गुलाल अगमपुर बासी नैहर छुटल हमार ॥४॥

॥ शब्द २२ ॥

कहाँ जइये घर मिलल भोग, भ्रमत रहत सब फिरत लोग ॥१
सहज सरोवर फुलल फूल, बिनसल‡ कमल भँवर रस भूल २
पियत पियत जब भयो है सूर, अनुभौ बाजा बजत तूर ॥३॥
पायो घर जग छुटल फेर, नाम खजाना मिलल ढेर ॥४॥
ऋद्धि सिद्धि मेरे कवन काज, लोक बेद की छुटलि लाज ॥५
थकित भये जब पाँच पचीस, तीनोँ देव मिले जगदीस ॥६
कह गुलाल मन मिलल भाव, ज्ञान लहरि गै सिंधु समाय ॥७

॥ शब्द २३ ॥

पारस नारायन को मोहिं लागे ।
लोहे तें कनक कनक तें पारस, अनुभौ गति अनुरागे ॥१
काठ तें चंदन चंदन तें मलयज§ , मोल अमोलन लागे ।
भृंग तें कीट कोट तें भृंग भयो, सत्य लगे जिव जागे ॥२
काग तें हंस हंस परहंसन‖ , जोगी जुगत समाधे ।
जीतो जोग भोग सब त्यागो, जेइ नर मन को बाँधे ॥३॥
चढ़ि पहार निर्धार जोति मिलो, उलटि जु गयो सुभागे ।
एकै ब्रह्म एक भयो साहब, कह गुलाल मन पागे ॥४॥

* चुग़ली । † जेठ । ‡ सूख जाना । § ख़ास मलयागिर का ख़ालिस चन्दन ।
‖ परमहंस ।

॥ शब्द २४ ॥

मनुवाँ संग लगाई झुठ मुँठ खेलहीं ॥ टेक ॥

सासु ननद धैके अब लिहलिन्हि, दमदहि* बँधलिन्हि जाई ।
गोद कै बलकवा छोर अब लिहलिन्हि, बुढ़िया चललपराई† ॥
घर लुटवौलिन्हि सहर जरौलिन्हि, केहि गोहरावौं जाई ।
सवति भौजिया और जेठनिया, ठाढ़ी रहलि तेवाई‡ ॥२॥
कुल कुटुम्ब सबही पिस मरलिन्हि, का अब करौं उपाई ।
ठाढ़ी भइल घन सिर कर धूनै, का हम लइके जाई ॥३॥
छोड़हुं देस अनँद सब होइहै, सतगुरु लिह्यो बचाई ।
जन गुलाल काया गढ़ जीत्यो, दियो निसान बजाई ॥४॥

भेष की रहनी

॥ चौपाई ॥

तूमा तीन भारती§ बनायो ।
चौथे नीर भरि हाथ लगायो ॥ १ ॥
सुखमन सीतल पीअत नीर ।
निकसि दसौ दिसि अनँद फकीर ॥ २ ॥
कुबरी‖ करम काट ले आई ।
ज्ञान खरादे रच्यो बनाई ॥ ३ ॥
सतगुरु के घर बैठक दीन ।
मनुवाँ तहाँ रहत लौलीन ॥ ४ ॥

---

* दामाद को । † भागना । ‡ मुरझाई हुई । § भरत अर्थात मिश्रित धात का । ‖ छड़ी ।

तिलक तत्त दियो लीलार ।
अगम भेख बन्यो टकसार ॥ ५ ॥
एकादस तिलक दियो जिन धीर ।
कहै गुलाल अलमस्त फकीर ॥ ६ ॥
असनवटी आसन सारी लावे ।
द्वादस बैठि गगन घर धावे ॥ ७ ॥
गगन जोति में रहे समाई ।
कह गुलाल आवे नहिं जाई ॥ ८ ॥
कोपिन* बाँधे मूल दुवार† ।
उलटे पवन उठे झनकार ॥ ९ ॥
अष्ट कँवल फूल्यो जब फूल ।
जन गुलाल हिंडोला झूल ॥ १० ॥
कंठी करम काटि जो डारे ।
अजपा जपे जोति सब बारे ॥ ११ ॥
सुमिरन करे बैस्नव तेई ।
कहैं गुलाल अतिथि है सेई ॥ १२ ॥
मुरछल मन फेरे खिस लाई ।
अगम जोति दसहूँ दिसि छाई ॥ १३ ॥
सत्त सब्द ले मुरछल बाँधे ।
कहैं गुलाल फिरत सब धाँधे ॥ १४ ॥
पउवा‡ प्रेम पगर§ जो नावे ।
उनमुनि जाय गगन घर धावे ॥ १५ ॥

* लँगोटा । † गुदा चक्र । ‡ खड़ाऊँ । § पाँव ।

रिमझिमि बरसे मानिक मोती ।
कह गुलाल पउवा चढ़ सेती* ॥ १६ ॥
कमरबँद बाँधि अगम घर जोवै ।
उलटि सुखमना गतिहि बिलोवै ॥ १७ ॥
बजर† फाड़ बाँधे तत सार ।
कह गुलाल यह रहनि हमार ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

माला जपौं न मंतर पढ़ौं, मन मानिक को प्रेम ।
कंथ गूदरि पहिरौं नहीं, कह गुलाल मेरे नेम ॥१९॥
गुलाल साखी‡ सत दियो, प्रेम सेल्हि हिये नाय ।
सुमिरिनी मन महँ फिस्यो, आठ पहर लौ लाय ॥२०॥
गूदर धागा नाम का, सूई पवन चलाय ।
मन मानिक मनि गन लस्यो, पहिर गुलाल बनाय २१
गुलाल माला नाम का, राखो गर में नाय ।
कोटि जतन छूटे नहीं, रहो जोति लपटाय ॥२२॥

अरिल छंद

(१)

प्रान चढ़ो असमान सहज घर जाइया ।
सुन्न सहर झकझोर सुरति ठहराइया ॥
जोग जुगत सों नेह ब्रह्म में समाइया ।
कहै गुलाल अवधूत सत्य सब पाइया ॥

---

*सफ़ेद । †वज्र कपाट । ‡साधुवों की टोपी ।

(२)

सुन्न सरोवर घाट फूल इक पाइया ।
बिनु डाँड़ी का फूल केतिक मन भाइया ॥
अमी पियाला पिया भँवर रस पाइया ।
कहै गुलाल असीथ राम गुन गाइया ॥

(३)

अष्ट कँवल जब फुल्यो उलटि के धाइया ।
बंक नाल भयो सूध अगम घर जाइया ॥
दसो दिसा बरि जोती सहाँ समाइया ।
कहे गुलाल सत सूर अनँद तब पाइया ॥

(४)

उनमुनि बंद लगाय सुरति ठहराइया ।
चाँद सूर दोउ बाँधि उर्धमुख धाइया ॥
सुखमन सीतल स्वाद चुभुकि रस पाइया ।
कह गुलाल हरि नाम रफस* तब पाइया ॥

(५)

अलह इमान लगाय सितून† बढ़ाइया ।
रफस सिफत की बातें इलम‡ लखाइया ॥
रोज रहो मुस्ताक कबहुं नहिं सोइया ।
कहै गुलाल अवधूत यार लख पाइया ॥

---

* रब्त, मेल । † खंभा । ‡ ज्ञान ।

(६)

परखि साहब सौँ रीति नाम लव लाइया ।
सब घट पूरन सोई तहाँ मन लाइया ॥
कोटिन चंद उगाय मोति झरि लाइया ।
कहै गुलाल सोइ हंसा परखि अघाइया ॥

(७)

तिरगुन तेल बराइ के जोति जगावई ।
पाँच पचीस को लादि ब्रह्म घर छावई ॥
अनहद बजाइ अघोर अगम गुन गावई ।
कहै गुलाल हरि नाम परम पद पावई ॥

(८)

अष्ट कँवल फूलाय पवन लै धावई ।
सोरह कला सँपूर तहाँ मन लावई ॥
घटत बढ़त नहिँ जोति सीतल सत गावई ।
कहै गुलाल सतलोक तबहिँ नर पावई ॥

(९)

जोग जुगत को जानि के जमहिँ नचावई ।
सतगुरु के परताप गगन चढ़ि धावई ॥
जीव ब्रह्म सौँ नेह सो तबहिं समावई ।
कहै गुलाल तब ज्ञान अचल पद पावई ॥

(१०)

सुंदर साहब जानि के प्रेम लगावई ।
अजपा जपै सुजाप सुरति ठहरावई ॥

रबि ससि दूनों बाँधि निरंतर धावई ।
कहै गुलाल असीम तत्त घर छावई ॥

(११)

निर्मल रूप अपार सों सुरति लगाइया ।
बिनु पग चालो चाल अनँदपुर जाइया ॥
देत दमामा ढोल सो जमहि नचाइया ।
कहै गुलाल सोइ सूर सहज घर पाइया ॥

(१२)

अकबति* अलह सोँ जानि सुबुक† सोँ बोलना ।
हर दम हक‡ ही लाइ रफ्त§ नहिं डोलना ॥
पंच फिरिस्ते‖ पकरि नयन नहिं खोलना ।
कहै गुलाल सोइ साफ हिम्मत¶ नहिं डोलना ॥

(१३)

खुब** साहब सोँ प्रीति सुरति जो लावई ।
अलह इमान सोँ नूर कसब†† तब पावई ॥
इलम इमान लगाइ सुबुक† लब पावई ।
कहै गुलाल फकीर यार सोइ भावई ॥

(१४)

सब घट साहब बोल सत्त ठहरावई ।
निसु बासर मैाजूद भिस्त‡‡ की चलावई ॥

---

*आक़िबत=परलोक । † कोमलता । ‡ सत्य । § रब्त, मिलाप । ‖ दूत । ¶ हिम्मत । ** अच्छे । †† हुनर, गुन । ‡‡ स्वर्ग।

साफ साहब सोँ रफत पाक सब पावई ।
कहै गुलाल फकीर खूब घर छावई ॥

(१५)

ब्रह्म भयो जब पूर सूर सर* लावई ।
बाजै अनहद घंट निसान समावई ॥
भरो पदारथ नाम परखि अघा जावई ।
अहै गुलाल प्रभु हेतु सोई नर पावई ॥

(१६)

आपु करहु नर साफ साहब सत भावई ।
निसु बासर करि प्रेम राम गुन गावई ॥
जोग जुगत सोँ नेह सो परखि समावई ।
कह गुलाल मन जीति निसान बजावई ॥

(१७)

अर्ध उर्ध के। खेल कोऊ नर पावई ।
चाँद सूर को बाँधि गगन ले जावई ॥
इँगल पिँगल दोउ बाँधि सहज सब आवई ।
कह गुलाल हर रोज अनँद सब आवई ॥

(१८)

रहित भयो घर नारी तत मन थीरा ।
ब्रह्म भयो सब जीव गयो सब पीरा ॥
निसु दिनि लायो ध्यान भरत मनि हीरा ।
कहै गलाल सोई सत अनँद फकीरा ॥

(१९)

अजर अमर पुर देस संत रन साजिया ।
मन पवना होउ साज नौबसि धुनि बाजिया ॥
द्वादस चढ़ि मैदान जुद्ध तब लाइया ।
कह गुलाल मन सूरत पर चढ़ि गाजिया ॥

(२०)

राम रहे घर माहिं ताहि नहिं मानई ।
पूजहि पत्थल भीखि भया मन सानई ॥
झूठ रहस हरि हाल करम बहु ठानई ।
कहै गुलाल जड़ भूल आपु नहिं मानई ॥

(२१)

सुन्न सहर आजूब* सहज धुनि लागई ।
इँगल पिँगल को खेल अमी तब पागई ॥
पुलकि पुलकि करि प्रेम अनँद छबि छाजई ।
कह गुलाल कोइ संत ताहि पंथ लागई ।

(२२)

इसिक अली† सौँ साफ अदल सोइ पाइया ।
रोज रहै मुसताक सकूनत‡ आइया ॥
क्यौँकर बूझै आपु सभै नर रोइया ।
कहै गुलाल फकीर सत्त जिन जोइया§ ॥

(२३)

तीरथ दान को आस अंध नर धावई ।
राम न चीन्हत साँच सो जन्म गँवावई ॥

---

* अचरजी । † मालिक । ‡ ठिकाना । § खोज लिया ।

तिरगुन गुन महँ डोलत सबै नचावई ।
कह गुलाल नर भरमि भरमि जहँड़ावई* ॥

(२५)

झिलिमिलि झलकत नूर नैन पर नूरा ।
हर दम होत अघोर बजत तहँ तूरा ॥
रबि ससि दूनौं संग रखत पूजत पूरा ।
कह गुलाल आनँद गति बोलत सूरा ॥

(२५)

निर्मल हरि को नाम ताहि नहिं मानहीं ।
भर्मत फिरैं सब ठावँ कपट मन ठानहीं ॥
सूझत नाहीं अंध ढूँढ़त जग सानहीं† ।
कह गुलाल नर मूढ़ साँच नहिं जानहीं ॥

(२६)

माया मोह के साथ सदा नर सोइया ।
आखिर खाक निदान सत्त नहिं जोइया ॥
बिना नाम नहिं मुक्ति अंध सब खोइया ।
कह गुलाल सत, लोग गाफिल सब रोइया ॥

(२७)

दुनिया बिच हैरान जात नर धावई ।
चीन्हत नाहीं नाम भरम मन लावई ॥
सब दोषन लिये संग सो करम सतावई ।
कह गुलाल अवधूत दगा‡ सब खावई ॥

---

* ठगाते हैं। † घमंड में। ‡ धोका।

(२८)

साहब दायम* प्रगट ताहि नहिं मानई ।
हर दम करहिं कुकर्म सर्म मन ठानई ॥
झूठ करहिं ब्योहार सत्त नहिं जानई ।
कह गुलाल नर मूढ़ हक्क नहिं मानई ॥

(२९)

याही कहन हमारि जो कोउ मानई ।
तातें सदा हजूर सही जो ठानई ॥
रहै सदा निरसंक काल नहिं जानई ।
कहै गुलाल फकीर माया नहिं मानई ॥

(३०)

गर्व भुलो नर आय सुकृत नहिं साँइया ।
बहुत करत संताप राम नहिं गाइया ॥
पूजहिं पत्थल पानि जनम उन खोइया ।
कह गुलाल नर मूढ़ सभै मिलि रोइया ॥

(३१)

सुंदर साहब मानि के नेह लगावई ।
अर्ध उर्ध को खेल उलटि के धावई ॥
निरगुन तेल बराय सो जोति जगावई ।
कह गुलाल सत लोक तुरत नर पावई ॥

(३२)

भजन करो जिय जानि के प्रेम लगाइया ।
हर दम हरि सौं प्रीति सिदक सच पाइया ॥

---

* सदा । † सत्य ।

बहुतक लोग हैवान सुझत नहिं साँइया ।
कह गुलाल सठ लोग जन्म जहँड़ाइया ॥

(३३)

एक करो नर साँच ताहि गुन गाइया ।
आठ पहर लव लाइ अनत नहिं जाइया ॥
लोक वेद की फाँसी सबहिं कटाइया ।
कह गुलाल हरि हेत का तुम बौराइया ॥

(३४)

राम भजहु लव लाइ प्रेम पद पाइया ।
सफल मनोरथ होय सत्त गुन गाइया ॥
संत साध सौं नेह न काहु सताइया ।
कह गुलाल हरि नाम तबहिं नर पाइया ॥

(३५)

झूँठि लगन नर ख्याल सबै कोइ धाइया ।
हर दम माया सौं रीति सत्त नहिं आइया ॥
बहत फिरत हर रोज काल धरि खाइया ।
कह गुलाल नर अंध धोख लपटाइया ॥

(३६)

ऐसो बचन हमार रुत्त जो मानिया ।
चेत करहु नर आपु वृथा सब जानिया ॥
लोभ लहरि संबूह* ताहि सँग सानिया ।
कह गुलाल नर अंध धुंध मन आनिया ॥

---

*झुंड ।

(३७)

दखि सखि फूलौं आँखि के सुरति लगाइया ।
अजपा जपै सुजाप सोहं डोरि लाइया ॥
लगन लगो निरंकार सुरति सँग पाइया ।
कहै गुलाल अतीथ सत्त गुन गाइया ॥

(३८)

यह संसार अयान आपु नहिं जानई ।
तुरत होत विज्ञान खबरि नहिं मानई ॥
लोभ भरो हर रोज राम नहिं जानई ।
कहै गुलाल जम हाथे सबै बिकानई ॥

(३९)

सीतल साहब नाम पियत नहिं कोई ।
निसु दिन माया सौं हेतु पलक महँ रोई ॥
दिन दिन गाफिल होइ काहु नहिं जोई ।
कह गुलाल हरि हेतु गाफिल नर सोई ॥

(४०)

सुखमन सुंदर राज करत नहिं प्रानी ।
भटकत फिरै संसार साँच नहिं आनी ॥
मरि मरि रह हर हाल झूँठ सँग सानी ।
कह गुलाल सत ज्ञान आपु पहिचानी ॥

(४१)

उदित भयो जब ज्ञान कर्म मन नासई ।
भरो पदारथ नाम अचल पद पावई ॥

दिन दिन पूरन सोई संत महँ भावई ।
कह गुलाल हरि हेतु कोई नर पावई ॥

(४२)

दोजख दुनिया भोग सबै नर सोइया ।
पाँच पचीस के फेर फिरत मति खोइया ॥
भटकि मरत संसार राम नहिं जोइयो ।
कहै गुलाल सत्त बिन सब नर रोइया ॥

(४३)

आसिक इस्क लगाय साहब सौं रीझई ।
हरदम रहि मुस्ताक प्रेम रस पीजई ॥
बिमल बिमल गुन गाय सहज रस भीजई ।
कह गुलाल सोइ यार सुरति सौं जोवई ॥

(४४)

जगर मगर* को खेल कोऊ नर पावई ।
लोक बेद को फेर जो सबै नचावई ॥
रूह जगै हर हाल सत्त सोइ पावई ।
कह गुलाल ब्रह्म ज्ञान कोऊ दरसावई ॥

(४५)

जालिम जबर संसार बचन नहिं मानिया ।
बहुत करतु है ज्ञान आपु नहिं जानिया ॥
तिरगुन गुन को संगम ज्ञान नसानिया ।
कह गुलाल नर अंध नेकु नहिं मानिया ॥

---

* जगमग ।

कहा भयो दर हाल* पाक न लखावई।
कह गुलाल हर रोज साफियत आवई॥

(५५)

किसिम† कर्म को घर्म सबै नर धावई।
भटकि मुआ संसार कछू नहिं आवई॥
जोग जुगत नहिं नेह गाफिल गँवावई।
कह गुलाल हर रोज कहा जहँड़ावई॥

(५६)

इसिक करहु नर ताहि जाहि मन लाइया।
हर दम पाक मशीन सो ताहि समाइया॥
बहुरि नहीं अवसार न कर्म खसाइया।
कह गुलाल प्रभु हेतु सोई नर पाइया॥

(५७)

पूरन ब्रह्म निहारि के सुरति लगावई।
अजपा जपै हर हाल जुगत मन लावई॥
घटत बढ़त नहिं कबहिं परम पद पावई।
कह गुलाल मन जीति निसान बजावई॥

(५८)

इसिम‡ अलिफ§ लगाइ नूर ठहराइया।
पाँच पचीस को बाँधि उलटि के धाइया॥
हर दम प्रभु सोँ नेह कहूं नहिं जाइया।
कह गुलाल अतीथ ज्ञान सिन पाइया॥

---

* अभी। † तरह तरह के। ‡ नाम। § सीधा।

(५६)

ज्ञान करो मन बाँधि के लगन लगाइया ।
निरखि रहो तहँ नाम तत्त ठहराइया ॥
जुग जुग अचल अपार परम पद पाइया ।
कह गुलाल सम दृष्टि तबहिं नर आइया ॥

(६०)

केवल प्रभु को जानि के इलिम लखाइया ।
पार होइ तब जीव काल नहिं खाइया ॥
नेम करहु नर आप दोजख नहिं धाइया ।
कह गुलाल मन पाक तबहिं नर पाइया ॥

(६१)

भ्रम भूलो नर ज्ञान राम नहिं जानिया ।
बहुत करतु है ज्ञान साँच नहिं मानिया ॥
झूठ दसा ब्योहार कपट बहु ठानिया ।
कह गुलाल नर मूढ़ सबै गति हानिया ॥

(६२)

अष्ट कँवल फूलाइ निरंतर धावई ।
सुखमन सेज बिछाइ के मन पवढ़ावई* ॥
जोग जुगत सौं नेह अनँद सब आवई ।
कहै गुलाल फकीर नाम तब पावई ॥

(६३)

यह संसार अयाना† आपु नहिं जानई ।
तुरत होय बिज्ञान खबरि नहिं आनई ॥

---

* सुलाना । † नादान ।

लोभ लहरि हर रोज नाश नहिं आनई ।
कह गुलाल जम हाथे सबै बिकानई ॥

बारह मासी हिँडोला

॥ चौपाई ॥

हिंडोला आशा प्रभु पद लाई । यहि जग निष्फल जाई ॥१॥

॥ दोहा ॥

कर्म धर्म बनो नाव जक्त चढ़ि धावई ।
अवघट घाट कुघाट ये थिर नहिं आवई ॥ २ ॥

॥ छंद ॥

मास असाढ़ अघोर उपजो जनम सो बनि आइया ।
चित्त चंचल भयो दामिनि छिनक छिनक छिपाइया ॥३
तृस्ना तेज जो पवन परबस जहाँ तहाँ झरि लाइया ।
कामादि मोर जो बोल पल पल तेज सो घहराइया ॥४॥

॥ दोहा ॥

सहज सुरति जो होय ज्ञान सोइ पावई ।
छिन छिन जिव उनुराग सो प्रेम लगावई ॥५॥

॥ छंद ॥

मास सावन भयो चहुं दिसि नवो द्वारे धाइया ।
सो करो कृषि* प्रीति प्रभु सोँ जाय गुरु सरनाइया ॥६॥
यह मन बिचारो भर्म टारो दुंद सकल बहाइया ।
प्रेम पूरन ज्ञान उपज्यो सुरति निरति समाइया ॥७॥

---

* खेती ।

॥ दोहा ॥

भरि भरि मोह अपार, समूह जगावई ।
रैन दिवस घहराय, तो थिर नहिं आवई ॥ ८ ॥

॥ छंद ॥

भादों जो भर्म भयावनो यह कर्म फंद लगाइया ।
ऊँच नीचे जाय डूबत आपु कौन बचाइया ॥ ९ ॥
दुबिधा जो धोख समूह धारा करत कर्म लजाइया ।
आपु खबरै भूल सब छिन तातें झटका खाइया ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

जग जंजाल भुलाय, झटका सब जावई ।
नहिं चीन्हत प्रभु नाम, देसांतर धावई ॥ ११ ॥

॥ छंद ॥

कुवार समय बितीत भो जब काल जाल लगाइया ।
यहि भाँति समय सिरान मूढ़हु कौन तुम्हहिं बचाइया ॥१२॥
कह गुलाल कृपाल प्रभु बिनु झूठि रैन गँवाइया ।
यहि भाँति बारो मास बीतो आपु आप भुलाइया ॥१३॥

हिंडोला

(१)

हिंडोला करु आनँद मंगलचार ॥ टेक ॥
प्रथम सुकिरिति* नाम धरि के प्रेम पद हिये लाय ।
सतगुरु सब्द जे पूर दीन्हौं सोक सबै नसाय ॥ १ ॥

---

* सुकृति ।

पाँच तीन पचीस त्यागो चौथ पद पर जाय ।
तहँ उठत लहरि अनंत बानी सखी देत झुलाय ॥ २ ॥
चाँद सूरज खंभ गाड़ो सुरति डोरि लगाय ।
मूल चक्र बिचारि बाँधो सुक्ष्म नग्न समाय ॥ ३ ॥
प्रेम पटरी बैठि के झूलो गगन में आय ।
हारि हारि मन हारि बैठो अवर कहिँ नहिँ जाय ॥४॥
तहँ ज्ञान ध्यान न नेम पूजा अगम घर ठहराय ।
तहँ उठत जोति जो प्रेम भरि भरि लपट चहुँ दिसि धाय ॥५॥
काम क्रोध जो मोह त्यागो जीव रहो समाय ।
संत सभा में जाय बैठो बहुरि इतहिँ न आय ॥ ६ ॥
दसौ दिसि में फूल फूलो जोति जगमग पाय ।
सत्त रूप सरूप सोभा मो पै बरनि न जाय ॥ ७ ॥
प्रेम प्रीति सों रीति करिके रहो चरन समाय ।
कह गुलाल जो सरन आयो छोड़ि सबै बलाय ॥ ८ ॥

(२)

हिंडोला झूलत गुरुमुख आज ॥ टेक ॥

चंद सूरज खंभ रोप्यो सुरति डोरि लगाय ।
मंद मंद जो पवढ़* गगनहिँ रह्यो जाय समाय ॥ १ ॥
तहँ होत अनहद नाद धुनि सुनि सहज चित्त लगाय ।
बिगसि कँवल अनंत सोभा भँवर रहे लोभाय ॥ २ ॥
अरध ऊरध उलटि चाल्यो सुखमना ठहराय ।
गंग जमुना सरसुती मिलि पदुम दरसन पाय ॥ ३ ॥

---

* झूलना ।

सुन्न सिखर समाधि बैठ्यो जोग जुगत उपाय ।
डारि तन मन चढ़्यो सिर दै जोति लहरि नहाय ॥ ४ ॥
अति अथाह अपार देख्यो नैन नाहिं समाय ।
पाँचो पचीसो तीनि त्याग्यो आनि निर्गुन गाय ॥ ५ ॥
आदि अंत अरु मध्य त्याग्यो अगम गति जो आय ।
चौथे पद पर बैठ जोगी मौज ढोल बजाय ॥ ६ ॥
जग्यो प्रेम जो नेम चरनन साध संगति पाय ।
त्यागि कर्म संताप तन को पाप दियो बहाय ॥ ७ ॥
मारि ममता मन विचार्यो हंस रूप कहाय ।
कह गुलाल फकीर पूरा जो यह रहनि सें आय ॥ ८ ॥

(३)

सब्द कै परल हिँडोलवा हो झूलब ताहि अधार ।
झुलत झुलत सुख उपजै हो उठै सहज झनकार ॥१॥
हिँडोलवा गुरुमुख झूलब झुलत झुलत जाइ पार ।
गावहिं पाँच सोहागिनि हो छूटल झुलब हमार ॥२॥
आनँद कै झुलब हिँडोलवा हो तिहुँ पुर मंगलचार ।
पिय के सँग हम झूलब हो निस्चै प्रिय करतार ॥ ३ ॥
निरखत निरख न आवै हो बरनत बरनि न जाय ।
जो यहि झुलहिँ हिँडोलवा हो चरनन चित लाय ॥४॥
कह गुलाल हम झूलब हो सतगुरु के परताप ।
चरन कमल मन रातल हो तहवाँ पुन्न न पाप ॥५॥

(४)

निर्गुन झुलब हिँडोलवा हो, सत्त सब्द लगि डोर ।
सिव सक्ती मिलि झूलहिँ हो, झुलब झकोरि झकोरि ॥१॥

मूल में खँभवा गड़ावल हो, पौढ़ूयो दस द्वार।
मन मानिक करै सहवाँ हो, भीतर बाहर उँजियार ॥२॥
सुखमन राग भरावहिं हो, सहज उठे झनकार।
धुनि सुनि हंसा रातल हो, बिगसि कमल कचनार ॥३॥
मिटलि कामना मन के हो, सब छूटल संसार।
अचल अमर घर पावल हो, फिर नहिं औतार ॥४॥
संतन मिलि सहँ फूलहिं हो, अपनी अपनी बार।
कह गुलाल हम झूलब हो, क्या झूलहि संसार ॥ ५ ॥

(५)

सत्त सब्द इक पुरुष हो, सुरति निरति लगि डोरि।
मन मौज करि बैसब* हो, झुलब बहोरि बहोरि ॥ १ ॥
गावहु सखिया सहेलरि हो, आनँद मँगलचार।
चकवा सब्द सुनि ब्याकुल हो, झरत है अमर अधार ॥२॥
छेक्यो नगर नोहुरिया हो, पाँच पचीस घर मारि।
तीन देव लै बाँधल हो, अब के करिहै गोहारि ॥ ३ ॥
जीति कायापुर जोगी हो, जम कर नाता तोरि।
जन गुलाल सत बोलहि हो, घर आयल मन मोर ॥४॥

(६)

हिँडोला अगम झूल झुलाय, झुलत अगमहिँ पाय ॥टेक॥
सुन्न सहर में फूल फूल्यो, अनँद मंगल गाय।
चित्त चंचल पगो चरनन, अनत कहिँ नहिँ जाय ॥ १ ॥
नाम लज्जत† पुलकि लेवे, सोक मोह नसाय।
झुलत झूलत मन बिरागी, ज्ञान घूँघट नाय‡ ॥ २ ॥

* बैठेंगे। † स्वाद। ‡ डालना।

झुलो जो सहजहि हिँडोलना, बिनु झुले झूल झुलाय।
जगर मगर हिँडोलना, झन झनक झनकत जाय ॥ ३ ॥
चरन सरन बिलोकि झूले, प्रीति सोँ लपटाय।
अब कि बेर बिचारि झूले, मूल मंत्र जो पाय ॥ ४ ॥
अचल अगम हिँडोलना, झूलो जो सत्त लगाय।
सतगुरु सब्द अपार दीन्हो, ब्रह्म भेद लखाय ॥ ५ ॥
झुलत झूलत प्रान पति भो, मौज झूल झुलाय।
झुले कोई संत पूरा, आपु खेल बनाय ॥ ६ ॥
अनंत कला हिँडोलना, अब थको झूलि न जाय।
आवा गवन न होय कबहीँ, तहाँ जाइ समाय ॥ ७ ॥
कह गुलाल हिँडोलना, झूलो जो रूप बनाय।
नाम रँग जो रंग लागो, डंक* देत बजाय ॥ ८ ॥

(७)

हिँडोल झूलहु रामे राम ॥ टेक ॥
ध्यान धरु गुरु चरन गहिके, नाम लउजत आय।
काम क्रोध को पकरि बाँधो, त्रिबिधि ताप बहाय ॥१॥
झूलै जो यह ज्ञान हिँडोलना, सत्त सब्द समाय।
अगम नीगम झूलहीँ मिलि, अनहद डंक बजाय ॥ २ ॥
जोति परचों† बरै तहवाँ, सहज खेल बनाय।
सिव सक्ती सोँ नेह लागो, सुख हिँडोलना पाय ॥ ३ ॥
अचल अस्थिर भयो जुग जुग, चित कहीँ नहिँ जाय।
झूलै कलोल हिँडोलना, सतसँग संग लगाय ॥ ४ ॥

---

* डंका। † प्रचंड।

आवा गवन न होय कबहीं, अचल घर पर जाय ।
झूलै जो सुखद हिँडोलना, मनसूक्ष सूधा पाय ॥ ५ ॥
नाम पटरी बैठि कै, पैठो अगम में जाय ।
सुखमन सुरख हिँडोलन, झुलत पार झुलाय ॥ ६ ॥
हद्द छोड़ बेहद्द बैठो, ब्रह ब्रह्महिँ जाय ।
लोक लज्जा दूरि डारो, आपु आपु समाय ॥ ७ ॥
जाति पाँति न कर्म सहवाँ, एक ब्रह्महिँ पाय ॥
कह गुलाल हिँडोलना, झूलो जो मंगल गाय ॥ ८ ॥

(८)

हिँडोलना कर्म झुलावनहार ॥ टेक ॥

पाँच तीन पचीस धावहिँ, नेकु नहिँ ठहराय ।
पाप पुन्न को बीज लैके, बोवहिँ खेत बनाय ॥ १ ॥
जनम उत्तम पाय के रे, माया परल भुलाय ।
राम नाम न जानु भौंदू, चल्यो मूल गँवाय ॥ २ ॥
भूमि पानि अकास झूलहिँ, झुलहिँ सूर फनिंद* ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस झूलहिँ, झुलहिँ मारुत† चंद ॥ ३ ॥
तैंतीस कोटि जो देव झूलहिँ, मोह में लपटाय ।
वज्र बाँध को बाँध बाँध्यो, सबै बाँधि नचाय ॥ ४ ॥
जोगी जती जो सिद्ध झूलहिँ, भेख रच्यो बनाय ।
झूलहिँ जो नारद आदि मुनिवर, पार काहु न पाय ॥ ५ ॥

---

* शेषनाग । † पवन, हवा ।

साबित्रि लछमी गौरि झूलहिं, दसहु दिस में छाय ।
हंस बिषमा गरुड़ झूलहिं थीर कबहुँ न जाय ॥ ६ ॥
अरघ ऊरघ मध्य धारा झुलो त्रिकुटी जाय ।
गगन मद्धे सुरति माँडो जोति देहु जगाय ॥ ७ ॥
झुला झूलि न जाय प्रभुजी अब न मोहिं झुलाय ।
जन गुलाल सो सरन आयो राखु चरन लगाय ॥ ८ ॥

(९)

सत्त हिँडोलवा सतगुरु नावल तहवाँ मनुवा
झुलत हमार ॥ टेक ॥
बिनु डोरी बिनु खंभे पवढ़ल, आठ पहर झनकार ॥ १ ॥
गावहु सखियाँ हिँडोलवा हो, अनुभौ मंगलचार ॥ २ ॥
अब नहिं अवना जवना हो, प्रेम पदारथ भइल निनार ॥३॥
छुटल जगत कर झुलना हो, दास गुलाल मिलो है यार ॥४॥

(१०)

प्रेम प्रीति रत झूलब हो, सुरति कै डोर लगाय ।
प्रेम प्रीति मन रातल हो, हमरो भरल भताय* ॥ १ ॥
पाँच पचीच तिन† बाँधल हो, सखियाँ संग लगाय ।
हम धनि पिय कि सोहागनि हो, मरिहै हमरि बलाय ॥२॥
अघर महल पर झूलब हो, फूलल कँवल हमार ।
सत्त सब्द गुन गावल हो, करो मंगलचार ॥ ३ ॥
झूलब निर्गुन हिँडोलवा हो, जग से नाता तोरि ।
कह गुलाल हम झूलब हो, पिय सँग दै गठिजोरि ॥४॥

---

* पति याती मन । † तीन ।

बारह मासा

(१)

बारह मासा जो ठहराई, जन्म सुफल सब जानो भाई ॥१॥

॥ असाढ़ ॥

मास असाढ़ जो आइया, सब जिय आसा लाय।
प्रभु चरनन चित लागेऊ, इत उत नाहिन जाय ॥ २ ॥

छंद

पुरवा जो पवन झकोर ऊठि, बादर चहूँ दिस छाइया।
गरजि गगन अनंत धुनि छबि, नाम सौं लपटाइया ॥३॥
लपटाइ रहु रे नाम सौं, आनंद कहि नहिं जाइया।
प्रेम प्रापत भयो तबहीं, आपु आपु बनाइया ॥ ४ ॥

॥ सावन ॥

सावन स्वास न मानई, गहि गहि रोकत जाय।
पिय के उदेस* न पायो, कैसे क जिय ठहराय ॥ ५ ॥

छंद

सुन्न में झनकार झन झन, मोति हूं झरि लाइया।
धनि भाग बिरहिन तासु जीवन, जासु प्रभु गृह आइया ॥६॥
जासु प्रभु गृह आइया, सब अनँद मंगल गाइया।
उठत निर्मल बानि निर्गुन, अभय डंक बजाइया ॥ ७ ॥

---

* संदेस, ख़बर।

॥ भादों ॥

भादौं भरम नसावई, ज्ञान कै सूरति लाय ।
चहुँ दिसि दमकै दामिनी, चित चक्रित ह्वै जाय ॥ ८ ॥

छंद

सुखमन सेज सँवारि बहु बिधि, अगम रंग लगाइया ।
प्रेम यौं पवढ़ाइ प्रभु को, भाव अंकम* लाइया ॥ ९ ॥
भाव अंकम लाइया, सक कर्म सब जरि जाइया ।
अकल कला को खेल बनिया, अनंत रूप दिखाइया ॥१०॥

॥ क्वार ॥

क्वार पूरन करमना, समय सोहावन भाय† ।
कहिं जल थाह अथाह है, निर्मल बरनि न जाय ॥ ११ ॥

छंद

ब्रह्म पूर प्रकास चहुँ दिसि, उदित चंद सोहाइया ।
एक नाम सौं रंग लागो, मगन माधो‡ भाइया ॥ १२ ॥
तत्त मद्धे तत्त मेल्यो§ , आवागवन नसाइया ।
मृग तृसना को नीर जैसे, भटकि भटकि लजाइया ॥१३॥

॥ कातिक ॥

कातिक कर्म प्रापति भयो, जो जा को जस भाय ।
अपनो अपनो अंस जस, सो तस बीज मेराय ॥ १४ ॥

छंद

यहि दिवस दस रँग कुसुम है, पुनि अंत ना ठहराइया ।
नहिं प्रीति प्रानी करत प्रभु सौं, सिर धुने पछताइया ॥१५॥

---

* अंक में, गोद में। † भाना, पसंद आना। ‡ मन। § मिलाया।

सिर धुने पछताइया, तब हृदय ज्ञान भुलाइया ।
मरकट* मुठी धारी भरम ज्यों, आपु आपु बँधाइया ॥१६॥

॥ अगहन ॥

अगहन मास सोभित भयो, जीव जंतु सुख पाय ।
ऐसो जगत जहान जहँ, घर दारा लपटाय ॥१७॥

छंद

तू चेत करु नर बावरे, आया कहाँ कहँ जाइया ।
यह काल कठिन कराल है, धरि सास भोरे खाइया ॥१८॥
सास भोरे खाइया धरि, तबहि सुद्धि भुलाइया ।
मृग तृस्ना को नीर जैसे, भरमि भटकि लजाइया ॥१९॥

॥ पूस ॥

पूस मास तुसार† आयो, कंपि जाइ जनाइया ।
घर नाम साथ समीप‡ नाहीं, पाल§ बहुत सताइया ॥२०

छंद

ज्ञान अगिन उदगारि तापो, कर्म सबहिं जराइया ।
इक जानि प्रभु को नाम लेवे, जाइ निकट न आइया ॥२१॥
जाइ निकट न आइया, सब लवै सुख जिय भाइया ।
मनहिं मन में बिचार आयो, मूल सो ठहराइया ॥२२॥

॥ माघ ॥

माघ जो मदन बसंत, मनहिं तिरास जनावई ।
उनमद‖ मातल लोग, सबहीं धोखा पावई ॥२३॥

---

* बंदर । † ठंढ । ‡ पास । § पाला । ‖ मस्त ।

छंद

माया मोह समूह सागर, डुबत थाह न आइया ।
हरि चेत नाहिं अचेत प्रानी, भरम गोता खाइया ॥२४॥
भरम गोता खाइया जब, तबहिं मती हेराइया ।
भयो बिहवल जबहिं प्रानी, सोक मोह लगाइया ॥२५॥

॥ फागुन ॥

फागुन फूल हुलास, न आनँद भावई ।
घर घर गावहिं लोग, सिरास जनावई ॥ २६ ॥

छंद

प्रान-पति बिनु कैसे जीवौं, ऐसो होरी जाइया ।
इक नाम सों नहिं संग बनिया, वृथा सम्मत* लाइया ॥२७॥
वृथा सम्मत लाइया, सब ऐसही दिन जाइया ।
अब कहा पछतात हो, तुम कहै कवन बुझाइया ॥२८॥

॥ चैत ॥

चैत में बनराय फूलो, सुभग सोभा छाइया ।
ऊँच नीच सब उद्र पूरन, जा को जैसो आइया २९

छंद

त्रिगुन ताप संताप है नर, चेत काहे न लाइया ।
जिन जुक्ति जल तैं तन सँवाऱ्यो, ताहि क्यौं बिसराइया ३०
ताहि क्यौं बिसराइया नर, आस लै लै धाइया ।
भूलि गे सब बात तबकी, कर्म माखी खाइया ॥३१॥

---

* सन।

॥ बैसाख ॥

बैसाख कर्म बिचार बिनु, नर झूँठ तौल जोखाइया* ।
बृथा माया मन भुलाया, धूर में लपटाइया ॥३२॥

छंद

जंजाल जाल को फाँद फाँद्यो, कठिन बाँध बँधाइया ।
बँध-छोर बंधन होय तब, जब नाथ करहिं सहाइया ॥३३॥
नाथ करहिं सहाइया, तब मैल सबहिं बहाइया ।
कवि कोटि चंद उदय कियो है रूप बरनि न जाइया ॥३४

॥ जेठ ॥

जेठ छाया ज्ञान रूपी, संत मन ठहराइया ।
जिन अगम निगम बिचार कीन्हो, तत्त ब्रह्म समाइया ॥३५

छंद

कह गुलाल अपार स्वामी, गुरु कृपा घर आइया ।
धन भाग जीवन भक्त को, जिन परम पद यह पाइया ३६
परम पद यह पाइया, तब सहज घर ठहराइया ।
भयो अबिचल अभय ज्ञानी, समुंद लहरि समाइया ॥३७॥

बसंत

(१)

आनँद बसंत मन करु धमारि । मगन भई तहँ पाँच नारि ॥ टेक ॥

---

* वज़न कराया ।

शब्द सोहावन ऋतु बसंत। हरि को नाम लिये खेलत संत ॥१॥
दसो दिसा में फूले फूल। ऋतु बसंत को इहै मूल ॥२॥
अष्ट जाम तहँ उठै गुँजार। रुनझुन बाजै भव के पार ॥३॥
आवै न जाय है रहत थीर। खेलत कोऊ प्रभु फकीर ॥४॥
लोक वेद कै छुटलि आस। साध सँगति महँ लियो
बास ॥ ५ ॥
कह गुलाल यह जाने कोय। आवा गवन न कबहिं होय ॥६॥

(२)

सुलभ बसंत नर नाम जान। यहि सिवाय मत झूठ आन ॥१॥
कोउ जल किरिया करे तन सताय। कोउ नेती धोती प्रीति
लाय ॥ २ ॥
कोउ बैठि गुफा में धरत ध्यान। कोउ भूलि भटकि पूजत
पषान ॥ ३ ॥
कोउ कर्म धर्म करे बिधि बिधान। कोउ सुरभि* सहस्र दे
बिप्र दान ॥ ४ ॥
कोउ तीरथ ब्रत में जाइ न्हाय। कारन आसा जन्म जाय ॥५॥
कोउ नागा दूधा-धारि होय। बन खँड बसि गृह कबौं
न जोय† ॥ ६ ॥
कोउ जंत्र मंत्र करि जग भुलाय। कोउ मन महँ माया
हेतु लाय ॥ ७ ॥
यहि सिवाय जो जाने आन। जम सिर मारै दै निसान ॥८॥
कह गुलाल यह हरित ज्ञान। राम नाम सो सत्त जान ॥९॥

---

* गाय। †, ढूँढना।

(३)

उपजी बसंत हरि भजन ज्ञान । पुलकि पुलकि मन ऋतु समान ॥ १ ॥
गुरु के बचन जब कठो लाग । प्रेम पदारथ फूल्यो भाग ॥२॥
चित चेरा है करु हुलास । बैठु निरंतर अगम बास ॥३॥
दसौ दिसा में उठै सोर । पंच सखि गावैं अति झकोर ॥४॥
गगन मँडल में लागु रंग । खेलत हुलसत प्रभु के सँग ॥५॥
यह सुख प्रापत जेकरे* होय । कारन तेहि कछु रहै न कोय ॥६॥
कह गुलाल यह जाने जोय । ता का आवागवन न होय ॥७॥

(४)

खेलत बसंत मन मगन मोर । उमँगि उमँगि चित प्रभु की ओर ॥ १ ॥
आतम फूल्यो भयो भोर । ऋतु बसंत मिलो मनुवाँ चोर ॥२॥
तिहुं पुर महँ भयो सोर । दसौ दिसा हरि हरि हिलोर ॥३॥
बिमल बिमल गावैं सुर राग । ऊठत बानी गति अनुराग ॥ ४ ॥
आनँद मंगल मोर न तोर । निरखि सैन छबि नैन कोर ॥५॥
धन्य भाग अस मिले बसंत । आपहिं अपने खेलत संत ॥६॥
कह गुलाल नहिं भाग थोर । प्रान पिया सँग मिलल जोर ॥७॥

(५)

चेतहु क्यौं नहिं नर हरि बसंत । दिन दस धोते काल अंत ॥ १ ॥

---

* जिसको ।

धावत धूपत मन को फेर। करत कुमति नहिँ सुमति हेर ॥२॥
ठौर ठौर फिरते दिन जाय। भटकि भटकि भ्रम गोता
खाय ॥ ३ ॥
ऐसे समय न पैहो दाव। छोड़ो सब कछु लोक चाव ॥४॥
माया ठगनी ठगो ठगाय। मृग तृसना लालच लोभाय ॥५॥
साध सँगति निज इहै भेव। त्यागहु सबै जगत के देव ॥६॥
कह गुलाल यह गति बुझाय। फिर पछितैहो काल खाय ॥७॥

(६)

परसत बसंत मन मगन मोर। फूल्यो काया भयो भोर ॥१॥
दुनिया नेम धर्म करै आस। तजत नाम करि करम
बास ॥ २ ॥
दुख सुख मरन जिवन है पास। घटत बढ़त चौरासि
बास ॥ ३ ॥
ऐसे समय बहुरि न दाव। दीन होत काके पछिताव ॥४॥
साध सँगति नहिँ करत भाव। जन्म जात जस लोह साव ॥५॥
आपु न चीन्हत फिरत अज्ञान। जम सिर मारहिँ अंत
समान* ॥ ६ ॥
कह गुलाल का करौँ बयान। जग नहिँ मानत बड़
नदान ॥ ७ ॥

(७)

मल मन राजा खेलै बसंत। उठत सब्द हरि हरि अनंत ॥१॥
खेलै नारद औ सुकदेव। नवो जोगेस्वर जानि भेव ॥२॥

---

* समय।

प्रहलाद ध्रू खेले राखि काखि। अँबरिक खेले चक्र मानि ॥३॥
नामदेव खेले लइ करार। कबीर खेले उतरि पार ॥४॥
नानक खेले जुक्ति जानि। पीपा खेले भक्ति मानि ॥५॥
रयदास खेले डंक देइ। खेले मलूका अगम लेइ ॥६॥
चत्रभुज खेले कर्म धोय। तुलसी खेले सगुन जोय ॥७॥
यारी खेले सहज भाव। सतगुरु बुल्ला टरे न पाँव ॥८॥
सब संतन के चरन लाग। खेल गुलाल मेरो फल्यो भाग ॥९॥

(८)

मैं उपमा वर्नि करौँ गुरु राय। उठत सब्द रह्यो गगन छाय १
लहरि लहरि अति उठि झकोर। निरखि निरखि चित चन्द्र चकोर ॥२॥
निरझरि झरत बहत अकास। हंस सरोवर लेत बास।३॥
अगम अगोचर अति अथाह। वार पार नहिँ ठौर राह ॥४॥
जो जावै सो रहत थोर। नाम बसंत खेलत फकोर ॥५॥
यहि सिवाय जो जानै आन। जम सिर मारत दै निसान।६॥
कह गुलाल यह उत्तम ज्ञान। नाम भजन सो सच्च जान ॥७॥

(९)

आयो बसंत मन चकित मोर। ठौरठौर अति उठै झकोर ॥१॥
नाम कली जब लग्यो गात। झर्यो करम तब गिर्यो पात ॥२॥
गुरु के बचन जब फूल्यो फूल। फूल्यो फूल भँवर रस भूल ॥३॥
आदि अंत मध एक सूर*। दसौ दिस में बजत तूर ॥४॥
यह बसंत जो जाने कोय। आवा गवन कबहिँ न होय ॥५॥

---

* सुर।

संत सभा महँ बैठु जाय। सहज सुरति धरि काल* खाय ॥६॥
कह गुलाल मन भयो थीर। सोई फाजिल है फकीर ॥७॥

(१०)

मेरे ऋतु बसंत घर समय लागु। बाजत अनहद फाग
जागु ॥टेक॥
मन राजा तहँ रच्यो रंग। पाँच पचीस तिनों† लिये संग ॥१॥
खेलत खेल बहुबिधि बनाय। आनँद मंगल उठि बधाय ॥२॥
राम नाम सोँ बन्यो रीति। आठ पहर नहिँ टरत प्रीति ॥३॥
सुख सागर में बैठो जाय। निरखि निरखि गति रहो समाय
अगम अगोचर अलख राय। सिव ब्रह्मा जा को खोज न
पाय ॥५॥
कह गुलाल सो दिखे हजूर। को मानै यह बचन फूर‡॥६॥

(११)

जग्यो बसंत जा के उदित ज्ञान।
अवर सबै नर है हेवान§ ॥ टेक ॥
काम क्रोध दोउ संग जोर।
करि अँधियार न होत भोर ॥ १ ॥
टकटोरत दिन रैन जाय।
मोह महाबन पर्यो भुलाय ॥ २ ॥
माया परबल महत जान।
लोक बेद सब करत ध्यान ॥ ३ ॥

---

* काल को। † तीन। ‡ सच। § पशु।

काल अगिनि निस ग्रसत जाय।
कलिया कूलिनि चरत खाय ॥ ४ ॥
तासु न जानहु सत्त ज्ञान।
जातें छूटे जग को तान ॥ ५ ॥
कह गुलाल यह अचल आय।
फिर पछितैहौ जन्म जाय ॥ ६ ॥

(१२)

खेलत बसंत भयो अचल रंग।
ताल मृदंग डफ उठि तरंग ॥ १ ॥
काया नगरी मन बिस्राम।
उलटि गयो तहँ एक नाम ॥ २ ॥
आदि अंत नहिँ मध्य तीर।
झरत अघर तहँ भरत नीर ॥ ३ ॥
बिगसि कमल भयो उदय भोर।
थकित भयो मन गयो जोर ॥ ४ ॥
पाँच पचीस तिन* बाँधि मारि।
आनँद मंगल करु धमारि ॥ ५ ॥
धन्य भाग जाके बरत जोति।
हंस रूप है चुँगत मोति ॥ ६ ॥
कह गुलाल मेरी पुजलि आस।
चरन कमल तहँ लियो बास ॥ ७ ॥

---

* तीन।

(१३)

खेलत बसंत आनँद धमारि ।
सिव ब्रह्मा जहँ मिल मुरारि* ॥ १ ॥
उठत तरँग तहँ बरस जोत ।
बिमल बिमल धुन बानी होत ॥ २ ॥
तन मन वारि कै रहो समाइ ।
गंग जमुन मिलि सिखर† पाइ ॥ ३ ॥
फिरत फिरत तहँ करत कोड़‡ ।
बैठो भवन महँ थकित गोड़§ ॥ ४ ॥
गगन मँडल में लगि समाध ।
ससि औ सूरहिँ राखु बाँध ॥ ५ ॥
लहरि लहरि बहै जोति धार ।
थकित भयो मन मिलि हमार ॥ ६ ॥
कह गुलाल मेरि पुजलि आस ।
चरन कमल महँ लियो है बास ॥ ७ ॥

(१४)

मन मधुकर¶ खेलत बसंत ।
बाजत अनहद गति अनंत ॥ १ ॥
बिगसत कमल भयो गुँजार ।
जोति जगामग कर पसार ॥ २ ॥
निरखि निरखि जिय भयो अनंद ।
बाझल मन तब परल फंद ॥ ३ ॥

---

* बिस्नु । † चोटी । ‡ आनंद । § पाँव । ‖ दाहिनी बाँई स्वाँसा । ¶ भँवरा ।

लहरि लहरि बहै जोति धार।
चरन कमल मन मिलो हमार ॥ ४ ॥
आवै न जाइ मरै नहिँ जीव।
पुलकि पुलकि रस अमिय पीव ॥ ५ ॥
अगम अगोचर अलख नाथ।
देखत नैनन भयो सनाथ ॥ ६ ॥
कह गुलाल मोरी पुजलि आस।
जम जीत्यो भयो जोति बास ॥ ७ ॥

(१५)

चलु मोरे मनुवाँ हरि के धाम।
सदा सरूप तहँ उठत नाम ॥ टेक ॥
गोरखदत्त गये सुकदेव। तुलसी सूर भये जैदेव ॥१॥
नामदेव रैदास दास। वहँ दास कबीर के पुजलि आस ॥२॥
रामानँद वहँ किय निवास। धना सेन वहँ कृसन दास ॥३॥
चतुरभुज नानक संतन गनी। दास मलूका सहज धनी ॥४॥
यारो दास वहँ केसोदास। सतगुरु बुल्ला चरन पास ॥५॥
कह गुलाल का कहौं बनाय। संत चरन रज सिर समाय ॥६॥

॥ होली ॥

(१)

आरति आनँद मंगल-गायो सहज के फाग लगायो।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है गूँज दसो दिसि छायो ॥१॥
जागत जोति झलाझलि झलकत निरखत रूप लगायो।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि डारत तत्त अबीर उड़ायो ॥२॥

होरी होरी होत निरंतर सतगुरु खेल खिलायो ।
कह गुलाल स्वामी घर आये पुलकि पुलकि लपटायो ॥३॥

(२)

मेरे आनँद होरी आई री ॥ टेक ॥
आठ पहर धुनि लगी रहतु है,
कंटक काल पराई री ॥ १ ॥
बिमल बिमल सखियाँ गुन गावहिं,
रंग दसौ दिसि छाई री ॥ २ ॥
अनुभौ फाग परम लस लागो,
पायो प्रेम लोभाई री ॥ ३ ॥
लोक बेद के धोखा छूटलि,
लज्जा गइलि लजाई री ॥ ४ ॥
प्राननाथ से होड़ा* लागल,
ब्रह्म पदारथ पाई री ॥ ५ ॥
कह गुलाल स्वामी बर पावल,
सतगुरु बचन सहाई री ॥ ६ ॥

(३)

सतगुरु सँग होरी खेलो अनहद तूर बजाई ॥ टेक ॥
काया नगर में होरी खेलो प्रेम के परल धमारी ।
पाँच पचीस मिलि चाचरि गावहिं, प्रभु जी की बलिहारी ॥१॥
सहज के फाग पर्यो निस बासर, भरि छूटै पिचुकारी ।
नाद बिंदहीं गाँठि पर्यो जब, परलि परस्पर मारी ॥२॥

---

*होड़, बाज़ी ।

तारी दै दै भाँवरि नावहिँ, एक तेँ एक पियारो।
सत्त अबीर उड़ावत कर धरि, काहू कोउ न सँभारी ॥३॥
अब खेलो मन महा मगन है, तन मन सर्वस वारी।
कह गुलाल हम प्रभु सँग खेलत, छूटलि लाज हमारी ॥४॥

(४)

सतगुरु घर पर परलि धमारी,
होरिया मैं खेलौं गी ॥ टेक ॥
जूथ जूथ सखियाँ सब निकरीं,
परलि ज्ञान के मारी ॥ १ ॥
अपने पिय सँग होरी खेलौं,
लोग देत सब गारी ॥ २ ॥
अब खेलो मन महा मगन है,
छूटलि लाज हमारी ॥ ३ ॥
सत्त सुकृत सोँ होरी खेलो,
संतन को बलिहारी ॥ ४ ॥
कह गुलाल पिय होरी खेलो,
हम कुलवंती नारी ॥ ५ ॥

(५)

आरती ले चलो बनाई। फगुवा घर घर आनँद गाई ॥टेक॥
पाँच पचीस औ तीन सोहागिनि, गावहिँ प्रभु सोँ
चित लाई ॥ १ ॥
ऊँच नीच में आरति पूरन, दसो दिसा में छाई ॥ २ ॥
लोक बेद सब दान दियो है, गगन में आरति गाई ॥३॥

सुर नर नाग देव मुनि थाके । काहु न आरति पाई ॥४॥
संत साध महँ आरति पूरन । उनहीं आरति पाई ॥५॥
कह गुलाल हम होरी खेले । सतगुरु फाग खेलाई ॥६॥

(६)

कोउ गगन में होरी खेलै ।

पाँच पचीसो सखियाँ गावहिं, आनि दसौ दिसि मेलै ॥१॥
देत डंक अनुभौ निसु बासर, झूमि झूमि गति डोलै ।
प्रेम लसित पिचुकारी छूटत, तारी दै दै बोलै ॥ २ ॥
तत्त अबीर उड़त नभ छायो, ज्ञानहीन मति तोलै ।
थकित भयो पग मग न परत, ढिंग सुधि बिसरी
गयो बोलै ॥ ३ ॥
अब की बार फाग दीजे प्रभु, जान देवँ नहिँ तो लै* ।
कहै गुलाल कृपाल दयानिधि, नाम दान दै गेलै† ॥४॥

(७)

समय लगो हरि नाम हो, होरी आई ।

काया नगर में फाग बनायो, तिर बिधि रंग लगाई ॥१॥
पाँच सखी मिलि रस रचो है, अगम अबीर उड़ाई ।
सुखमन भरि पिचुकारी डारत, छिरकत प्रभुहिँ बनाई ॥२॥
दसो दिसा में चाचरि ऊठत, मारू प्रेम बजाई ।
लागी लगन टरत नहिँ टारी, सुधि बुधि सबहिँ भुलाई ॥३॥
लोक बेद न्योछावरि डारोँ, ममता मैल बहाई ।
कह गुलाल पिय साथ सोहागिनि, घरहीं होरी पाई ॥४॥

* तब तक । † गये ।

(८)

प्रेम नेम चाचरि रच्यो । पुलकि पुलकि प्रभु पास ॥टेक॥
चाँद सूर उलटे चले, उड़त अबीर अकास ॥ १ ॥
इँगल पिँगल खेलन लग्यो, सुखमन सहज निवास ॥ २ ॥
तिरवेनी फगुवा बन्यो । मानिक झरि चहुँ पास ॥ ३ ॥
कुंज कुंज निरती परयो, चंद्र बदन प्रभु पास ॥ ४ ॥
कह गुलाल आनँद भयो, पूजलि मन की आस ॥ ५ ॥

(९)

निसु बासर होरी खेलै हो, सहज सुन्न धुनि लाई ॥टेक॥
बिगसि कमल चाचरी रच्यो है, दुन्द उठ्यो नभ छाई ।
प्रेम भरी पिचुकारी छूटत, तत्त अबीर उड़ाई ॥ १ ॥
बिनु बाजे तहँ बाज उठतु है, आनँद नाहिँ समाई ।
कै बैराग सखी सब गावहिं, लज्जा जाल लजाई ॥ २ ॥
संतन मिलि तहँ होरी खेलो, नौबत डंक बजाई ।
फगुवा दान मिल्यो मन पूरन, जन गुलाल बलि जाई ॥३॥

(१०)

अलख पुरुष सँग खेलो होरी, गुरु नाम के डंक बजोरी ॥टेक॥
ब्रह्मा बिस्नु सिव खेल खेलावहिँ, सब्द के फाग रचो री ।
आसम नारि सखी लै गवनहिँ, सत्त के गाँठि दियो री ॥१
अगम अबीर उड़त दस हूं दिसि, प्रेम पिचुकारी भिँगो री ।
मनमोहन छबि रास रच्यो है, सुखमन निरत करो री ॥२
लागी लगन टरत नहिँ टारे, काहू कोउ न बुझोरी ।
कह गुलाल हम प्यारी पिया सँग, अनुभौ फाग बनो री॥३॥

(१२)

मन राजा खेलै होरी, अनुभव सत्त अखाड़े ॥ टेक ॥
अनहद घंटा बाजु रैन दिन, ता में सुरति परो री ॥ १ ॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहिं, सुरति सौं निरखि भरो री २
काया नगर में होरी खेलो, रवि ससि दोऊ बटोरी ॥ ३ ॥
सुखमन भरि पिचुकारी छूटत, निरझर अगम झरो री ४
जाग्यो फाग परम पद लाग्यो, सतगुरु बचन फरो री ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम होरी खेलल, प्रभु सौं दै गँठजोरी ॥ ६ ॥

(१३)

फागुन समय सोहावन हो, नर खेलहु अवसर जाय ॥ १ ॥
यह तन बालू मंदिर हो, नर धोखे माया लपटाय ॥ २ ॥
ज्यौं अँजुली जल घटत है हो, नेकु नहीं ठहराय ॥ ३ ॥
पाँच पचीस बड़ि दारुन हो, लूटहिं सहर बनाय ॥ ४ ॥
मनुवाँ जालिम जोर है हो, डाँड़ लेत गरुवाय* ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम बाँधल हो, खास है राम दोहाय ॥ ६ ॥

(१४)

प्रेम कै फरल मनोरवा† हो, दस दिस भयो प्रकास ॥ १ ॥
निस दिन नौबति बाजै हो, अनहद उठत अकास ॥ २ ॥
पाँच नारि गुन गावहिं हो, पुलकि पुलकि प्रभु पास ॥ ३ ॥
अधर महल घर बैठक हो, मेटल जम कै त्रास ॥ ४ ॥
नहिं आइब नहिं जाइब हो, चरन कमल में बास ॥ ५ ॥
कहै गुलाल मनोरवा हो, छोड़ि देव जग आस ॥ ६ ॥

---

* भारी डंड । † एक राग का नाम ।

(१५)

नाम रंग होली खेलो जाई, फिर पाछे पछिताई ॥ टेक ॥
यहि तन फागु भयो परमारथ, अवधि बदो* दिन ढाई १
काल अगिन जब मस्तक जरि है, छूटो सब चतुराई २
अगर गुलाल कुमकुमा केसरि, चेतन अबीर उड़ाई ३
इँगल पिँगल दोउ भरत उर्ध मुख, छिरकत प्रभुहिं बनाई ४
दुइ बिधि फाग बनो या जग में, जिन जैसो मन भाई ५
कह गुलाल यह अगम फागु है, बिन सतगुरु नहिं पाई ६

(१६)

अधर रँग फगुवा मन खेलो, रचि सखि तूनाँ सँग मेलो ॥टेक॥
मन बैराग चित्त चोर जे थैके, नेह निरंतर लाई ।
पाँच पचीस औ तीन सवासी, पकरि गगन ले जाई ॥१॥
सुन्न नगर में आसन मांड़ो, अद्भुत भेष बनाई ।
ब्रह्मा बिस्नु सीव तहँ नाहीं, फाग बरनि नहिं जाई ॥२॥
नादहिं बिंदहिं गाँठि परो है, ज्ञान कि जोति समाई ।
ऊठत लहरि अनंत राग तहँ, अनुभौ चाचरि गाई ॥३॥
आवागवन रहित जबहीं भयो, जम सिर डंक बजाई ।
कह गुलाल काल सब अइहै, मरिहै हमरी बलाई ॥४॥

(१७)

काया बन खेलहु मगन फाग । अधर महल घर रंग लाग ।१।
चित चंचल जब संग लाग। पाँच पचीस सोउ न जाग ॥२॥
सत सत लागल सहज आग। खेलत खेलत सब फरल भाग ३।

---

* मुक़र्रर।

सत्त लगल जब सोहं ताग । निरखत मनुआँ गतिहिं पाग ॥४॥
देख दमामा दुन्द भाग । तन नेवछावर देत फाग ॥५॥
एक अवर नहिँ सबहिँ त्याग। थकित भयल मन चरन लाग६
कह गुलाल यह अगम फाग । जम जीतल घर राज लाग ॥७॥

(१८)

होरी खुलि खेलो, प्रभु सौँ प्रीति लगाई ।
सब सखियन एकहि मत कीयो, फाग बरनि नहिँ जाई ॥१॥
काया नगर में होरी खेलो, ससि औ सूर समाई ।
प्रेम जड़ित पिचुकारी छूटत, नौबति दै दै गाई ॥ २ ॥
दसो दिसा चाचरि धुनि होवै, सत्त अबीर उड़ाई ।
इंगल पिँगल दोउ रास बनावहिँ, सो सुख बरनि न जाई ॥३
थकित भयो सुधि बुधि हरि लीन्हो, तन मन सबहिँ भुलाई।
कह गुलाल हम होरी खेल्यो, प्रभु सोँ गाँठि बँधाई ॥४॥

(१९)

कोउ आतम भक्ति ज्ञान जाने ।
तब सहज सुरत मनुवा माने ॥ टेक ॥
याही रीति प्रीति चरनन सौँ ।
खोजि सतगुरु पहिचाने ॥ १ ॥
सबही होय प्रेम पद पूरन ।
फाग परम पद आने ॥ २ ॥
एका एकी खेल बनो जब ।
सिव घर सक्ति समाने ॥ ३ ॥

अनंत कोटि धुनि बाजा बाजे ।
अगम निगम लपटाने ॥ ४ ॥
थकित भयो रस प्रेम मगन मन ।
गति काहू ना जाने ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम नागरि* प्रभु सँग ।
नाम पद्यो दीवाने ॥ ६ ॥

(२०)

होरी मन खेले जहँ उठत गुंज झनकार ।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है बिनु बाजे बिनु तार ॥टेक॥
काम क्रोध तहवाँ नहिं देखियत, उहवाँ वार न पार ।
दसो दिसा में होरी उठत, प्रभुजी के दरबार ॥ १
बिमल बिमल सखियाँ गुन गावहिं, पंचम सुर रुचिकारी† ।
प्रेम पिचुकारी भरि भरि मारत, भींजत ब्रह्म अपार ॥२॥
अनुभव फागु खेलत सुख लाग्यो, निर्मल ज्ञान बिचार ।
कोटि सूर ससि कोटि कोटि छबि, झूमका‡ परत बिहार ॥३
संतन सँग मिलि होरी खेलो, प्रीतम चरन निहार ।
कह गुलाल चरनन बलिहारी, बलि बलि प्रान पियार ॥४॥

(२१)

चित डोलन लागो मैाजी चाचरि आयो री ।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, सोहं सुर भरि गायो री ॥१॥
काया नगर में रास रचो है, सखियन झूमक नायो री ।
अष्ट जाम को खेम बनो है, निर्त सोहावन भायो री ॥२॥

* चतुर स्त्री । † मन भावन । ‡ झुमका, होली की एक राग का भी नाम है ।

अगम अबीर उड़त दसहूं दिसि, मुरली धुनि छबि छायो री।
कह गुलाल मेरो ऐसो साहब, घरहीं फाग मचायो री ॥३॥

(२२)

हर दम बंसी बाजी, बाजि निवाजी मेरे मन में ॥टेक॥
जहँ सहज सरूप समाजी, सेत धजा सिर ऊपर गाजी ॥१
उमँगि उमँगि मानिक मनि बरसत, मुक्ता तहँ झरि लागी २
सत्त सब्द ततकार उठत है, संत सदा सुख राजी ॥३॥
जम जीत्यो घर नौबति बाजै, कह गुलाल गति साजी ॥४॥

(२३)

अहो मन होरी मौज ले आव ॥ १ ॥
दम दम ज्ञान तपावो, चित धरि ठाम ठमाव* ॥२॥
तत्त अबीर समूह उड़ावो, तिरबिधि रंग बहाव ॥३॥
काया नगर में रास रचो है, पहजाहिं नूर जगाव ॥४॥
गगन मँडल में चाचरि ऊठत, उघट† ताल भरि गाव॥५॥
कह गुलाल प्रभु आयसु‡ दीन्हो, फागु नाम फल पाव ॥६॥

(२४)

मेरी नाथ सौं होरी लागी री ॥ टेक ॥
पाँच पचीस मिलि चाचर गावहिं, घुघुकि घुघुकि रस पागी री ॥ १ ॥
तत्त अबीर उड़त दसहूं दिसि, अनुभव तुरिया जागी री ॥२॥
आठ पहर नौबति तहँ बाजे, धुनि सुनि पातक भागी री ॥३॥
आनँद उठत रहत निसि बासर, रंग भरो अनुरागी री ॥४॥

---

* अस्थान में ठहरावो। † ऊँचा। ‡ आज्ञा।

खेलत खेलत मगन भयो मन, मिलि रहु नाम सुहागा री ५
कह गुलाल पिय होरी दीन्हो, हम धन बड़ी सभागी री ६

(२५)

मनुवाँ मोर मद्दल रँग बाउर* ।
सहज नगरिया लागल ठाउर† ॥१॥
उदित चंद भरे तहँ मोती ।
गरत‡ अमी वहँ नाम के जोती ॥२॥
अँगना बुहार के बाँधल केसा ।
कइलूँ सिँगरवा गइलूँ पिय के देसा ।
आनँद मंगल बाजत तूर ।
करल लिलरवा भइलूँ पिय के हजूर ॥४॥
कह गुलाल नाम रस पाई ।
मगन भइल जिव गइल बलाई ॥५॥

(२६)

आजु मन रावल§ रचल धमारी ।
कुहुकि कुहुकि हरि मिलल सुखारी ॥१॥
काया नगर में खेल पसारी ।
भरि भरि रूप थकलि नौ नारी ॥२॥
जगर मगर असि लगल पियारी ।
बाजत अनहद धुनि झनकारी ॥३॥
तहाँ न रवि ससि पुरुष न नारी ।
आपुहिं अपने भइल बुझारी ॥४॥

---

* मस्त । † ठिकाने । ‡ निचुड़ता है । § सिपाही ।

कह गुलाल हम फाग बिचारी ।
अब न खेलब सतगुरु बलिहारी ॥ ५ ॥

(२७)

को जाने हरि नाम की होरी ॥ टेक ॥
चौरासी में रमि रह पूरन, तीहुर* खेल बनो री ॥ १ ॥
घूमि घूमि के फिरत दसो दिसि, कारन नाहिँ छुटो री ॥२॥
नेक प्रीति हिये नाहीं आयो, नहिँ सतसंग मिलो री ॥३॥
कहै गुलाल अधम भो प्रानी, अवरे अवरि गहो री ॥४॥

(२८)

मैं तो खेलोंगी प्रभुजी से होरी ॥ टेक ॥
प्रेम पिचुकारी भरि भरि डारत, तत्त अबीर भरि झोरो ॥१॥
निसु बासर को फागु परो है, घूमत लगलि ठगौरो ॥२॥
लागो रंग सोहंग गुन गावहिँ, निरखत बाँहा जोरो† ॥३॥
मह गुलाल सुख बरनि न आवे, चाखत अधर कटोरी ॥४॥

(२९)

मन में हम खेलैँ होरी, आनँद डंक बजाई ॥ टेक ॥
कामा कोथर‡ भरि भरि लीन्हो, ज्ञान अबीर उड़ो री ।
सुखमन भरि पिचुकारी छूटत, सुरति सोँ नेह लगो री ॥१॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहिँ, सहज कै फाग बनोरी ।
लागो रंग टरत नहिँ टारे, आपु तेँ आपु पगो री ॥२॥
प्रेम पदारथ प्रापत भो जब, एक तेँ एक बझो री ।
उमँगि उमँगि भिल रूप समानो, तिहुं पुर भाग बढ़ो री ॥३॥

---

* तीन तरह अर्थात गुनों का । † हाथ पकड़ के । ‡ कलसो ।

धन्न भाग जिन यह गति पाई, ता का पटतर* कौन करी री।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी, होरी हमरि फरी री ॥४॥

(३०)

कोउ अनहद जंत्र† बजावे।
आठ पहर धुनि लगी रहतु है, बिमल बिमल सुर गावे ॥१
तिहुं पुर मद्धे फाग परो है, होरी चहुँ दिसि भावे।
सुर नर मुनी नाग गंधर्बा, होरी चहुँ दिसि धावे ॥ २ ॥
पाँच पचीस बनो खिलवाड़ो, नृप कहँ नाच नचावे।
ऐसो खेल बनो मूढ़न सों, ता सँग जन्म गँवावे ॥ ३ ॥
ऐसो खेल, नाहिं बनि आवे, जो यह खेल बचावे।
कह गुलाल सतगुरु बलिहारी, जो यह खेल छोड़ावे ॥४॥

(३१)

चरनन में फागुन मन खेले अनत कहूं नहिं डोले ॥टेक॥
आठ पहर नौबति धुनि बाजे, पल पल छिन छिन होले ॥१॥
पाँच सखी मिलि चाचरि गावहिं, प्रभु से करत कलोले ॥२॥
सुन्न नगर में होरी लै लै, जोति उजेरे खेले ॥ ३ ॥
सत्त अबीर उड़त दसहूं दिसि, काहे को कोऊ तोले ॥४॥
ऐसो सुख जुग जुग नाहिं कोई, जो तुम साँची खेले ५॥
कह गुलाल तब परदा छूटे, कबहूँ न भवजल भूले ॥ ६ ॥

---

* बराबरी। † बाजा।

रेखता

(१)

सरन सँभारि धरि चरन तर रहो परि,
काल अरु जाल कोउ अवर नाहीं ॥१॥
प्रेम सौं प्रीति करु नाम को हृदय धरु,
जोर जम काल सब दूर जाहीं ॥२॥
सुरति सँभारि कै नेह लगाइ कै,
रहो अडोल कहुँ डोल नाहीं ।
कहै गुलाल किरपा किये सतगुरू,
पर्‍यो अथाह लियो पकरि बाहीं ॥३॥

(२)

सुरति सोँ निरखि मिलि ध्यान अजपा जपै,
ज्ञान का घोड़ा लै सुन्न धावै ॥ १ ॥
सेत परकास आकास में फूलि रहो,
चित्त ह्वै भँवर तब जाय पावै ॥ २ ॥
वहँ गुंज अनहद गुँजै नाम तबहीं जगै,
प्रेम भो पूर नहिँ आनत आवै ॥ ३ ॥
कहैँ गुलाल फकीर सो सूर है,
मौज के खेल में खेल पावै ॥ ४ ॥

(३)

भक्ति परताप सब पूर सोइ जानिये,
धर्म अरु कर्म से रहत न्यारा ॥ १ ॥
राम सोँ रमि रह्यो जोति में मिलि रह्यो,
दुन्द संसार को सहज जारा ॥ २ ॥

भर्म सब मारि कै क्रोध को जारि कै,
चित्त धरि चोर को कियो यारा ॥ ३ ॥
कहै गुलाल सतगुरु किरपा कियो,
हाथ मन लियो तब काल मारा ॥ ४ ॥

(४)

मन मुक्ता होवे नाम रस नित लेवै,
हंस ह्वै रूप तब दसा पावै ॥ १ ॥
मोती मुक्ता चुँगै छोट में नहिं पगै,
सदा चैतन्य नहिं भरम आवै ॥ २ ॥
देखि दीदार सँभारि ले आपु को,
और नहिं फेर कहुँ दूरि धावै ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल यहि भाँति जो जन होवै ।
दिव्य दीदार सो दरस पावै ॥ ४ ॥

(५)

भयो जब दरस तब परस साहब मिलो,
अवर सब दूर नहिं नेर* आया ॥ १ ॥
पाप अरु पुन्न कहँ कर्म अरु धर्म कहँ,
तिक्त† संसार तें अलख गाया ॥ २ ॥
अमल‡ अमलै§ पिवे नाम लेते जिवे,
ज्ञान अरु भेद कोउ नाहिं पाया ॥ ३ ॥
कहैं गुलाल वे धन्य सो दास हैं,
मुलुक खुलासा नहिं आउ माया ॥ ४ ॥

---

*पास । †त्यागो । ‡नशा । §मल से रहित ।

(६)

प्रेम परतीत धरि सुरति सौं निरति करि,
याही है ज्ञान सतगुरू पावै ॥ १ ॥
न तो धोख धंधा लिये कपट डारे हिये,
मोर अरु तोर में जन्म जावै ॥ २ ॥
नाम सोँ रीति नहिँ साध सोँ प्रीति नहिँ,
धोख लिये ज्ञान भरि जन्म धावै ॥ ३ ॥
कहै गुलाल यह बचन साँचो सुनो,
यही है सत्त जो कोऊ पावै ॥ ४ ॥

(७)

ज्ञान उद्योत* करि हृदय गुरु बचन धरि,
जोग संग्राम के खेत आवै ॥ १ ॥
संत सो पूर है सूर माँड़े रहै,
कंच कुच† आदि नहिँ ओर आवै ॥ २ ॥
अगम असाध यह मारि कैसे करै,
काटि के सीस आगे धरावै ॥ ३ ॥
कहैँ गुलाल तब राम किरपा करैँ,
जीति भा सूर सो खेत पावै ॥ ४ ॥

(८)

राम के काम मोकाम नहिँ करत नर,
फिरत संसार चहुँ ओर धाया ॥ १ ॥
करत संताप सब पाप सिर पर लिये,
साध औ संत नहिँ नेह लाया ॥ २ ॥

---

*प्रकाशित। †कनक कामिनी।

बाँधिहै काल जंजाल जम जाल में,

रहत नहिँ चेत सब सुधि हेराया ॥ ३ ॥

कहैँ गुलाल जो नाम को जानिहै,

जीतिहै काल सोइ ज्ञान पाया ॥ ४ ॥

(९)

सब्द समसेर* लै ज्ञान तरकस† भरा,

पवन का घोड़ मैदान धाया ॥ १ ॥

पाँच अरु तीन पच्चीस को बाँधि कै,

पकरि कै जेर जंजीर नाया ॥ २ ॥

जागती जोति दीवान आपन किया,

बचा नहिँ कोऊ जिन सिर उठाया ॥ ३ ॥

मुलुक मवासि‡ खवास§ आपन किया,

गैब की फौज अदल‖ चलाया ॥ ४ ॥

गरजि नीसान अनहद्द नौबति बजै,

जीत के काल मैदान पाया ॥ ५ ॥

कहै गुलाल अगम्म अपार में,

बैठु जे तखत तिहुँ लोक राया ॥ ६ ॥

(१०)

सुन्न मोकाम में जिकिरि सौदा करै,

गरजि घन गरजि घन गरजि भारी ॥ १ ॥

---

* तलवार । † तीरोँ के रखने का चोँगा । ‡ मवासी अर्थात् पाँच चोर काम क्रोध लोभ मोह अहंकार । § सेवक । ‖ इंसाफ़ ।

फूल अनुभौ फुले भँवर ता में भुले,
फूल नहिं भँवर नहिं गति नियारी ॥ २ ॥
सब्द सोहं उठै जीव ता में बसै,
सुखमना सहज तहँ बहत नाड़ी ॥ ३ ॥
पैठि पाताल असमान को छेदि कै,
ब्रह्म सौं ब्रह्म भयो ब्रह्म भारी ॥ ४ ॥
रहत आसक्त तब डंक अनुभौ दियो,
ज्ञान भो पूर नहिं सुरति टारी ॥ ५ ॥
कहैं गुलाल सतगुरु सो पूर है,
छत्र सिर फेरि दियो कर्म जारी ॥ ६ ॥

(११)

गुरू परताप जब साध संगति करै,
फुलै तब ब्रह्म संतोष आया ॥ १ ॥
आपना जाप तें जाप अजपा जपो,
चाँद अरु सूर को बाँधि नाया ॥ २ ॥
सहज नाड़ो बहै सब्द अनुभौ गहै,
सुरति औ निरति मिलि नाम गाया ॥ ३
नैन बिनु सूझिया पिंड बिनु जूझिया,
जीति के काल अनहद बजाया ॥ ४ ॥
परो आ डंक चहुँ ओर दसहूँ दिसा,
गैब का ज्ञान अदल चलाया ॥ ५ ॥
कहैं गुलाल सो साफ साहब हुआ,
आपना काज आपुहिं बनाया ॥ ६ ॥

(१२)

जिन आपु ना सँभारा । सो अहि मुए संसारा ॥ १ ॥
चित चेत हूँ जो आवे । चित चरन में समावे ॥ २ ॥
तब होय प्रभु कि दाया । तब सतगुरु उन पाया ॥ ३ ॥
जब सतगुरु बोलि बानी । तब भरत रतन खानी ॥ ४ ॥
यह दिल में समावे । चित अनत नाहिँ जावे ॥५॥
रहु चरन में समाई । गुरु देइ रहु दुहाई ॥ ६ ॥
जब गुरू कहे मेरा । तब काज होय तेरा ॥ ७ ॥
तब फरे सतगुरु बानी । सब भयो जुग जुग ध्यानी ॥८॥
लवलीन होय जबहीं । तोहिँ राम मिले सबहीं ॥९॥
यह भेद कवन पावे । जेहिँ सतगुरु बतावे ॥१०॥
कहै गुलाल जानी । तुम सुनहु संत ज्ञानी ॥११॥

(१३)

सतगुरु जो कीन्ह दाया । तब काढ़ लियो माया ॥ १ ॥
भजु राम रे गँवारा । इस तनहिँ का* निहारा ॥२॥
यह जायगो रे भाई । जल छोड पियो काई ॥ ३ ॥
कहँ इस्क है दिवाना । मन कपट में भुलाना ॥ ४ ॥
यह दाव है रे भइया । तुम काहि† में भुलइया ॥५॥
यह खेल नाहिँ भाई । दिन ऐस ही चलि जाई ॥ ६ ॥
कुफरान जिकिर छोड़ो । पद साँच देव गोड़ो‡ ॥ ७ ॥
तब काज होय तेरा । सब नाहिँ कोउ नेरा ॥ ८ ॥

---

* क्या । † किस । ‡ सच्ची राह में पैर धरो ।

वे जिकिर में ठहराने। वह पाँच हैं विराने* ॥ ९ ॥
अबर कहीं धावे। तो निकट नाहिं आवे ॥१०॥
पच्चीस हैं बरजोरे। कुफरान बाज सोरे† ॥११॥
यह काया कोट गाढ़ी। बिकटे जु ठाठ ठाढ़ी ॥१२॥
यह भेद नाहिं पावे। नर धोख धंध धावे ॥१३॥
यह करत रहैं जोरे। काहू मुखहुं न मोरे ॥१४॥
जो नाम के अनुरागी। तिन निकट नाहिं लागी ॥१५॥
वह मस्त हैं दिवाने। महबूब साहब जाने ॥१६॥
नित रहत वे उदासी। नहिं जायँ प्राग कासी ॥१७॥
घर हीं में साहब सेवैं। पग अनत नाहिं देवैं ॥१८॥
कहै गुलाल बैरागी। जेहि राम रटन लागी ॥१९॥

(१४)

अहो सुनो आइ भाई। इह कवनि है बड़ाई ॥ १ ॥
जिन आब‡ तें सँवारा। उन का§ तेरा बिगारा ॥२॥
तुम वाहि सुकर मानो। साँचे साहब को जानो ॥३॥
यह करम है घनेरा। नर फिरत रहत बौरा ॥ ४ ॥
कहिँ पत्थल और पानी। जा पूजहिं अज्ञानी ॥ ५ ॥
यह काम नाहिं तेरा। तू का भुलै मैं मेरा ॥ ६ ॥
उस द्वार पै जो जाया। फिर कबहिं नाहिं आया ॥७॥

* पाँचो बिरोधी दूत नाम के सुमिरन से स्थिर हो जायँगे। † पच्चीस प्रकृतियाँ ज़बरदस्त नास्तिकता रूपी बाज़ सरीखो हैं। ‡ पानी, बुंद। § क्या।

(१२)

जिन आपु ना सँभारा । सो अहि मुए संसारा ॥ १
चित चेत हूँ जो आवे । चित चरन में समावे ॥ २
तब होय प्रभु कि दाया । तब सतगुरु उन पाया ॥ ३
जब सतगुरु बोलि बानी । तब भरत रतन खानी ॥ ४
यह दिल में समावे । चित अनत नाहिं जावे ॥
रहु चरन में समाई । गुरु देइ रहु दुहाई ॥ ६
जब गुरू कहे मेरा । तब काज होय तेरा ॥ ७
तब फरे सतगुरु बानी । तब भयो जुग जुग ध्यानी
लवलीन होय जबहीं । तोहिं राम मिले सबहीं ॥
यह भेद कवन पावे । जेहिं सतगुरु बतावे ॥१
कहै गुलाल जानी । तुम सुनहु संत ज्ञानी ॥१

(१३)

सतगुरु जो कीन्ह दाया । तब काढ़ लियो माया ॥ १
भजु राम रे गँवारा । इस सनहिं का* निहारा ।
यह जायगो रे भाई । जल छोड़ पियो काई ॥ ३
कहँ इश्क है दिवाना । मन कपट में भुलाना ॥ ४
यह दाव है रे भइया । तुम काहि† में भुलइया ।
यह खेल नाहिं भाई । दिन ऐस ही चलि जाई ॥
कुफरान जिकिर छोड़ो । पद साँच देव गोड़ो‡ ॥ ७
तब काज होय तेरा । तब नाहिं कोउ नेरा ॥ ८

---

* क्या । † किस । ‡ सच्ची राह में पैर धरो ।

वे जिकिर में ठहराने। वह पाँच हैं बिराने* ॥ ९ ॥
अवर कहीं धावे। तौ निकट नाहिं आवे ॥१०॥
पचीस हैं बरजोरे। कुफरान बाज सोरे† ॥११॥
यह काया कोट गाढ़ी। बिकटे जु ठाठ ठाढ़ी ॥१२॥
यह भेद नाहिं पावे। नर धोख धंध धावे ॥१३॥
यह करत रहैं जोरे। काहू मुखहु न मोरे ॥१४॥
जो नाम के अनुरागी। तिन निकट नाहिं लागी ॥१५॥
वह मस्त हैं दिवाने। महबूब साहब जाने ॥१६॥
नित रहत वे उदासी। नहिं जायँ प्राग कासी ॥१७॥
घर हीं में साहब सेवैं। पग अनत नाहिं देवैं ॥१८॥
कहै गुलाल बैरागी। जेहि राम रटन लागी ॥१९॥

(१४)

अहो सुनो आइ भाई। इह क्वनि है बड़ाई ॥ १ ॥
जिन आब‡ तें सँवारा। उन का§ तेरा बिगारा ॥२॥
तुम वाहि सुकर मानो। साँचे साहब को जानो ॥३॥
यह करम है घनेरा। नर फिरत रहत बौरा ॥ ४ ॥
कहिं पत्थल और पानी। जा पूजहिं अज्ञानी ॥ ५ ॥
यह काम नाहिं तेरा। तू का भुलै मैं मेरा ॥ ६ ॥
उस द्वार पै जो जाया। फिर कबहिं नाहिं आया ॥७॥

* पाँचो बिरोधी दूत नाम के सुमिरन से स्थिर हो जायँगे। † पचीस प्रकृतियाँ ज़बरदस्त नास्तिकता रूपी बाज़ सरीखो हैं। ‡ पानी, बुंद। § क्या।

खबरदार बंदा जानो । अब हीं तें जीव आनो ॥८॥
यह मति जबून होई । मरले भुलो न कोई* ॥९॥
वह हक्क है दिवाली† । तुम का भुलो रे प्रानी ॥१०॥
जो करत हो पसारा । सो सबहिं काल मारा ॥११॥
तुम खबरि लेहु भाई । अपनि अपनि आई ॥१२॥
यह काम नाहिं कोई । जा को तु फिरत रोई ॥१३॥
अबहु चेत बावरे । तेरा चला जात दाव रे ॥१४॥
तैं पकरु सुमिरु नाम । तेरा पूर होय काम ॥१५॥
साध संतन पग धरो । प्रेम प्रीति भक्ति करो ॥१६॥
तुम जानहु न दोई । आपे साहब वोई ॥१७॥
वहँ दुबिधा न आवे । तब पदवि दास पावे ॥१८॥
गुलाल कह दिवाना । प्रभु के चरन समाना ॥१९॥

(१५)

अहो यार भाई । यह भाँति सुनो जु आई ॥१॥
धरि नाम मारु तीन । रहु सुखमना लवलीन ॥२॥
जहँ पंच हैं बड़ नाद । वहँ बाद ना बिबाद ॥३॥
वहँ बरत नाहिं रोजा । वहँ काहु को न खोजा ॥४॥
वहँ जाति ना बड़ाई । कोउ रंक है न राई ॥५॥
वहँ दुबिधा नहिं आवे । तब दास पदवि पावे ॥६॥
वहँ हिन्दू नहिं तुरुक । वहँ ठाँव नाहिं लुरुक‡ ॥७॥
जो जावे सो पावे । नहिं धोख धंध धावे ॥८॥

---

* यह मति यानी साहब को भूल कर पत्थर पानी की पूजा करना बुरी है इस सीख को मरते दम तक न भूलो। † न्याय-करता। ‡ लुढ़कना, गिरना।

वहँ भेद है न कोई। वहँ जाति नाहिँ दोई ॥ ९ ॥
वहँ बंधु ना बिरादर। वहँ घास नाहिँ आदर ॥१०॥
जिन इश्क वही पाया। वह आवहीं नहिँ माया ॥११॥
सब रोज ध्यान धारी। वह मिलि रहे अपारी ॥ १२ ॥
सुर नर नाग देवा। सबहीं करैं जो सेवा ॥ १३ ॥
वह राम के भिखारी। हर दमै लागि तारी ॥ १४ ॥
चित अनत नाहिँ जावे। मौज साहब की पावे ॥ १५ ॥
वह रहत हैँ निनारा। वह राम के हैँ प्यारा ॥ १६ ॥
बेमहल* जो धावे। सो का सवाब† पावे ॥ १७ ॥
यह भूले जो भाई। सबहि तिन को ज़ाई ॥ १८ ॥
खबरदार हो बंदा। तुम का भुलो रे अंधा ॥ १९ ॥
मालूम मझब‡ सोई। जिन आपु भिस्त जोई ॥ २० ॥
जो अवर कहीं धावे। सो निकट नाहिँ आवे ॥ २१ ॥
गुलाल कहत पुकारी। वह बचन की बलिहारी ॥ २२ ॥
नर चेत करो वोई। अवर काम नाहिँ कोई ॥ २३ ॥

(१५)

॥ दोहा ॥

अगम निगम सबहीं थको, रहो अचल ठहराय।
कह गुलाल यह रेखता, कोइ बिरला साहब पाय।

॥ रेखता ॥

अहो मन देखो भाई, का कर्म भूलो जाई ॥ १ ॥
ज़ब जोर जबरि जावे, तब खूब खबरि आवे ॥ २ ॥

---

* बेठिकाने। † भलाई। ‡ अच्छा पंथ।

का भूलो दिवाना, यह जायगा गुमाना ॥ ३ ॥
जब दिल में सिदिक[*] आवे, तब धोख धंध जावे ॥ ४ ॥
यह सुख खितून बड़ाई, तेरे काहु काम न आई ॥ ५ ॥
भजु राम नाम प्यारा, लियो बुन्द तें निकारा ॥ ६ ॥
इह चित में धरो वोई, अवर काम नाहिं कोई ॥ ७ ॥
इह मन बड़ा अलइया, इह मन करे सहइया ॥ ८ ॥
इह मनहिं धोख देवे, इह मन चेला होवे ॥ ९ ॥
इह मन बूझु भइया, इह जन्म पदारथ जइया ॥ १० ॥
इह मन नाच नचइया, इह मन आस लेवइया ॥ ११ ॥
जिन मनै नहिं पहिचाना, वे भूले फिरहिं दिवाना ॥ १२ ॥
जब हाथ इ मन आवे, सब दाँव बंद[†] पावे ॥ १३ ॥
इह इस्क करै भाई, इह करकसा बलाई ॥ १४ ॥
जिन इह कि ताब[‡] पाया, तिनहिं आपु बनाया ॥ १५ ॥
का जायँ मथुरा कासी, वह मिलि रहे अबिनासी ॥ १६ ॥
कह गुलाल जो पावे, बहुरि न भवजल आवे ॥ १७ ॥
जो जिकिर खेल खेले, सोइ आपु आपु में मेले ॥ १८ ॥
बेमहल न जावे, सो खेल ऐस पावे ॥ १९ ॥
करे रूह महताब, इस्क लगे वई सिताब[§] ॥ २० ॥
सब कुफर[‖] न होवे, सब हक्क अदल जोवे ॥ २१ ॥
वह मस्त है फकीर, दिल चसम है हीर[¶] ॥ २२ ॥

---

* सत्य। † घात। ‡ आँच, तपन। § जल्द, तुर्त। ‖ नास्तिकता। ¶ दिल और आँखों में हीर (सारांश) यानी मालिक का प्रेम बसा है।

दरद* माहिँ† आवे, काहू जोर ना सतावे ॥२३॥
अवर करत है जो कोई, दोजख§ भिस्त‖ में समोई ॥२४॥
गुन अवर का बिचारा, तिन चेत अब सँभारा ॥२५॥
एक एक ते बिचारा, सोइ संत है पियारा ॥२६॥
तिन्हें पीर अपनाया, अवर फिरत हैं बौराया ॥२७॥
इह लोक कर्म जोरे, बेमहल बात तोरे ॥२८॥
सब कहत है ज्ञाना, खबरि अवरि मैदाना ॥२९॥
जोर जुलुम अकस आवे, तोहिं कहो को बचावे ॥३०॥
इह माया है ठगइया, खबरदार देखु भइया ॥३१॥
जबून नाहिँ खावे, न तो गैब गोता पावे ॥३२॥
चित चेत हो गँवारा, नहिँ जन्म बार बारा ॥३३॥
इक सिद्ध सेव सेवो, वोइ नाम से लौ लेवो ॥३४॥
सोइ जोगि ब्रह्मचारी, वोइ सिद्ध है मुरारी ॥३५॥
जिन ऐसा पद पावे, तिन नाम अचल गावे ॥३६॥
कह गुलाल जो पइया, सोइ नाम में समइया ॥३७॥
जो राम को भजइया, वोइ संत सो कहइया ॥३८॥
अवर धोख ही जु धावे, दर धोख सोई पावे ॥३९॥
नाहीं है इस्क यारा, बेमहल को पसारा ॥४०॥
जब रे आया जोरे, कुफरान करत बौरे ॥४१॥
रूह हक्क नाहिँ जाना, तुम का भुलो गुमाना ॥४२॥
इह ऐसी है देही, कोउ काम नाहिँ होही ॥४३॥

* दया। † अंतर में। ‡ ज़ुलम, सख़्ती। § नर्क। ‖ स्वर्ग।

बार बार धोख देवे, खबर कबहुँ नाहिँ लेवे ॥४४॥
यह झूठ है पसारा, खबरदार बंदे यारा ॥४५॥
इस्क करो साँच सोई, जहँ काहु जोर न होई ॥४६॥
मन सुबानी* सानी, तू खबरि नाहिँ जानी ॥४७॥
वाह वाह भाई मेरा, यह जायगा सब तेरा ॥४८॥
जुलम न करो कोई, यह काम नाहिँ कोई ॥४९॥
इस्क जिसे न हूआ, सो खाक नाहिँ धुआँ ॥५०॥
जो थोरि लजत† पावे, तो वाही में भावे ॥५१॥
जब मन मुरीद होवे, तब जागे मा‡ सोवे ॥५२॥
सोइ राम रमै भइया, खलक कवन को चलइया ॥५३॥
हरि दम दम बोले, राम राम रमत डोले ॥५४॥
जब कुफर न खावे, हर एक हो लगावे ॥५५॥
अस रहनि जो रहइया, मन कर्मना टरइया ॥५६॥
जन होवे जो तेरा, तो कवन करे मेरा ॥५७॥
महबूब होय सोई, इस्क चरन में समोई ॥५८॥
सब पीर दरद जाने, कधौं धोखहूं न आने ॥५९॥
वे डौल§ हैं फकीर, मौज मौज माहिँ थीर ॥६०॥
जो सरन उन कि जावे, अद्भुत पदार्थ पावे ।६१॥
कह गुलाल सुनु ज्ञानी, तिन राम नाम जानी ॥६२॥

---

* अच्छी वानी । † लज़्ज़त । ‡ या । § ढंग । ‖ मौज ही मौज में थीर (अस्थिर) है ।

मंगल

(१)

गुन जानी गुनवंत नारि, कंत मन भाइल हो ।
सुभ दिन लगन सोधाय, सबहिं मन लाइल हो ॥ १ ॥
अर्ध उर्ध के मध्य, तो चौक पुराइल हो ।
मुक्ता भरि भरि थाल, तो आरति बनाइल हो ॥ २ ॥
गंग जमुन के घाट, तो कलस धराइल हो,
मानिक बरे दिन रात, तो चँवर डुलाइल हो ॥ ३ ॥
चौमुख दीपक बारि, तो माँड़ो छाइल हो ।
निर्झरि झरो तहँ लाय, अमृत फल पाइल हो ॥ ४ ॥
गावहिं सखियाँ सहेलरि, दुलहिन भाइल हो ।
दास गुलाल सोहागिनि, प्रभु सँग पाइल हो ॥ ५ ॥

(२)

अबिनासी दुलहा हमारा हो ॥
जीतो जोग भोग सब त्यागो, भवसागर सौं न्यारा हो ॥१॥
किरपा कीन्हो सतगुरु दीन्हो, उलटा चौक पसारा हो ॥२॥
तन मन धन न्योछावरि डारौं, कंत मिलो प्रभु यारा हो ॥३॥
सुखमन सेज निरंतर डासैं* , सोहं चँवर सुढारा† हो ॥४॥
ताही पलँग मोर पिय बैसहिं, गावौं मंगलचारा हो ॥५॥
अगम अपार अनुभव अनमूरत, लोक बेद से पारा हो ॥५॥

---

* बिछाऊँ । † सुंदर रीत से हिलाया ।

कहै गुलाल भाग हम पाये, किये है चरन अधारा हे।

(३)

सतगुरु लगन धरावल, जक्तहुँ जानी हे।
हरि से हूै है ब्याह, बधू अब रानी हे।* ॥ १ ॥
आयल लगन सँदेसवा, रोवहिं सब प्रानी हे।
छोड़ि है देस हमार, बहुरि नहिं आनी हे ॥ २ ॥
तिरगुन तेल लगाय के, दुलही बनाइल हे।
सुखमन करहिं बधावर, ते चौक पुराइल हे ॥ ३ ॥
तिरबेनी घल नोर, पवन लेइ जाइल हे।
कंचन कलस भराय, ते मानिक जगाइल हे ॥ ४ ॥
अजर अमर के माँड़ो, मोतियन छाइल हे।
चौमुख दियना बारि, सखी सब गाइल हे ॥ ५ ॥
गावहिं ब्रज की नारि, ते प्रभुहिं रिझाइल हे।
कामिनि हृदय हुलास, कंत मन भाइल हे ॥ ६ ॥
पूरब चंद उदय किये, तब भाँवर नाइल हे।
सेँदुर बंदन चारु†, अभय पद पाइल हे ॥ ७ ॥
जन गुलाल सोहागिनि, कंत बनाइल हे।
पूरन प्रेम हमार, ते नौबति बजाइल हे ॥ ८ ॥

(४)

मूल कँवल चित लावल, सुरति चढ़ल असमान।
जगमग जोति जगावल, जम कर मरदल मान ॥ १ ॥

---

*अभी तक (स्त्री) थी मगर मालिक के साथ ब्याह होने से रा[नी] हो जाऊँगी। †सुंदर।

पाँच पचीस घरि बाँधल, तीन देव निरवारि।
बिगसित कँवल मन भावल, पावल देव मुरारि ॥२॥
तन मन सर्बस वारल, आनँद केलि हुलास।
हरखि हरखि गुन गावल, प्रभु अपनो लियो पास ॥३॥
सुखमन सेज बिछावल, पूजलि आस हमार।
जन गुलाल पिया बिलसहिं, रोम रोम बलिहार ॥४॥

(५)

आजु मेरे मंगल अनँद बधावर, आरति करबौं ॥टेक॥
सहज के थार सत्त की बाती, प्रेम के अच्छत भरबौं ॥१॥
सुन्न सिखर पर आरत होवै, तिरबेनी तट करबौं ॥२॥
गगन मँडल में सखि सब गावहिं, भाँवर दै सुर भरबौं ॥३॥
सिव के घरे सक्ति जब आई, गुन औगुन बीचरबौं ॥४॥
ऐसी आरति जो नर गावै, बहुरि न भवजल डरबौं ॥५॥

आरती

(१)

मन में जानिये हो, सत्त सब्द चित लाय।
पूरन आरति करि जेहि आवै, ता के गुरू सहाय ॥ १ ॥
बिन गुरु ध्यान ज्ञान का करिये, अनतहिं जाय बहाय।
सहज समाधि हृदय जिन लायो, जारो बिषय बलाय ॥२॥
सुन्न सिखर जिन आसन माँड़ो, तिरबेनी तट जाय।
उड़ो हंस गगनो चढ़ि धावो, आनँद जोति जगाय ॥३॥
गावँ न ठावँ न नावँ न देवा, सेवा सत्त लगाय।
पूरन ब्रह्म अमर अबिनासी, सहजहिं रहो समाय ॥४॥

अति अथाह थाह नहिं अविगत, जलहीं जल मीलाय।
कह गुलाल पूरन घर पायो, घटिहै हमरि बलाय ॥ ५ ॥

(२)

गगन को थार बनाय, प्रेम भरि आरति वारी।
चौमुख चमकत जोति, उठत झन झनकारी ॥ १ ॥
मन पवना को फेर, सहज घर लागलि तारी।
उनमुनि लागो बंद, थकित भईं नौ दस नारी ॥ २ ॥
पाँच पचीस तिनि* जारि, सहज घर लागलि तारी।
लोक बेद कियो दान, दई सब आरति वारी ॥ ३ ॥
कोटिन चंद उगाय, अमी रस नाना गारी।
गुरुमुख भयो प्रसाद, मनहिं मन आरत प्यारी ॥ ४ ॥
धन सतगुरु बलिहारि, चरन छबि पर जिय वारी।
कह गुलाल बैराह, आरति फूलति फुलवारी ॥ ५ ॥

(३)

सहज घर आरति मौज में लागी ॥ टेक ॥
बिनु बाजे बाजा धुनि होवे, बिनु चरनन गति साजी ॥१॥
गगन मंडल अनहद धुनि बाजे, प्रेम प्रीति हिये जागी ॥२॥
ब्रह्मा बिस्नु सोव तहं नाहीं, अलख पुरुष अनुरागी ॥३॥
अधर महल में आरति होवे, सेत छत्र छबि साजी ॥४॥
कोटिन चंद निछावरि वारौं, आरति भइ बड़ भागी ॥५॥
संत साध मिलि आरत होवे, कहि गुलाल बैरागी ॥६॥

(४)

आरति नैन पलक पर लागी ॥ टेक ॥
निरझर झरत रहत निसु बासर, सब्द सनेही जागी ॥१॥

---

* तीन।

बिनु करताल पखाउज बाजै, बिनु रसना अनुरागी ॥२॥
सुभग सरूप सोहावन सुंदर, सेत धजा सिर खाजी ॥३॥
सुखमन चँवर ढुरत निःझंतर, आरत हमरी गाजी ॥४॥
कह गुलाल आरति हम पायो, लोक बेद मति त्यागी ॥५॥

(५)

आरती मनुवाँ मैाज की कीजै, प्रेम निरंतर साहब छीजै ॥१॥
पहिली आरति अनुभव आवै, जुग जुग अचल परम पद पावै ॥२॥
दुसरी आरति दुबिधा धोवै, सतगुरु सब्द अगम गति जोवै ॥३॥
तिसरी आरति त्रिकुटी थाना, मन पवना ले जोति समाना ॥४॥
चौथी आरति त्रिभुवन रीझै, सहज सरूप आरती कीजै ॥५॥
पँचईँ आरति पाँचो गावै, गगन मँडल में मठ गे छावै ॥६॥
छठईँ आरति छः चक्र बेधावै, उलटि निरंतर सुक्ख बसावै ७
सतईँ आरति सहज धुनि गावै, अनहद सुनि धुनि घंट बजावै ॥८॥
अठईँ आरति आपु बनावै, बिगसै कमल अमी तब पावै ॥९
नवईँ आरति नौ द्वार लगावै, जम जीते तब मंगल गावै१०
दसईँ आरति दसो घर पूरा, जीति मिलो मनुवाँ भयो सूरा ॥११॥
एकादस* आरति करन जिन जानौ, कहैँ गुलाल सोई ब्रह्म ज्ञानी ॥१२॥

---

* ग्यारहवीं।

(६)

ऐसी आरति करु मन लाय, महा प्रसाद ठाकुर के चढ़ाय ॥१॥
प्रेम के पतरी प्रीति लगाय, भाव के बिंजन रुचिर बनाय ॥२॥
संत साध मिलि आरत गाय, प्रभु के सिर पर चँवर ढुराय ॥३॥
सुर नर मुनि सब आस लगाय, गिरा परा किनका बिन* खाय ॥४॥
सिव ब्रह्मा जाको खोजत धाय, प्रभु को जूँठन भागहुँ पाय ॥५॥
सतगुरु बुल्ले† अलख लखाय, संतन सीस गुलालहुँ पाय॥६॥

(७)

आरति मनुवाँ करु बनवारी,
सदा सुफल हरि नाम उचारी ॥ १ ॥
सतगुरु सब्द अगम जो पावे,
निसु दिन नौबत डंक बजावे ॥ २ ॥
गरजे गगना मनुवाँ हरखे,
चौमुख मानिक मोती बरखे ॥ ३ ॥
आरति एक अनँदपुर वारी,
सहजहिं सुखमन लागी तारी ॥ ४ ॥
ऐसो आरति जिन नर गाया,
ता के निकट न आवे माया ॥ ५ ॥

(८)

हरि हरि राम नाम लीजै ।
निसु दिन अनहद नौबति दीजै‡ ॥ १ ॥

---

* चुनकर । † बुल्ला साहब गुलाल साहब के गुरू का नाम है । ‡ बजाइये ।

चौमुख दियना बारि कै मन संपुट कीजै* ।
बिगसि कमल गगना चढ़ो तन को दान दीजै ॥२॥
अगम जोति झरत मोति मुक्ता मनि सीजै ।
प्रेम नेम अमी रस आरती भनीजैं† ॥ ३ ॥
अति अभेव अलख देव सेव साँच कीजै ।
आरति आनंद कंद जन गुलाल जीजै ॥ ४ ॥

(६)

हिंदू हृदय जो आरति पावे, राम नाम कै मसला‡ चलावे ॥१॥
गगन मँडल में आरति बारे, तब हीं जीव निछावरि डारे ॥२
सुन्न को थार सत्त को बाती, सुरति निरति बारै दिन राती ३
सुखमन भाँवरि दै दै गावे, ब्रह्मा बिस्नु सिव संग न भावे ४
अचल अमूरति आरति लारी, थकित भयो घर नौ दस नारी ॥ ५ ॥
रोम रोम आरति बलिहारो, सकल मनोरथ आरती उतारो ६
अजर आस आरति धरि जोरा, आरति सत्त थकित मन मोरा ॥ ७ ॥
तन मन धन न्योछावरि वारी, माया मोह त्याग सब झारी ८
आरत सहजहिं सुमिरन करई, आरति चरन सरन तर परई ९
आरति प्रेम नेम जब होई, भला बुरा नहिं बूझै कोई ॥१०॥
आरति फिरि जब निरति समाई, मुक्ता अच्छर सिद्दिक§ बनाई ॥ ११ ॥
आरति जब घर बरलि बनाई, रोम रोम पद आरति पाई १२
कह गुलाल हम आरति पाई, जन्म जन्म के संस मिटाई १३

* मन को सब ओर से बटोर लो । † कहो, गावो । ‡ चरचा । § सत्य ।

(१०)

मुसलमान जो आरति करई, सिदक सबूरी हर दम धरई १
बेमहाल आरति नहिँ करई, फजिर बारि आरति जो धरई २
आरति इस्क इमाने धरई, अल्लह अगुने बाजी फरई* ॥३॥
आरति बैत आप जो होई, दुरमति छोड़ि अवल चित जोई ४
आरति मुसहफ़† प्रीति परोये, जुलमहिं मारि हक्क तब जोये ५
आरति किस्मत करम जब आई, मजहब पाय तब आरति
गाई ॥ ६ ॥
मन मिरदंग आरती गावे, जुलुम जबर काहू न सतावे ॥७॥
आरति बुंद अकिन जब वारा, सुरति बिसुरति गयो सब
भारा ॥ ८ ॥
आरतिपुर अमले जिन पाई, कह गुलाल सो है गुर-भाई ९

(११)

राम राम राम राम आरती हमारी, दुनिया है सब
देवान देव पूजै भारी ॥ टेक ॥
सतगुरु जब दियो करार, स्रवन सुन्यो दै बिचार ।
याही सिदिक जिव हमार, नेम व्रत धारी ॥ १ ॥
जोग जुगत मन हमार, साध रहै पवन भार ।
काया थार जोति भरि कै, त्रिकुटी ले वारी ॥ २ ॥
उनमुनी घन गरजि जोर, सुखमन कै करि झकोर ।
बंक नाल मेरु डंड, अलख पुरुष भारी ॥ ३ ॥
सेस फनि मनी अनंद, प्रान प्रभु को करत कंद ।
जोता जोग रोग सोग, करम भरम हारी ॥ ४ ॥

* मालिक के निर्गुन नाम की धुन गाजने लगे। † कुरान।

अति अथाह नाहिं थाह, परस भयो गुरु कि बाँह* ।
नाहिं आदि अंत मद्ध, एक ही निहारी ॥ ५ ॥
कह गुलाल सुनो यार, आरति पूरन हमार ।
राज करौं दसौ दिसा, छत्तर सिर धारी ॥ ६ ॥

(१२)

मन माना मैं मनहिं जान, आरत सो ज्ञानी ॥ टेक ॥
द्वादस में सुरति तान, उठत तत्त बानी ॥ १ ॥
गल गल जीव ब्रह्म मिलो, अलख पुरुष भारी ॥ २ ॥
वेद भेद सब खुवार, परथल जल मानी ॥ ३ ॥
राम नाम हेतु नाहिं, पसु समान जानी ॥४॥
आपु अपन चिन्हस नाहिं, फिरस भुलानी ॥ ५ ॥
कह गुलाल सत फकीर, दुनिया बौरानी ॥ ६ ॥

(१३)

लागत मोहिं पियारा, आरति लागत मोहि पियारा ॥टेक॥
सुखमन के घर आरति माँड़ो, रबि ससि दूनौं वारा ॥१॥
तिरबेनी तिर आरति बारल, भाँवरि देत उतारा ॥२॥
गगन मँडल में आरति गावल, मुक्ता भरि भरि थारा ॥३॥
दसौ दिसा में आरति पूरन, धन सतगुरु बलिहारा ॥४॥
सिव सक्ती जब गाँठि परो है, देखल आपु बिचारा ॥५॥
कह गुलाल आरति हम पावल, फगुआ फरल लिलारा ॥६॥

---

* दखल ।

पहाड़ा

एका एक अमल जो पावे, साँचा सतगुरु भावे।
प्रेम पदारथ हिय में राखे, सुमिरन हीं सुख पावे ॥१॥
दुआ दोष जो दुरमति छोड़े, तिरगुन ताप बहावे।
सुरति निरति लै आसन माँड़े, सकल सँतोष जो आवे ॥२॥
तिया तिरकुटी जो मन राखे, झिलिमिलि जोति जगावे।
उनमुनि लागी अंद सहज धुनि, चंद मँडल घर छावे ॥३॥
चौथे पद पर पग जो नावे, अनुभी डंक बजावे।
गगन मँडल में बाजी माँड़ो, बंक नाल चलि जावे ॥४॥
पँचएं परम तत्त जो जानो, सुनि अगवत मन लावे।
पाँच पचीस तीनि बसि करि के, सेत छत्र सिर छावे ॥५
छटएँ छिमा सील जो उपजे, सत्त सँतोस चढ़ावे।
नौ दर छोड़ि दसौ दिसि धावे, सहज समाधि जो पावे ॥६॥
सतएँ सदा सरन मन राखे, शब्द के भेष बनावे।
कोटि चंद उजियारे बारे, मानिक जोति जगावे ॥७॥
अठएँ अगम जोति जो बारे, दरस परस चित लावे।
सोहं सब्द सुरत* निस बासर, अनतहिं कतहुं न जावे ॥८॥
नौवें नाम निरंजन नौका, कनहरि† गुनहिं चलावे।
साँचे गहे झूँठ नहिं आवे, भवसागर तरि जावे ॥९॥
दसएँ द्वार कि ताली खोले, अविगति गतिहिं समावे।
सकल कामना मन है पूरन, मन के मौज मिलावे ॥१०॥
एकादस नाम जो पूरन पावे, अगम निगम नहिं भाव।
कह गुलाल सब सतगुरु चीन्हे, घरहीं में घर छावे ॥११॥

---

* ध्यान। † खेवट।

पहाड़ा

एक्का एक अमल जो पावे, साँचा सतगुरु भावे ।
प्रेम पदारथ हिय में राखे, सुमिरत हीं सुख पावे ॥१॥
दुआ दोष जो दुरमति छोड़े, तिरगुन ताप बहावे ।
सुरति निरति लै आसन माँड़े, सकल सँतोष जो आवे ॥२॥
तिया तिरकुटी जो मन राखे, झिलिमिलि जोति जगावे ।
उनमुनि लागो बंद सहज धुनि, चंद मँडल घर छावे ॥३॥
चौथे पद पर पग जो नावे, अनुभौ डंक बजावे ।
गगन मँडल में थाजी माँड़ो, बंक नाल चलि जावे ॥४॥
पँचएं परम तत्त जो जानो, सुनि भगवत मन लावे ।
पाँच पचीस तीनि बसि करि के, सेत छत्र सिर छावे ॥५
छटएँ छिमा सील जो उपजे, सत्त सँतोस चढ़ावे ।
नौ दर छोड़ि दसौ दिसि धावे, सहज समाधि जो पावे ॥६॥
सतएँ सदा सुरत मन राखे, शब्द के भेष बनावे ।
कोटि चंद न्योछावरि वारे, मानिक जोति जगावे ॥७॥
अठएँ अगम जोति जो बारे, दरस परस चित लावे ।
सोहं सब्द सुरत* निस बासर, अनतहिं कतहुँ न जावे ॥८॥
नौवें नाम निरंजन नौका, कनहरि† गुनहिं चलावे ।
साँचे गहे झूँठ नहिं आवे, भवसागर तरि जावे ॥९॥
दसएँ द्वार कि ताली खोले, अविगति गतिहिं समावे ।
सकल कामना मन है पूरन, मन के मौज मिलावे ॥१०॥
एकादस नाम जो पूरन पावे, अगम निगम नहिं भाव ।
कह गुलाल सब सतगुरु चीन्हे, घरहीं में घर छावे ॥११॥

---

* ध्यान । † खेवट ।

॥ शब्द ३ ॥

अवचक आयल पिया के देसवा तब हम उठि सँग
लागलि हो ॥ टेक ॥

छूटलि लाज सरम धै खाइल छुटलि बंधु परिवारा हो ।
नेम छुटल गति अवर भइल जिव, हँसत सकल संसारा हो १
प्रेम बान हिरदय गहि मार्‍यो, बिन सर* निकस्यो पारा हो ।
घूमि घूमि घायल ज्योँ घूमत, गिरत परत मतवारा हो २
घर हम छाड़ भये बौराहे, जरलि मढ़ौ उगि† तारा हो ।
बिगस्यो कमल भँवर रस लुबधो, पियत अमी रस धारा हो ३
गाँव के लोगवा हँसि हँसि खेदे, घर के भूत पछारा हो ।
कह गुलाल जब ब्रह्म अगिन लगि, तब घर में मन मारा हो ४

॥ शब्द ४ ॥

जात रही सुभ घरिया हो ।
बिच ठइयाँ‡ परल बिचार हो सजनी ॥ १ ॥
इक कोस गइली दुइ कोस गइली ।
सुगम मिलल ब्योपार हो सजनी ॥ २ ॥
नाना रूप निरंजन नागर ।
करमन लिहल पसार हो सजनी ॥ ३ ॥
रोम रोम छबि बरनि न आवे ।
इक साँई कंत पियार हो सजनी ॥४॥
नेम धरम नहिँ करम भरम नहिँ ।
निर्गुन रूप निनार हो सजनी ॥५॥

---

* गाँसी । † उदय हुआ । ‡ ठौर, मुक़ाम ।

यहि संसार बेइलवत* हो, भूलो मत कोइ ।
माया लाश न लागे हो, फिर अंत न रोइ ॥ ४ ॥
चेतहु क्यों नहिँ जागहु हो, सोवहु दिन राति ।
अवसर बीति जब जइहै हो, पाछे पछिताति ॥ ५ ॥
दिन दुइ रंग कुसुम है हो, जनि भूलो कोइ ।
पढ़ि पढ़ि सबहिँ ठगावल हो, आपनि गति खोइ ॥६॥
सुर नर नाग ग्रसित भो हो, बचि रह्यो न कोइ ।
जानि बूझि सब हारल हो, बड़ कठिन है सोइ ॥७॥
निस्चै जो जिय आवै हो, हरि नाम बिचार ।
सब माया मन आनै हो, न तो वार न पार ॥८॥
संतन कहल पुकारी हो, जिन सूनल बानी ।
सो जन जम तेँ बाचल हो, मन सारँग पानी ॥९॥
अवरि उपाव न एको हो, बहु धावत कूर ।
आपुहि मोहत समरथ हो, नियरे का दूर ॥१०॥
प्रेम नेम जब आवे हो, सब करम बहाव ।
तब मनुवाँ मन माने हो, छोड़ो सब चाव ॥११॥
यह प्रताप जब होवे हो, सोइ संत सुजान ।
बिनु हरि कृपा न पावे हो, मत अवर न आन ॥१२॥
कह गुलाल यह निर्गुन हो, संतन मत ज्ञान ।
जो यहि पदहिँ बिचारे हो, सोइ है भगवान ॥१३॥

---

* एक खुशबूदार फूल की लता जो बहुत फैलती है और जिसका फूल बहुत जल्द कुम्हला जाता है उसके सरीखा ।

॥ शब्द ३ ॥

अचषक आयल पिया कै देसवा तब हम उठि सँग
लागलि हो ॥ टेक ॥

छूटलि लाज सरम धै खाइल छुटलि बंधु परिवारा हो ।
नेम छुटल गति अवर भइल जिव, हँसत सकल संसारा हो १
प्रेम बान हिरदय गहि मारयो, बिन सर* निकस्यो पारा हो ।
घूमि घूमि घायल ज्यों घूमत, गिरत परत मतवारा हो २
घर हम छाड़ भये बौराहे, जरलि मढ़ी उगि[†] तारा हो ।
बिगस्यो कमल भँवर रस लुबधो, पियत अमी रस धारा हो ३
गाँव के लोगवा हँसि हँसि खेदे, घर कै भूत पछारा हो ।
कह गुलाल जब ब्रह्म अगिन लगि, तब घर में मन मारा हो ४

॥ शब्द ४ ॥

जात रही सुभ घरिया हो ।
बिच ठइयाँ[‡] परल बिचार हो सजनी ॥ १ ॥
इक कोस गइली दुइ कोस गइली ।
सुगम मिलल ब्योपार हो सजनी ॥ २ ॥
नाना रूप निरंजन नागर ।
करमन लिहल पसार हो सजनी ॥ ३ ॥
रोम रोम छबि बरनि न आवे ।
इक साँईं कंत पियार हो सजनी ॥४॥
नेम धरम नहिँ करम भरम नहिँ ।
निर्गुन रूप निनार हो सजनी ॥५॥

* गाँसी । † उदय हुआ । ‡ ठौर, मुक़ाम ।

कह गुलाल सतगुरु बलिहारी ।
मिलि हौं प्रान पियार हो सजनी ॥ ६ ॥

॥ शब्द ५ ॥

ऐसन अचरज देखहु जाई ।
जुग जुग दुबिधा पंथ चलाई ॥ १ ॥
अपनहिं काया गोपि लुटाई, पारथ बीर न धनुष चढ़ाई* २
घर घर नारि पुरुष सँग होई, एकै ठाकुर अवर न कोई ३
यह जग मिथ्या फिरत बनाई, बढ़त घरत फेरत दिन जाई ४
कहिं राजा कहिं दुख सुख-दाई, अपनहिं गोपी कान्ह कहाई ॥ ५ ॥
आतम राम सकल जग छाई, धंधा धोख मरत बौराई ॥६॥
कह गुलाल अब राम दोहाई, हम बचली संतन सरनाई ॥७॥

॥ शब्द ६ ॥

प्रभु की सोभा बनी है रसाल ।
धन्न सो घरी धन्न वह पल है,
जा सिर उगो है भाल ॥ १ ॥
आठ पहर सनमुख हौं निरखो,
अनुभौ अविगत लाल ।
जासु दरस सुर नर मुनि ध्यावहिं,
खोजत फिरत बेहाल ॥ २ ॥

---

* पारथ अर्जुन का नाम है। जब अर्जुन श्री कृष्ण के गुप्त होने पर उन के रनवास को पहुँचाने गोकुल को चले तो रास्ते में काबा लोगों ने घेरा—अर्जुन ने उनको बान से मार कर भगाना चाहा पर कितना ही धनुष को चढ़ाया वह न चढ़ी और काबा लोगों ने ऐसे वीर के आछत उन को लूट लिया।

बनी बनी कौतुक बनि आवे,
अनत कला सो ख्याल ।
लोभी लंपट हीन करम बसि,
ता को भयो है दयाल ॥ ३ ॥
का बरनौं छबि बरनि न आवे,
अलप बुद्धि सठ* बाल ।
अपरम्पार पार पुरुषोत्तम,
लियो अपनाय गुलाल ॥ ४ ॥

॥ शब्द ७ ॥

साँचा है साँचा हरिनाम, संत रटत हैं आठो जाम ॥ १ ॥
सनकादिकन्ह लियो सुकदेव, नारद कीन्हो संतन सेव ॥२॥
अंबरीक लियो जनक बिदेह, लियो जोगेसरन्ह माया खेह ३
ध्रू प्रह्लाद भरि लियो करार, लियो है कूबरी कंचन थार ४
लियो हनुमान लियो सुग्रीम, लियो बिभीषन पंडो भीम ५
नामदेव भरि लियो कबीर, लियो मलूका नानक धीर ६
रैदास लियो है मीराबाई, नरसी जन लियो खेल कन्हाई ७
यारीदास लियो गुरु सँग पाय, केसो बुल्ला दूनो भाय ८
सतगुरु बुल्ला सहज लखाय, कह गुलाल सब चरन समाय ९

॥ शब्द ८ ॥

हरि चेतहु रे नर जन्म बादं†, डहकत फिरत कहा माया बाद‡ ॥ १ ॥
नर भूले करि पुन्न पाप, जन्म जन्म होवै सँताप ॥ २ ॥

* मूरख, दुष्ट। † निस्फल। ‡ झगड़ा।

पाँच पचीस तिन* घरहिं लाग, निसु बासर जरै अपनि आग ॥ ३ ॥
तीरथ व्रत करै देव मानि, सबहिं भुले करि कुल की कानि ४
उपजत बिनसत जनम खोय, लाज भरो चलो मूँह गोय† ५
काहू काहु न खोजत पाय, गरब भुलो सब चलो गँवाय ६
कह गुलाल नहिं साँच आय, तातें धै धै काल खाय ॥ ७ ॥

॥ शब्द ९ ॥

काया नगर सोहावन जहँ बसैं आतम राम ॥ १ ॥
मन पवन तहँ छाड़ब कठिन करेरो‡ काम ॥ २ ॥
सुर नर नाग नचावहिं मोर होय भो साम ॥ ३ ॥
करम धरम देत भाँवरि फिरत रहे आठो जाम ॥ ४ ॥
ऐसो नगर कब भाइब जम सिर देत दमाम§ ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम त्यागल हर दम बोलत राम ॥ ६ ॥

॥ शब्द १० ॥

हे मन गगन गरजि धुन भारी ।
लेके पवन भवन मन लावो थकित भई नौ नारी ।
सुखमन सेज जे सुरति सोहागिनि निर्गुन कंत पियारी ॥ १ ॥
निसु बासर हर दम दम निरखत पूजलि आस हमारी ॥ २ ॥
जासु नाम सुर नर मुनि ध्यावहिं अगम बेद उचचारी ।
सोइ प्रभुजी ने आनि कृपा कियो पल पल लेत करारी ॥ ३ ॥

---

* तीन । † मुँह छिपा कर । ‡ कड़ा । § दमामा=डंका ।

प्रेम पगो मन थकित भयो है पूरन ब्रह्म निहारी ।
कह गुलाल राम को सेवक प्रभु की गती निनारी ॥४॥

॥ शब्द ११ ॥

हे मन नाचहु प्रभु के आगे ।
सरन सरन करि चरनन लागे ॥ १ ॥

अंबरीक नाचे धरे करार, नारद नाचि बजावहिँ तार ॥२॥
नाचहिँ ब्रह्मा सिव सनकादि, नाचहिँ मुनि बषिष्टदे आदि ॥ ३ ॥
नाचहिँ चाँद सूर मारूत, सुर नर मुनि नाचहिँ अर जूत ॥४॥
नाचहिँ कलि के भक्त अनूप, पुलकि पुलकि नाचहिँ मिलि रूप ॥ ५ ॥
कह गुलाल धर मनहिँ नचावे, सोई साध परम पद पावे ॥६॥

॥ शब्द १२ ॥

देखो सखी पावस समय आजु आई ।
अपनी अपनी सक्ति जहाँ लगु, जीव जंतु सब छाई ॥१॥
पाँच पचीस बिरह रस भरि भरि, निसु दिन तनहिँ सताई ।
मनुवाँ प्रबल अनल ह्वै डाहै, मानहु देत दोहाई ॥ २ ॥
गरजत गगन अघोर चहूँ दिसि, नाना भाँति सुनाई ।
मगन भयो पिय के रँग रातो, अद्भुत खेल बनाई ॥३॥
पाप पुन्न तौलत दिन खोयहु, करबहु कौन उपाई ।
जम राजा जब धै लै चलि हैं, एकौ सुधि नहिं आई ॥४॥
प्रभु के साथ लगो है बाजो, सत्त कै खेल बनाई ।
जन गुलाल खेलहि तन मन दै, रुचि* सौँ सीस चढ़ाई ॥५॥

* उत्साह।

॥ शब्द १३ ॥

संतो फिर जिवना नहिं होंदा ।

का तैं भरमि भरमि गति खोंदा[†] ॥ १ ॥

माटी के तन माटिहिं मिलि है, पवनहिं पवन समौंदा[‡] ।
सकल पदारथ छोड़ि नाम धन, झूठ फँसा री फौंदा[§] ॥२॥
संत साध के रीति न जानहि, मुवल अरु जिंदा गंदा ।
हरि मद माते मस्त दिवाने, प्रेम पियाला पिंदा[‖] ३॥ ॥
दोजखभिस्त भिस्त नहिं दोजख, जिक्रि[¶] मुहाला[**] किंदा ।
कह गुलाल अनुभौ जिन गायो, सोई मुसलम जिंदा ॥४॥

॥ शब्द १४ ॥

संतो जोगी एक अकेला ।

तातेँ मरन जिवन नहिं खेला ॥ १ ॥

सत्त सबूरी सहज को कंथा[††] सेल्ही सुभग सुहेला ।
माति माति मगन घर फेरो, बहुरि न मनुवाँ दुहेला[‡‡] ॥२॥
पाँचहुँ का परपंच मिटावो, मन पवना सँग रेला[§§] ।
सुरति निरति ले आसन माँडो, तहाँ गुरू नहिं चेला ॥३॥
आठ पहर इक नाम उठतु है, ज्ञान ध्यान को मेला ।
कहै गुलाल अगमपुर बासी, संत चरन मन देला ॥४॥

○ होगा। † खोता है। ‡ समाय जायगा। § फंदा। ‖ पोते है। ¶ सुमिरनी। ** मुश्किल। †† कथरी, गुदरी। ‡‡ मन को मस्त और मगन रख कर त्रिकुटी की ओर उलटो तो कुछ कठिनाई न रहेगी। §§ मिल कर चलना।

॥ शब्द १५ ॥

मन चित धरु रे, परम तत्त में रहु रे ॥ टेक ॥

ढंडस* करु मन तें दूर, सिर पर साहब सदा हजूर ॥१॥

रोम रोम जाके पद परगास, संत सभा में पावे बास ॥२॥

सत संतोष हृदय करु ज्ञान, काटि कर्म मिटि आवा जान ३

छोड़ि चंचलता होवहु सूर, निसु दिन झरत बदन† पर नूर ॥ ४ ॥

कह गुलाल मेरो नाम अधार, जम जीतल दुख गइल हमार ॥ ५ ॥

॥ शब्द १६ ॥

जो चित लागै राम नाम अस ॥ टेक ॥

तृषावंत जल पियत अनँद अति ।
थकलहि गाँव‡ मिलत है जौन जस ॥ १ ॥

निर्धन धन सुत बाँझ बसत चित ।
संपति बढ़त न घटत जौन अस ॥ २ ॥

करत है कपट साँच करि मानत ।
मगन होत नर मूढ़ सकल पसु ॥ ३ ॥

प्रेम गलित चित सहज सील अति ।
सर्व भूति अति करत दया रस ॥ ४ ॥

आनँद उदित अगम गति ज्ञानी ।
त्रिलोक नाथ पति काहे न होइ बस ॥५॥

सतगुरु प्रीति परम सत सत मत ।
बिमल बिमल बानी में रहत लस ॥ ६ ॥

---

* झगड़ा, अकड़ । † चिहरा । ‡ ठिकाना ।

कह गुलाल मिल संत सिरोमन।
काहे करत कछु करत कवन कस ॥ ७ ॥

॥ शब्द १७ ॥

कहत है खाली मैं देखलौं राम, दुनिया भूलति माया के काम ॥ १ ॥
चारिउ जुग देख्यो सब ठाँव, तुह बिनु एको न देखलौं गाँव २
तीरथ ब्रत महँ तुम्हरो नाम, तुह बिनु यह जग कौने काम ३
जोग जग्य देखलौं सब टोय*, तुह बिनु एको सिद्ध न होय४
नेम धर्म पूजा बिसवास, तुह बिनु यह सब झूठी आस ॥५॥
जप तप संजम नेम अचार, तुह बिनु भौंदू फिरत गँवार ६
कहै गुलाल सुनौ नर लोय, आसा मुक्ति बहै मति कोय ॥७

॥ शब्द १८ ॥

नदिया भयावनी कैसे चढ़ौं मैं बेरों† ॥ टेक ॥
घाट न चलत बाट नहिं पायो, संगी सुभग घनेरे ॥ १ ॥
दरब नहीं कछु हासिल‡ देना, उतरल चहो सबेरे ॥ २ ॥
सुमिरो चरन सत्तगुरू गोबिंद, प्रेम प्रीति हिये ले रे ॥ ३ ॥
ठौर ठौर घटवार टिकाने, केलि करत गयो डेरे ॥ ४ ॥
पायो घर मेटी सब संसा, संगी सकल छुटे रे ॥ ५ ॥
दास गुलाल दया सतगुरु की, निरभय है पद नेरे§ ॥ ६ ॥

॥ शब्द १९ ॥

सुनु सखि मोर बचन इक भारी।
उलटि गगन चढ़ि लावो तारी ॥

* ढूँढ कर। † बेड़ा, नाव। ‡ घाट महसूल। § पास।

गहि करि बाँधो नवो दुवारी ।
हंसा निज घर कइल घमारी ॥ २ ॥
मनुवाँ मोर चाखल रसना* री ।
बैठल जीव तहँ मिलल मुरारी ॥ ३ ॥
छिन छिन गारत नाम अगारी† ।
पीवत मनुवाँ भइल सुखारी ॥ ४ ॥
आवै न जाय मरै नहिं जीवै ।
अचल अमर घर डेरा लेवै ॥ ५ ॥
कह गुलाल हम पिया कि पियारी ।
तब घर पावल छुटल घँधा री ॥ ६ ॥

॥ शब्द २० ॥

सोई दिन लेखे जा दिन संत मिलाप ॥ टेक ॥
संत के चरन कमल की महिमा, मोरे बूते‡ बरनि न जाहि॥१॥
जल तरंग जल ही तेँ उपजे, फिर जल माहिँ समाइ ॥२॥
हरि मैँ साघ साघ मैँ हरि हैँ, साघ से अंतर नाहिँ ॥३॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस साघ सँग, पाछे लागे जाहिँ ॥४॥
दास गुलाल साघ की संगति, नीच परम पद पाहिँ ॥५॥

॥ शब्द २१ ॥

रोम रोम मैँ रमि रह्यो, पूरन ब्रह्म रहि छाय ।
अविगत गति के जानई, सिव सनकादिक घाय ॥ १ ॥
सुर नर मुनि सब गावहीं, काहु न पायो पार ।
जो जन सरन गये भक्तन के, तिन पद पायो सार ॥ २ ॥

---

* अंतर का रस लेने वाली । † फूल यानी शराब की रूह । ‡ बल ।

अछय अमर आनंद है, ज्ञान उदित आलेख ।
सर्व मूल मँ पूरि रह्यो है, सो प्रभु छिन छिन देख ॥ ३ ॥
निस दिन नौबति बाजही, निरझर झरै तहँ नूर ।
उमँगि उमँगि तहँ गावहीं, कोउ बैठे साधू सूर ॥ ४ ॥
कह गुलाल सो पावई, सतगुरु की परतीत ।
तब जिय निस्चय आवई, सबहिं भये तब मीत ॥ ५ ॥

॥ चुने हुए दोहे ॥

सत्त सब्द गुन गायऊ, संतन प्रान अधार ।
अगम अगोचर दूरि है, कोऊ न पावत पार ॥१॥

उठत तरंग दसहूं दिसा, भाँति भाँति के राग ।
बिन पग नाच नचायऊ, बिनु रसना गुन गाय ॥२॥
ज्ञान ध्यान तहवाँ नहीं, सहज सरूप अपार ।
जन गुलाल दिल सौं मिलो, सोई कंत हमार ॥३॥
बिन जल कँवला बिगसेऊ, बिना भँवर गुंजार ।
नाभि कँवल जोती बरै, सिरबेनी उँजियार ॥४॥
सुखमन सेज बिछायऊ, पवढ़हिं प्रभू हमार ।
सुरति निरति ले जायऊ, दसो दिसा के द्वार ॥५॥
पुलकि पुलकि मन लायऊ, आवा गवन निवार ।
जन गुलाल तहँ भायऊ, जम का करिहै हमार । ६॥
मन पवनहिं जीतो जबै, महसुन* माहिं समाध ।
सुखमन जोति सँवारेऊ, बरि बरि होत प्रकास ॥७॥
ओअंकार समाइलो, जोति सरूपी नाम ।
सेत सुहावन जगमगर, जीव मिलल सतनाम ॥८॥
जिन यह ब्रह्म बिचारल, सोई गुरू हमार ।
जन गुलाल सत बोलही, झूठ फिरहि संसार ॥९॥
दृष्टि पदारथ फरल सोइ, सहज के परलि धमार ।
अति अद्भुत तहँ देखल हो, पुलकि पुलकि बलिहार ॥१०॥
बरनत बरनि न आवई, कोटि चंद छबि वार ।
दसव दिसा पूरब सोई, संत सदा रखवार ॥११॥

---

* महासुन्न ।

जिन पावल तिन गावल, अवर सकल भ्रम डार ।
कहैं गुलाल मनोरवा*, पूरन आस हमार ॥१२॥
प्रेम के परल हिँडोलवा, मानिक बरल लिलार ।
कहैँ गुलाल मनोरवा, पुजवल आस हमार ॥१३॥
अनुभौ फाग मनोरवा, दहुँ दिसि परलि धमार ।
काया नगर में रँग रचो, प्रान नाथ बलिहार ॥१४॥
बिनु बाजे धुनि गाजई, अधरहिँ अगम अपार ।
प्रान तबहिँ उठि गवनेऊ, बहुरि नाहिँ औसार ॥१५॥
प्रेम पगल मन रातल, आनँद मंगलचार ।
तीन लोक के ऊपरे, मिललहिँ कंत हमार ॥१६॥
जोग जग्य जप तप नहीं, दुख सुख नहिँ संताप ।
घटत बढ़त नहिँ छीजई, तहवाँ पुन्न न पाप ॥१७॥
संत सभा में बैठ के, आनँद उजल प्रकास ।
जन गुलाल पिय बिलसहीं†, पूजलि मन के आस ॥१८॥
बंक नाल चढ़ि के गयो, आयो प्रभु दरबार ।
जगमग जोति जगन लगी, कोटि चंद छबि वार ॥१९॥
मुक्ता झरि बरषन लगो, दसो दिसा झनकार ।
जन गुलाल तन मन दियो, पूरी खेप हमार ॥२०॥
मानिक भवन उदित तहाँ, भाँवर दै दै गाय ।
जन गुलाल हरखित भयो, कौतुक कह्यो न जाय ॥२१॥

---

* फाग के एक राग का नाम । † विलास करता है ।

जिन पावल तिन गावल, अवर सकल भ्रम डार ।
कहै गुलाल मनोरवा*, पूरन आस हमार ॥१२॥
प्रेम के परल हिँडोलवा, मानिक बरल लिलार ।
कहैँ गुलाल मनोरवा, पुजवल आस हमार ॥१३॥
अनुभौ फाग मनोरवा, दहुँ दिसि परलि धमार ।
काया नगर में रँग रचो, प्रान नाथ बलिहार ॥१४॥
बिनु बाजे धुनि गाजई, अधरहिँ अगम अपार ।
प्रान तबहिँ उठि गवनेऊ, बहुरि नाहिँ औतार ॥१५॥
प्रेम पगल मन रातल, आनँद मंगलचार ।
तीन लोक के ऊपरे, मिललहिँ कंत हमार ॥१६॥
जोग जग्य जप तप नहीं, दुख सुख नहिँ संताप ।
घटत बढ़त नहिँ छीजई, तहवाँ पुन्न न पाप ॥१७॥
संत सभा में बैठ के, आनँद उजल प्रकास ।
जन गुलाल पिय बिलसहीं†, पूजलि मन के आस ॥१८॥
बंक नाल चढ़ि के गयो, आयो प्रभु दरबार ।
जगमग जोति जगन लगी, कोटि चंद छबि वार ॥१९॥
मुक्ता झरि बरषन लगो, दसो दिसा झनकार ।
जन गुलाल तन मन दियो, पूरी खेप हमार ॥२०॥
मानिक भवन उदित तहाँ, भाँवर दै दै गाय ।
जन गुलाल हरखित भयो, कौतुक कह्यो न जाय ॥२१॥

---

* फाग के एक राग का नाम। † विलास करता है।

बेलवेडियर प्रेस, कटरा, प्रयाग की पुस्तक

संतबानी पुस्तकमाला

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब का अनुराग सागर ... ... १)
कबीर साहिब का बीजक ... ... ॥।)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह ... ... १=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग ... ... ॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग ... ... ॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग ... ... ।≈)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग ... ... ≡)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी,रेख़ते और झूलने ... ... ।=)
कबीर साहिब की अखरावती ... ... =)
धनी धरमदास जी की शब्दावली ... ... ॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १ ... १≡)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित ... १≡)
तुलसी साहिब का रत्नसागर ... ... १।-)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग ... ... १॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग ... ... १॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग ... ... १॥)
दू दयाल की बानी भाग १ "साखी" ... ... १॥)
दू दयाल की बानी भाग २ "शब्द" ... ... १)
न्दर बिलास ... ... १-)
लटू साहिब भाग १—कुंडलियाँ ... ... ॥।)
लटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कबित्त, सवैया ... ॥।)
लटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ ... ... ॥।)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग ... ... ॥।-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग ... ... ॥।-)
दूलन दास जी की बानी, ... ।)॥

पुस्तक			मूल्य
चरनदास जी की बानी, पहला भाग	...	...	|||-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	...	...	|||)
गरीबदास जी की बानी	...	...	१|-)
रैदास जी की बानी	...	...	||)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	...	...	|≡)||
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	...	..	|-)
दरिया साहिब (माड़वाड़ वाले) की बानी	...	...	|≡)
भीखा साहिब की शब्दावली	...	...	||=)||
गुलाल साहिब की बानी	...	...	|||=)
बाबा मलूकदास जी की बानी	...	...	|)||
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	...	...	-)
यारी साहिब की रत्नावली	...	...	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	...	...	|)
केशवदास जी की अमीघूँट	...	...	-)||
धरनी दास जी की बानी	...	...	|=)
मीराबाई की शब्दावली	...	...	||=)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश	...	...	|≡)||
दया बाई की बानी	...	...	|)
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]	...	...	१||)
संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]	...	...	१||)
			कुल २३||≡)
अहिल्या बाई	...	...	≡)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

हिन्दी-पुस्तकमाला

नवकुसुम भाग १ } इन दोनों भागों में छोटी छोटी रोचक शिक्षाप्रद कहानियाँ
नवकुसुम भाग २ } संग्रहित हैं। मूल्य पहला भाग ।।।) दूसरा भाग ।।)

सचित्र विनय पत्रिका—बड़े बड़े हर्फों में मूल और सविस्तार टीका है। सुन्दर जिल्द तथा ३ चित्र गुसाईं जी का भिन्न भिन्न अवस्था के हैं मूल्य सजिल्द ३)

करुणा देवी—यह सामयिक उपन्यास बड़ा मनमोहक और शिक्षाप्रद है। स्त्रियों को अवश्य पढ़ना चाहिए। मूल्य ।।=)

हिन्दी-कवितावली—छोटी छोटी सरल बालोपयोगी कविताओं का संग्रह है। मूल्य -)

सचित्र हिन्दी महाभारत—कई रंगीन मनमोहक चित्र तथा सरल हिन्दी में महाभारत की सम्पूर्ण कथा है। सजिल्द दाम ३)

गीता—(पाकेट एडिशन) श्लोक और उनका सरल हिन्दी में अनुवाद है। अन्त में गूढ़ शब्दों का कोश भी है। सुन्दर जिल्द मूल्य ।।।=)

उत्तर ध्रुव की भयानक यात्रा—इस उपन्यास को पढ़ कर देखिये। कैसी अच्छी सैर है। बार बार पढ़ने का ही जी चाहेगा। मूल्य ।।)

सिद्धि—यथा नाम तथा गुणः। अपने अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ।।)

महारानी शशिप्रभा देवी—एक विचित्र जासूसी शिक्षादायक उपन्यास मूल्य १।)

सचित्र द्रौपदी—इसमें देवी द्रौपदी के जीवन चरित्र का सचित्र वर्णन है। मूल्य ।।।)

कर्मफल—यह सामाजिक उपन्यास बड़ा शिक्षाप्रद और रोचक है। मूल्य ।।।)

दुःख का मीठा फल—इस पुस्तक के नाम ही से समझ लीजिये। मूल्य ।।।=)

कोक संग्रह अथवा संतति विज्ञान—इसे कोक शास्त्रों का दादा जानिए। मूल्य ।।।=)

हिन्दी साहित्य प्रदीप—कक्षा ५ व ६ के लिए उपयोगी है (सचित्र) मूल्य ।।=)

काव्य निर्णय—दास कवि का बनाया हुआ टीका-टिप्पणी सहित मूल्य १।)

सुमनोऽञ्जलि भाग १—हिन्दू धर्म सम्बन्धी अपूर्व और अत्यन्त लाभदायक पुस्तक है। इसके लेखक मिश्रबन्धु महोदय हैं। सजिल्द मूल्य ।।=)

सुमनोऽञ्जलि भाग २ काव्यालोचना सजिल्द ।।=)

सुमनोऽञ्जलि भाग ३ उपदेश कुसुमावली मूल्य ।।=)

(उपरोक्त तीनों भाग इकट्ठे सुन्दर सुनहरी जिल्द बँधी है) मूल्य २)

सचित्र रामचरितमानस—यह असली रामायण बड़े हरफ़ों में टीका सहित है। भाषा बड़ी सरल और लालित्य पूर्ण है। इस रामायण में २० सुन्दर चित्र, मानस-पिंगल और गोसाईं जी की वृस्तृत जीवनी है। पृष्ठ संख्या १२००, चिकना कागज़

मूल्य (De Lux Edition) केवल ६॥) । इसी असली रामायण का एक सस्ता संस्करण ११ बहुरंगा और ८ रंगीन यानी कुल २० सुन्दर चित्र सहित और सुनहरी जिल्द सहित १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥) । प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं और इनके कागज़ उमदा हैं ।

प्रेम-तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास (प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ॥=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। यह मानस-कोश का भी काम देगा। मूल्य २)

हनुमान बाहुक-प्रति दिन पाठ करने के योग्य, मोटे अक्षरों में शुद्ध छपी है। मूल्य ~)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के अन्य ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे मोटे बड़े अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं। सचित्र व सजिल्द मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। मूल्य ।=)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूसी उपन्यास है। मूल्य १)

सन्देह—यह एक मौलिक क्रांतिकारी नया उपन्यास है। मूल्य ॥।) सजिल्द १)

चित्रमाला भाग १—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह तथा परिचय है। मूल्य ॥।)

चित्रमाला भाग २—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है। मूल्य ॥।)

चित्रमाला भाग ३—सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है मूल्य १)

चित्रमाला भाग ४—१२ रंगीन सुंदर चित्र तथा चित्र-परिचय है मूल्य १)

गुटका रामायण—यह असली तुलसीकृत रामायण अत्यन्त शुद्धता पूर्वक छोटे रूप में है। पृष्ठ संख्या लगभग ४५० के है। इसमें अति सुन्दर ८ बहुरंगे और ५ रंगीन चित्र हैं। तेरहों चित्र अत्यन्त भावपूर्ण और मनमोहक हैं। रामायण प्रेमियों के लिये यह रामायण अपूर्व और लाभदायक है। जिल्द बहुत सुन्दर और मज़बूत तथा सुनहरी है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥)

घोंघा गुरू की कथा—इस देश में घोंघा गुरू की हास्यपूर्ण कहानियाँ बड़ी ही प्रचलित हैं। उन्हीं का यह संग्रह है। शिक्षा लीजिए और ख़ूब हँसिए। ।)

गल्प पुष्पाञ्जलि—इसमें बड़ी उमदा उमदा गल्पों का संग्रह है। पुस्तक सचित्र और दिलचस्प है। दाम ॥=)

हिन्दी साहित्य सुमन— दाम ॥)

शुद्धि पत्र

गुलाल साहेब की बानी

पेज	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
७	१४	ज़ुल	ज़ुलि
७	१८	नावति	नौवति
११	१६	लगावे	लगावै
१५	१	करवा	करवौ
१५	१४	घरत	धरत
२२	११	घर घर	धर धर
३४	१	छारो	छारी
३६	१५	विसरा	विसरो
३६	१२	होह	होइ
५०	६	कान	कौन
५३	१४	चौमुर	चौमुख
५५	७	अली	अमी
५५	१५	तिरबेना	तिरबेनी
६३	६	अहै	कहै
७५	१३	हिडोला	हिँडोला
७६	११	दसा	दसौ
७६	१२	हिँडोल	हिंडोला
८१	२	जाय	आय
८३	५	तक	तब
९७	१५	रस	रास
९८	२	अवार	अबीर
९८	१६	दियो रा	दियो री
९९	१५	नावति	नौवति
१००	८	दूनाँ	दूनोँ
१०२	१२	ब्रह-	ब्रह्म
१०२	१६	सखियल	सखियन
१०२	२०	खेम	खेल
१०५	१२	मह	कह
१०६	७	ंधर्वा	गंधर्वा
१०६	६	मूढ़न सीँ	मूढ़न सौं
१०६	१७	ताहिँ	नाहिँ
१२८	२१	भाव	भावे
१३१	१	ँदेसवा	सँदेसवा
१३५	१६	जब वै	जब धै
१३६	नोट	पीते है	पीते हैं
१३६	नोट	त्रिकुटी की आर	त्रिकुटी की ओर
१३६	नोट	भिल कर चलना	मिल कर चलना
१४०	५	परतात	परतीत